Follow us on: @TheDailyPioneer facebook.com/dailypioneer instagram.com/dailypioneer/

RNI NO.UPHIN/2010/36547
वर्ष 15 अंक 102
लखनऊ, शुक्रवार, 31 जनवरी 2025
पृष्ठ 12 मूल्य ₹ 3
लखनऊ, नगर संस्करण

Established 1865

# पायनियर

लखनऊ, नई दिल्ली और रायपुर से प्रकाशित

www.dailypioneer.com

आभ्यन्तर

**राष्ट्रीय-10**

**दक्षिणी राज्यों का जनसंख्या वृद्धि पर जोर देना अच्छा विचार नहीं: सुब्बाराव**

# महाकुंभ वाहन निषिद्ध क्षेत्र घोषित

उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में चल रहे 'महाकुंभ मेला' दौरान झूंसी रोड पर ट्रैफिक जाम में फंसे वाहनों का विहंगम दृश्य। पीटीआई

**बिस्वजीत बनजी।** महाकुंभ नगर

**प्रयागराज** महाकुंभ के दौरान संगम पर हुई दुखद भगदड़ के बाद, जिसमें कई लोग हताहत हुए थे, प्रशासन ने भविष्य में ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए कड़े कदम उठाए हैं। इन प्रयासों के तहत, सम्पूर्ण कुंभ मेला क्षेत्र को नो-व्हीकल जोन घोषित कर दिया गया है, जिससे सभी प्रकार के वाहनों का परिसर में प्रवेश वर्जित हो गया है तथा 4 फरवरी तक सभी वीआईपी पास रद्द कर दिए गए हैं। सबसे महत्वपूर्ण निर्णयों में से एक मेला परिसर के भीतर वाहनों की आवाजाही पर पूर्ण प्रतिबंध लगाना है। किसी भी निजी या सार्वजनिक परिवहन को अंदर जाने की अनुमति नहीं दी जाएगी, जिससे तीर्थयात्रियों की सुरक्षित और अधिक व्यवस्थित आवाजाही सुनिश्चित हो सके। इसके अतिरिक्त, वीवीआईपी पास, जो पहले कुछ वाहनों को प्रवेश की अनुमति देते थे, रद्द कर दिए गए हैं। किसी भी विशेष पास से छूट नहीं मिलेगी, जिससे नियम सभी के लिए एक समान हो जाएंगे।

सुचारू आवागमन को सुगम बनाने तथा भीड़भाड़ को रोकने के लिए कुंभ क्षेत्र के सभी प्रमुख मार्गों को एकतरफा मार्ग में परिवर्तित कर दिया गया है। इस उपाय का उद्देश्य श्रद्धालुओं के आवागमन को सुचारू बनाना तथा भीड़भाड़ की संभावना को कम करना है। इसके अलावा, पड़ोसी जिलों से आने वाले वाहनों को जिला सीमाओं पर रोक दिया जा रहा है, जिससे शहर में अतिरिक्त यातायात को रोका जा सके। प्रयागराज में चार पहिया वाहनों पर पूर्ण प्रतिबंध के साथ 4 फरवरी तक सख्त उपाय लागू रहेंगे। प्रशासन ने श्रद्धालुओं से महाकुंभ में सुरक्षित और सुचारू अनुभव सुनिश्चित करने के लिए इन दिशानिर्देशों का पालन करने का आग्रह किया है। प्राधिकारियों ने व्यवस्था बनाए रखने तथा किसी भी अन्य दुर्घटना से बचने के लिए जनता से सहयोग का भी आह्वान किया है।

मिर्जापुर और भदोही से प्रयागराज आने वालों को भी इसी तरह की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। रोडवेज बसों को वापस भेज दिया गया है और हजारों लोग विभिन्न स्थानों पर बिना किसी सहायता के फंसे हुए हैं। कुछ क्षेत्रों में स्थानीय निवासियों ने भोजन और पानी उपलब्ध कराने के लिए कदम उठाया है, लेकिन संकट इतना बड़ा है कि कई लोग राहत से वंचित रह गए हैं। कुछ श्रद्धालुओं ने अपना गुस्सा जाहिर करते हुए आरोप लगाया है कि वीआईपी वाहनों को प्राथमिकता दी जा रही है, जबकि आम तीर्थयात्रियों को खुद के हाल पर छोड़ दिया गया है। इन चुनौतियों के बावजूद, अधिकांश लोग संगम तक पहुंचने के अपने संकल्प पर अडिग रहते हैं तथा रास्ते में मिलने वाले वैकल्पिक स्नान स्थलों पर विचार करने से इनकार कर देते हैं।

रेल यात्रा भी बुरी तरह प्रभावित हुई है और इलाहाबाद-प्रयागराज पैसेंजर तथा जौनपुर-बरेली पैसेंजर सहित कई यात्री ट्रेनें रद्द कर दी गई हैं। अन्य ट्रेनों, जैसे कि एलटीटी एक्सप्रेस का मार्ग बदलकर वाराणसी कर दिया गया है, जिससे यात्रा योजनाएं और भी बाधित हो गई हैं। प्रतापगढ़ और अन्य प्रमुख रेलवे जंक्शनों पर हजारों श्रद्धालु फंसे हुए हैं और वैकल्पिक परिवहन की प्रतीक्षा कर रहे हैं। इस बीच, रीवा-प्रयागराज मार्ग पर उत्तर प्रदेश-मध्य प्रदेश सीमा पर लगभग 50,000 वाहन रुके हुए हैं, तथा अधिकारी स्थिति को संभालने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। गंभीर कठिनाइयों के बावजूद तीर्थयात्रियों का उत्साह अडिग रहता है। भूख, ठंड और थकावट को झेलते हुए, वे अटूट आस्था के साथ अपनी यात्रा जारी रखते हैं तथा गंगा में पवित्र स्नान करने के लिए दृढ़ संकल्पित हैं। उनके लिए, जीवन में एक बार मिलने वाले इस आध्यात्मिक अनुभव की खोज में कोई भी कठिनाई बहुत बड़ी नहीं है।

# मोदी 3.0 बजट सत्र आज से

सर्वदलीय बैठक में केंद्रीय मंत्री राजनाथ सिंह, जेपी नड्डा और किरेन रिजिजू, राज्य मंत्री एल. मुरुगन और अर्जुन राम मेघवाल।

**पायनियर समाचार सेवा।** नई दिल्ली

**बजट सत्र** से पहले बृहस्पतिवार को आयोजित सर्वदलीय बैठक में विपक्षी दलों ने महाकुंभ त्रासदी और यूपी सरकार द्वारा आम तीर्थयात्रियों के बजाय वीआईपी पर कथित ध्यान केंद्रित करने के मुद्दे पर संसद में चर्चा की मांग की, जबकि केंद्रीय मंत्री किरेन रिजिजू ने कहा कि 31 जनवरी से शुरू होने वाले बजट सत्र के एजेंडे पर बिजनेस एडवाइजरी कमेटी फैसला करेगी।

सत्र की शुरुआत राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू द्वारा लोकसभा और राज्यसभा की संयुक्त बैठक को संबोधित करने से होगी। केंद्रीय बजट 1 फरवरी को पेश किया जाएगा। सत्र का पहला भाग 13 फरवरी को और दूसरा भाग 10 मार्च को समाप्त होगा। सत्र का समापन 4 अप्रैल को होगा। सत्र के विधायी एजेंडे में वक्फ (संशोधन) विधेयक और आव्रजन और विदेशी विधेयक सहित 16 विधेयक हैं। इसी सर्वदलीय बैठक में एनडीए में भाजपा के सहयोगी जनता दल (यूनाइटेड) ने एक साथ चुनाव कराने के प्रस्ताव वाले विधेयकों की जांच कर रही संयुक्त संसदीय समिति के कार्यकाल में विस्तार की मांग की, जबकि इसके एक अन्य सहयोगी लोजपा (रामविलास) ने बिहार के लिए 'विशेष औद्योगिक पैकेज' की मांग की। रिजिजू ने रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह की अध्यक्षता में हुई बैठक को रचनात्मक बताया और विपक्षी दलों से सहयोग मांगा। उन्होंने कहा कि बजट सत्र में राष्ट्रपति के अभिभाषण और केंद्रीय बजट पर पारंपरिक चर्चा मुख्य प्राथमिकताएं हैं। कई विपक्षी नेताओं ने कहा कि सत्र के दौरान 'बढ़ती' बेरोजगारी और किसानों की 'दुर्दशा' का मुद्दा भी उठाया जाएगा। सूत्रों ने बताया कि सर्वदलीय बैठक में जदयू नेता संजय झा ने जेपीसी के कार्यकाल में विस्तार की मांग की, जिसे बजट सत्र के अंतिम सप्ताह के पहले दिन अपनी रिपोर्ट सौंपने के लिए कहा गया। झा 39 सदस्यीय समिति के सदस्य हैं, जिसका गठन एक राष्ट्र, एक चुनाव (ओएनओई) प्रस्ताव पर चर्चा के लिए किया गया है। भाजपा सांसद पी पी चौधरी की अध्यक्षता वाली समिति की दूसरी बैठक शुक्रवार को होने वाली है। झा चाहते हैं कि संसद आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के क्षेत्र में भारत की मौजूदा स्थिति पर भी चर्चा करे। उन्होंने इस क्षेत्र में चीनी कंपनी डीपसीक द्वारा पैदा की गई लहरों की ओर भी इशारा किया, जिस पर अब तक अमेरिकी कंपनियों का दबदबा रहा है।

इससे पहले, राज्यसभा में कांग्रेस के उप नेता प्रमोद तिवारी ने बृहस्पतिवार को कहा कि विपक्षी गठबंधन इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इन्क्लूसिव अलायंस ( इंडिया ) संसद के बजट सत्र में सभी मुद्दों को उठाएगा। सर्वदलीय बैठक के बाद तिवारी ने महाकुंभ के राजनीतिकरण की भी आलोचना की और कहा कि महाकुंभ के दौरान अतिविशिष्ट लोगों की आवाजाही से आम आदमी के लिए मुश्किलें पैदा हो रही हैं। उन्होंने कहा कि उनकी पार्टी इस धार्मिक आयोजन के सत्तारूढ़ भाजपा से जुड़े वीआईपी लोगों की सभा बनने के मुद्दे को उठाएगी। तिवारी ने कहा कि सत्र के दौरान बढ़ती बेरोजगारी और किसानों की दुर्दशा का मुद्दा भी उठाया जाएगा।

## कुंभ हादसा, वक्फ रहेगा एजेंड में

# ईसी ने पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान के घर रेड की

**पायनियर समाचार सेवा।** नई दिल्ली

**चुनाव आयोग** (ईसी) ने बृहस्पतिवार को राष्ट्रीय राजधानी में पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान के कपूरथला हाउस आवास की तलाशी ली, जिसमें दिल्ली विधानसभा चुनाव से पहले वहां से 'नकदी' बांटे जाने की शिकायत की गई थी। यह कार्रवाई दिल्ली पुलिस द्वारा पंजाब भवन के पास नकदी, शराब और आप के पर्चे के साथ 'पंजाब सरकार' लेबल वाली एक गाड़ी को रोके जाने के बाद मामला दर्ज किए जाने के एक दिन बाद की गई है। अधिकारी ने बुधवार को कहा, पंजाब नंबर प्लेट वाली गाड़ी को नई दिल्ली जिले में फ्लाइंग स्क्वॉड टीम ने पकड़ा। फ्लाइंग स्क्वॉड आदर्श आचार संहिता (एमसीसी) के उल्लंघन और चुनाव के लिए इस्तेमाल की जाने वाली शराब, हथियार और नकदी से संबंधित सभी शिकायतों पर कार्रवाई करता है।

कपूरथला हाउस के बाहर एक अधिकारी ने मीडिया को बताया कि वहां से 'नकदी' बांटे जाने के बारे में शिकायत मिली थी। उन्होंने कहा, टीम तलाशी लेने की अनुमति का इंतजार कर रही थी। नई दिल्ली के पुलिस उपायुक्त (डीसीपी) देवेश महला ने कहा, पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान के कपूरथला हाउस आवास पर की जा रही छापेमारी के बारे में, यह रिटर्निंग ऑफिसर और फ्लाइंगस्क्वायड टीम (एफएसटी) की शिकायत पर की जा रही है। एफएसटी की सुरक्षा के लिए पुलिस की मौजूदगी की आवश्यकता है। इस बीच, आप ने भाजपा पर एक निर्वाचित मुख्यमंत्री के घर पर छापेमारी करने और खुलेआम पैसे बांटने के लिए भाजपा के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं करने का आरोप लगाया। राज्य चुनावों से पहले अपनी पार्टी के उम्मीदवार के लिए प्रचार कर रहे मान ने पंजाबियों को बदनाम करने के लिए दिल्ली पुलिस और चुनाव आयोग की आलोचना की। आज, चुनाव आयोग की टीम दिल्ली पुलिस के साथ दिल्ली में मेरे घर कपूरथला हाउस पर छापा मारने आई है। भाजपा के लोग दिल्ली में खुलेआम पैसे बांट रहे हैं, लेकिन दिल्ली पुलिस और चुनाव आयोग को कुछ नहीं दिख रहा है। (शेष पृष्ठ 9)

# आम आदमी पार्टी ने सीईसी पर साधा निशाना

**राजेश कुमार।** नई दिल्ली

आप उम्मीदवार अनिल झा के समर्थन में रोड शो के दौरान आप के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल और सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव।

**चुनाव आयोग** ने बृहस्पतिवार यमुना में जहर मिलाने के मामले में आप प्रमुख अरविंद केजरीवाल के जवाब से असंतुष्ट होने के बाद उनसे एक और विस्तृत जवाब मांगा है। आयोग ने कहा है कि उनकी टिप्पणी प्रथम दृष्टया विभिन्न समूहों के बीच वैमनस्य और दुश्मनी को बढ़ावा देने वाली प्रतीत होती है। आयोग ने कहा कि केजरीवाल के जवाब हरियाणा द्वारा यमुना नदी में जहर मिलाने के उनके दावे को पुष्ट करने में 'पूरी तरह से मौन' हैं। चुनाव आयोग ने केजरीवाल से पूछा, हरियाणा द्वारा किस तरह का जहर मिलाया गया, जहर की मात्रा, प्रकृति और पता लगाने के तरीके तथा जहर का पता लगाने के स्थान और तरीके के बारे में सहायक साक्ष्य क्या हैं।

यमुना के पानी में हरियाणा सरकार द्वारा 'जहर' मिलाए जाने के अपने दावे को पुष्ट करने के लिए शुक्रवार सुबह 11 बजे तक तथ्यात्मक साक्ष्य मांगने के चुनाव आयोग के निर्देशों पर आप प्रमुख ने तीखी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि मुख्य चुनाव आयुक्त (सीईसी) राजीव कुमार भाजपा के पिट्ठू की तरह काम कर रहे हैं। केजरीवाल ने उन पर रिटायरमेंट के बाद नौकरी मांगने का आरोप लगाते हुए कहा कि वह राजीव कुमार और उनके चुनाव आयुक्तों को यमुना के पानी की तीन बोतलें भेजेंगे और इसके साथ ही उन्होंने उस पानी को पीने की चुनौती भी दी। एक प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए केजरीवाल ने आरोप लगाया कि कुमार ने चुनाव आयोग (ईसी) की विश्वसनीयता को 'नष्ट' कर दिया है और रिटायरमेंट के बाद की नौकरी की तलाश कर रहे हैं। उन्होंने कहा, उन्होंने जिस भाषा का इस्तेमाल किया है, वह चुनाव आयोग का काम नहीं है। उन्हें दिल्ली की किसी भी सीट से चुनाव लड़ना चाहिए। हम राजीव कुमार को भी तीन बोतलें भेजेंगे। मुझे पता है कि वे मुझे तीन दिनों में गिरफ्तार करेंगे, उन्हें ऐसा करने दें, मुझे डर नहीं है।

केजरीवाल की टिप्पणी चुनाव आयोग द्वारा आप प्रमुख को एक और पत्र भेजे जाने के कुछ घंटों बाद आई। जिसमें उसने कहा है कि केजरीवाल के जवाब हरियाणा द्वारा यमुना नदी को 'जहर' देने के उनके दावे को पुष्ट करने में पूरी तरह से मौन रहे हैं। चुनाव निकाय ने पांच सवालों के सटीक (शेष पृष्ठ 9)

# चैट जीपीटी, डीपसीक से टक्कर लेने की तैयारी कर रहा भारत

**पायनियर समाचार सेवा।** नई दिल्ली

केंद्रीय रेल, सूचना एवं प्रसारण तथा इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री अश्विनी वैष्णव ने भारत मिशन के तहत विभिन्न परियोजनाओं की घोषणा की।

**भारत ने** बृहस्पतिवार को वैश्विक एआई महत्वाकांक्षाओं को रेखांकित करते हुए इस संबंध में अपना स्वयं का 'आधारभूत मॉडल' बनाने की योजना बनाई है जो चैटजीपीटी, डीपसीक आर1 व अन्य की क्षमता को चुनौती दे सकता है। भारत के स्टार्टअप और शोधकर्ताओं द्वारा उपयोग किए जाने वाले 18,693 जीपीयू द्वारा संचालित 'सबसे सस्ती' सामान्य कंप्यूट सुविधा की रूपरेखा तैयार की है। भारत का यह साहसिक कदम ऐसे समय में आया है, जब चीनी कंपनी डीपसीक ने अपने एआई मॉडल के बाद लोगों का ध्यान आकर्षित किया है, जिसने चैटजीपीटी को पछाड़कर एप्पल के ऐपस्टोर पर शीर्ष रैंक वाला मुफ्त ऐप बन गया है, जिसने अब तक अमेरिकी फर्मों, विशेष रूप से सिलिकॉन वैली के अग्रणी ओपन एआई के साथ केंद्रित एआई प्रभुत्व को चुनौती दी है। आईटी मंत्री अश्विनी वैष्णव ने विश्वास जताया कि भारत एक ऐसा आधार मॉडल बनाएगा जो विश्व स्तरीय होगा और यह दुनिया भर के सर्वश्रेष्ठ मॉडलों के साथ प्रतिस्पर्धा करने में सक्षम होगा।इसके साथ ही सरकार ने अपने एआई ब्लूप्रिंट के अगले कदमों, जिसमें की घोषणा की, जिसमें 18,693 ग्राफिक्स प्रोसेसिंग यूनिट या जीपीयू की पेशकश के लिए पैनल में शामिल बोलीदाताओं (इस सूची में जियो प्लेटफॉर्म, सीएमएस कंप्यूटर, टाटा कम्युनिकेशंस, ईडब्ल्यूई नेटवर्क, योट्टा डेटा सर्विसेज और अन्य शामिल हैं) द्वारा एआई सुरक्षा संस्थान की शुरुआत के साथ 8 परियोजनाओं को मंजूरी दी गई है।

सरकार भारत के अपने आधारभूत मॉडल विकसित करने के लिए प्रस्ताव भी मांग रही है, जो भारतीय संदर्भ, भारतीय भाषाओं, संस्कृति से जुड़े होंगे, जहां मूल रूप से डेटासेट 'हमारे देश और हमारे नागरिकों के लिए' होंगे और पूर्वाग्रहों को दूर किया जाएगा। सरल शब्दों में कहें तो, जनरेटिव एआई में आधारभूत मॉडल बड़े, पूर्व-प्रशिक्षित मॉडल हैं जो विभिन्न एआई अनुप्रयोगों के लिए आधार बनाते हैं। वैष्णव ने आश्वासन दिया कि सामान्य कंप्यूट सुविधा (18,693 जीपीयू द्वारा संचालित) वैश्विक लागत बेंचमार्क के एक अंश पर उपलब्ध कराई जाएगी। सरकार द्वारा वहन की जाने वाली 40 प्रतिशत लागत के बाद कंप्यूट सुविधा 'सबसे सस्ती' होगी, जो एक डॉलर (प्रति जीपीयू घंटा) से भी कम होगी। वैष्णव ने कहा, आधुनिक तकनीक को सभी के लिए सुलभ बनाना, यही हमारे प्रधानमंत्री की आर्थिक सोच है... इस समय हमारी सबसे सस्ती कंप्यूटिंग सुविधा है। मंत्री ने कहा कि कम से कम छह प्रमुख डेवलपर्स/स्टार्टअप हैं जो अगले 8-10 महीनों में बाहरी सीमा पर और अधिक आशावादी अनुमान पर 4-6 महीनों में आधारभूत मॉडल बनाने में सक्षम होंगे। (शेष पृष्ठ 9)

# कोहली की झलक के लिए उमड़ी भीड़

**पायनियर समाचार सेवा।** नई दिल्ली

**विराट कोहली** का खुमार भारतीय क्रिकेट प्रेमियों के सिर चढकर बोलता है और इसकी झलक यहां बृहस्पतिवार को दिल्ली और रेलवे के बीच रणजी ट्रॉफी मैच में देखने को मिली जब उनका नाम सुनते ही दर्शक रोमांच के मारे चिल्लाने लगे और अभूतपूर्व भीड़ के कारण डीडीसीए को ऐन मौके पर अतिरिक्त इंतजाम करने पड़े। कोहली 13 साल बार रणजी ट्रॉफी मैच खेल रहे हैं। डीडीसीए (दिल्ली और जिला क्रिकेट संघ) ने कोहली की घर वापसी वाले मैच में करीब दस हजार दर्शकों के आने का कयास लगाया था जो रणजी ट्रॉफी मैच में एक रिकॉर्ड है। कोहली का जादू ऐसा है कि सारे कयास धरे रह गए और इससे कहीं अधिक संख्या में लोग आए।

खेल 9 . 30 पर शुरू होना था और इससे काफी पहले से दर्शकों की कतारें लगनी शुरू हो गई थी। डीडीसीए ने पहले 6000 की क्षमता वाला गौतम गंभीर स्टैंड खोला लेकिन भीड़ को देखते हुए 11000 की क्षमता वाला बिशन सिंह बेदी स्टैंड खोलना पड़ा। मैदान पर मौजूद भारत के एक पूर्व क्रिकेटर ने कहा , मैने रणजी ट्रॉफी में ऐसा कुछ कभी नहीं देखा है। अपने खेलने के दिनों में भी घरेलू क्रिकेट देखने दर्शकों को कम ही आते देखा है। यह सब एक खिलाड़ी के लिए हुआ है। इसी बीच प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का काफिला भी उसी जगह से गुजर रहा था जो (शेष पृष्ठ 9)

# महिला का लापता 'साधु' पति के डीएनए जांच की गुहार

**बिस्वजीत बनर्जी।** महाकुंभ नगर

**कुंभ मेला,** जो अक्सर खोए हुए परिवारों की कहानियों से जुड़ा होता है, ने एक असामान्य मोड़ ले लिया है। झारखंड के एक परिवार का मानना है कि उन्होंने अपने खोए हुए रिश्तेदार को ढूंढ लिया है, लेकिन इसमें एक मोड़ है - जिस व्यक्ति को वे गंगासागर यादव बता रहे हैं, वह 27 साल पहले लापता हो गया था, लेकिन अब वह अघोरी साधु के रूप में रह रहा है और उन्हें पहचानने से इनकार कर रहा है। गंगासागर 1998 में पटना की यात्रा के बाद अपनी पत्नी धन्वा देवी और दो छोटे बेटों को छोड़कर गायब हो गये। कई वर्षों से परिवार ने उसके मिलने की उम्मीद छोड़ दी थी। लेकिन किस्मत ने तब दखल दिया जब प्रयागराज में कुंभ मेले में आए एक रिश्तेदार ने एक साधु को देखा और उसकी तस्वीर घर भेज दी।

गंगासागर के छोटे भाई मुरली यादव, धन्वा देवी और उसके बेटों के साथ, साधु - जो अब बाबा राजकुमार के नाम से जाने जाते हैं - से मुकाबला करने के लिए प्रयागराज पहुंचे। हालाँकि, उन्होंने अपने पिछले जीवन से किसी भी तरह के संबंध से इनकार किया। साध्वी के साथ आए साधु ने दावा किया कि वह वाराणसी से हैं और उन्होंने परिवार के दावों को खारिज कर दिया। हालाँकि, परिवार अभी भी अडिग है। उन्होंने उसकी पहचान के प्रमाण के रूप में उसके लंबे दांत, माथे पर चोट और घुटने पर निशान दिखाया। जवाब पाने के लिए दृढ़ संकल्पित होकर उन्होंने पुलिस हस्तक्षेप की मांग की और डीएनए परीक्षण की मांग की।

मुरली यादव ने कहा, आमतौर पर कहा जाता है कि कुंभ में बिछड़े कभी नहीं मिलते, लेकिन यहां मामला अलग है। कुंभ ने परिवार को तो जोड़ दिया है, लेकिन समस्या यह है कि साधु अभी भी अपने परिवार को पहचान नहीं पाया है। परिवार ने कुंभ मेले के खत्म होने तक इंतजार करने का फैसला किया है। यदि आवश्यक हुआ तो वे डीएनए परीक्षण पर जोर देंगे। मुरली ने कहा, यदि परिणाम यह साबित करते हैं कि हम गलत हैं, तो हम माफी मांगेंगे। फिलहाल, परिवार के कुछ सदस्य घर लौट आए हैं, जबकि अन्य लोग बाबा राजकुमार और उनके साथी पर नजर रख रहे हैं, तथा उन्हें उम्मीद है कि एक पल में उन्हें पहचान लिया जाएगा - या कोई वैज्ञानिक समाधान मिल जाएगा - जिससे दशकों पुराने रहस्य का पटाक्षेप हो जाएगा।

## चंडीगढ़ मेयर चुनाव में भाजपा ने आप को हराया

**चंडीगढ़ (पीएनएस)।** भाजपा ने बृहस्पतिवार को महापौर पद पर जीत हासिल की, जबकि आप समर्थित कांग्रेस उम्मीदवारों ने वरिष्ठ उप महापौर और उप महापौर पदों के लिए हुए मतदान में जीत दर्ज की।

## अमेरिका में यात्रियों से भरे विमान व हेलीकॉप्टर में टक्कर

**अर्लिंग्टन( पीएनएस)।** 60 यात्रियों और चार चालक दल के सदस्यों को ले जा रहा अमेरिकन एयरलाइंस का एक विमान वाशिंगटन के निकट रोनाल्ड रीगन राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उतरते समय सेना के एक हेलीकॉप्टर से टकरा गया। इस दुर्घटना में सभी यात्रियों के मारे जाने की आशंका है।

# विश्व शांति का मार्ग प्रशस्त करती है बापू की शिक्षा व त्यागमय जीवनः मुख्यमंत्री

● सीएम योगी ने महात्मा गांधी की पुण्यतिथि पर बच्चों के साथ दी स्वरांजलि

**पायनियर समाचार सेवा।** लखनऊ

**मुख्यमंत्री** योगी आदित्यनाथ ने गुरुवार को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की पुण्यतिथि पर जीपीओ स्थित उनकी प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी। इस दौरान बच्चों ने बापू की पुण्यतिथि पर स्वरांजलि दी। सीएम योगी भी बच्चों के साथ स्वरांजलि में हिस्सा लिया।

इसी के साथ ही उन्होंने महात्मा गांधी को याद करते हुए अपने एक्स अकाउंट पर लिखा 'स्वाधीनता आंदोलन के महानायक, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की पुण्यतिथि पर उन्हें शत-शत नमन! श्रद्धेय बापू की शिक्षाएं और उनका त्यागमय जीवन विश्व शांति का मार्ग प्रशस्त करते हैं। आइए, बापू के दिखाए सत्य, अहिंसा व स्वदेशी के मार्ग पर चलकर हम सभी नए भारत-विकसित भारत के निर्माण हेतु संकल्पित हों।' सीएम योगी ने बच्चों के साथ स्वारांजलि में हिस्सा लिया। इस दौरान बच्चों 'रघुपति राघव राजाराम...', वैष्णव जन तो तेने कहिये जे पीड़ परायी जाणे रे...' जैसे गीतों को मधुर स्वर में प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के बाद सीएम योगी ने बच्चों के साथ फोटो भी खिंचाई। इस दौरान महापौर सुषमा खर्कवाल, विधायक नीरज बोरा, राजेश्वर सिंह, अमरेश कुमार, विधान परिषद सदस्य लाल जी प्रसाद निर्मल आदि गणमान्य लोगों ने भी बापू को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनकी प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की।

# 96 घंटे में 65 लाख श्रद्धालु पहुंचे अयोध्या

## सुरक्षा के लिहाज से अर्द्धसैनिक बल तैनात

● मुख्यमंत्री रोजाना कर रहे अयोध्या में व्यवस्थाओं की समीक्षा

**पायनियर समाचार सेवा।** लखनऊ/ अयोध्या

**मौनी** अमावस्या पर प्रयागराज में पुण्य की डुबकी लगाने के बाद शाम से ही श्रद्धालुओं के अयोध्या आने का शुरू हुआ सिलसिला गुरुवार दोपहर बाद तक जारी रहा। आलम यह रहा कि रातों-रात अयोध्या की सड़कें श्रद्धालुओं से खचाखच भर गईं। भोर होते ही जय श्रीराम के जयकारों से अयोध्या गुंजायमान हो गई। जानकारों के मुताबिक 96 घन्टे में करीब 65 लाख श्रद्धालु अयोध्या पहुंच चुके हैं। उधर, बढ़ती भीड़ देखकर नगर के वरिष्ठ अधिकारियों ने मोर्चा संभाल लिया। रातभर पैदल निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का जायजा लेते रहे।

प्रयागराज में मौनी अमावस्या पर स्नान करने के बाद श्रद्धालु सीधे रामनगरी पहुंच रहे हैं। आंखों में श्रद्धा व सिर पर गठरी लिए श्रद्धालुओं का रेला उमड़ पड़ा है। भोर में चार बजे से सरयू के घाटों पर स्नान शुरू हो गया। इसके बाद श्रद्धालुओ ने हनुमानगढ़ी व राम मंदिर का रुख किया। रामपथ और भक्तिपथ पर श्रद्धालुओं का सैलाब देख हर कोई अचंभित दिखा। आराध्य के दर्शन पाने को श्रद्धालु देर रात तक कतार बद्ध दिखे। एक अनुमान के मुताबिक राममंदिर में रोजाना तीन लाख व हनुमानगढ़ी में श्रद्धालु दर्शन को पहुंच रहे हैं। इसके लिए मंदिर में दर्शन का समय बढ़ाकर लगभग 18 घण्टे कर दिया गया है। वहीं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ अयोध्या में जिला प्रशासन को समय-समय पर निर्देशित भी कर रहे हैं। इसका नतीजा यह है कि अधिकारी से लेकर कर्मचारी तक श्रद्धालु की सेवा में जुटे हुए हैं। श्रद्धालुओं को राम जन्मभूमि परिसर में पुलिस की तरफ से पानी पिलाया जा रहा है।

इसके अलावा सेहत का ख्याल रखने के लिए मंदिर परिसर में मेडिकल कैंप की भी व्यवस्था की गई है। राम मंदिर ट्रस्ट के कर्मचारी और वालंटियर श्रद्धालुओं की सेवा में तैनात कर दिए गए हैं। अयोध्या आने वाले मुख्य मार्ग के थाने और चौकियों के साथ रेलवे से संपर्क कर श्रद्धालुओं की संख्या का पूर्वानुमान भी लगाया जा रहा है। रामनगरी में लगातार बढ़ रही श्रद्धालुओं की संख्या को देखते हुए सुविधा के लिए व्यापक इंतजाम किए गए हैं। गोंडा, अंबेडकरनगर, सुल्तानपुर और लखनऊ रोड होल्डिंग एरिया बना दिया गया है, ताकि भीड़ बढ़ने पर श्रद्धालुओं को वहां रोका जा सके। वहीं केरल, तमिलनाडु, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, गोवा, महाराष्ट्र और गुजरात से बड़ी से संख्या में श्रद्धालु दर्शन को अयोध्या पहुंच रहे हैं। महाकुंभ से भारी संख्या में रेलमार्ग से भी अयोध्या में श्रद्धालुओं का आगमन हो रहा है। अयोध्या आने वाले श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए नगर आयुक्त संतोष कुमार शर्मा द्वारा शाम को रेलवे स्टेशन कैंट के आस-पास और गुरु गोविंद सिंह चौराहे पर लाउड स्पीकर के माध्यम से अपील की गई है कि वे रेलवे स्टेशन कैंट के निकट बने आश्रय स्थल में ही ठहरें। यह अनुरोध श्रद्धालुओं के ठहरने के लिए सुरक्षित और सुविधाजनक स्थान प्रदान करने के उद्देश्य से किया गया।

जिले के वरिष्ठ अधिकारी ग्राउंड जीरो पर मौजूद हैं। लगातार समुचित दर्शन की व्यवस्था बनाए हुए हैं। शहर में एडीजी जोन लखनऊ एसबी शिरोडकर आईजी प्रवीण कुमार और कमिश्नर गौरव दयाल जिलाधिकारी चंद्र विजय सिंह, एसएसपी राजकरण नैयर ने कमान संभाल रखी है।

## अयोध्या के दो धार्मिक स्थलों के पर्यटन विकास के लिए दो करोड़ की धनराशि स्वीकृत

**पायनियर समाचार सेवा।** लखनऊ

● धार्मिक स्थलों का विकास हमारी प्राथमिकता, श्रद्धालुओं के हित में लेंगे निर्णयः जयवीर सिंह

**पवित्र** नगरी अयोध्या में भगवान श्रीराम के विराजमान होने के बाद देश विदेश से बड़ी संख्या में श्रद्धालु एवं पर्यटक दर्शनार्थ पधार रहे हैं। यहां लगातार श्रद्धालुओं की संख्या में वृद्धि हो रही है। इसको दृष्टिगत रखते हुए अयोध्या के आसपास स्थित धार्मिक स्थलों पर बुनियादी सुविधाएं विकसित की जा रही हैं। इसी क्रम में अयोध्या जनपद के लिए लगभग 2 करोड़ रुपए की दो पर्यटन विकास योजनाएं स्वीकृत की गयी हैं। इस धनराशि में से 1 करोड़ 20 लाख रुपए अवस्थापना सुविधाओं के लिए जारी कर दिये गये हैं।

पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने बताया कि अयोध्या के मसूदा विकासखंड के ग्राम अबानपुर सरोहा में ग्रामीण पर्यटन के अंतर्गत थीमेटिक गेट एवं पर्यटन सुविधाओं का विकास किया जाएगा। इसके लिए एक करोड़ रुपए स्वीकृत हुए हैं, जिसमें 60 लाख रुपए जारी किए जा चुके हैं। स्वीकृत राशि में यात्री शेड, कॉमन टॉयलेट, सैन्ड स्टोन फ्लोरिंग, स्टोन बेंच, गेट, साइनेज एवं सोलर लाइट का कार्य व पर्यटक सुविधाएं आदि विकसित की जाएंगी। उन्होंने बताया कि पूरे प्रदेश के 75 जनपदों में स्थित पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण धार्मिक स्थलों के आसपास बुनियादी सुविधाओं के विकास को प्राथमिकता दी जा रही है। पर्यटन मंत्री ने बताया कि भगवान राम की नगरी अयोध्या की पवित्र भूमि पर महंत रामदीन दास करीब 150 वर्ष पूर्व आए थे। उन्होंने यहीं तपस्या की थी। इसलिए यह कुटी तपोस्थली के नाम से प्रसिद्ध है। यह मंदिर धार्मिक एवं पौराणिक है। यहां वर्ष में कई मेलों का आयोजन होता है, जिसमें स्थानीय, क्षेत्रीय एवं ग्रामीण लोग बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हैं। दीपोत्सव, चैत राम नवमी, सावन झूला मेला एवं कार्तिक पूर्णिमा मेला के अवसर पर श्रद्धालुओं का आवागमन जारी रहता है। उन्होंने बताया कि पर्यटन सेक्टर में असीमित संभावनायें हैं। इसको देखते हुए राज्य सरकार ने जनपद के कम से कम एक अथवा अधिक पर्यटन स्थलों को पर्यटन मैप पर लाने का प्रयास कर रही है।

## यूपी के ग्रामीण युवाओं का हुनर देखेगा देश

**लखनऊ।** उत्तर प्रदेश कौशल विकास मिशन के तत्वावधान में आगरा में दो दिवसीय क्षेत्रीय कार्यशाला का शुभारंभ हुआ। दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना 2.0 और आरएसईटीआई 2.0 के अंतर्गत आयोजित इस कार्यशाला में आठ राज्यों के प्रतिनिधि कौशल विकास के नए आयामों पर मंथन कर रहे हैं। कार्यशाला की अध्यक्षता ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार के संयुक्त सचिव पंकज यादव ने की। इस अवसर पर मिशन निदेशक अभिषेक सिंह, एमडी/सीईओ, एसआरएलएम/एसएसडीएम, आरएसईटीआई और अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे। कार्यशाला में उत्तर प्रदेश सहित अन्य आठ राज्य/ केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, उत्तराखंड और लद्दाख के प्रतिनिधि भाग ले रहे हैं। डीडीयूजीकेवाई के अंतर्गत संचालित योजनाओं में ग्रामीण युवाओं को निरूशुल्क प्रशिक्षण, आधुनिक कक्षाएं, लैब, आवास, भोजन, प्रशिक्षण सामग्री और यूनिफॉर्म जैसी सुविधाएं दी जा रही हैं। इस कार्यशाला के माध्यम से युवाओं को अधिक रोजगारपरक कौशल से जोड़ने और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के तरीकों पर विस्तार से चर्चा हो रही है।

# शहीद दिवस पर मुख्यमंत्री ने स्वतंत्रता संग्राम में वीरगति पाने वाले अमर शहीदों को किया नमन

**पायनियर समाचार सेवा।** लखनऊ

● दीप प्रज्ज्वलित कर की गोमती मैया की पूजा-अर्चना, सुने भजन

**शहीद** दिवस के अवसर पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने लखनऊ स्थित गोमती नदी के तट पर बने शहीद स्मारक स्थल पहुंचकर महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित की। इस मौके पर उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में वीरगति प्राप्त अमर शहीदों को भी नमन किया और गोमती नदी में दीपदान कर राष्ट्र की एकता व शांति के लिए प्रार्थना की।

इस विशेष अवसर पर भजन संध्या का भी आयोजन किया गया, जिसमें भक्तिमय वातावरण बना रहा। भजन गायकों ने श्रीराम स्तुति 'श्रीराम चंद्र कृपालु भज मन', 'वैष्णव जन तो तेने कहिए' और 'रघुपति राघव राजा राम' जैसे भजनों की मनमोहक प्रस्तुति दी। कार्यक्रम के अंत में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने यहां दीप प्रज्ज्वलित किया फिर गोमती मैया की पूजा-अर्चना भी की। इस दौरान कैबिनेट मंत्री संजय निषाद, महापौर सुषमा खर्कवाल, विधायक नीरज बोरा, योगेश शुक्ल, जय देवी, ओपी श्रीवास्तव, विधान परिषद सदस्य लाल जी प्रसाद निर्मल आदि गणमान्य उपस्थित रहे।

## महाकुम्भ दुर्घटना की जांच के लिए गठित न्यायिक आयोग ने कार्यभार संभाला

**पायनियर समाचार सेवा।** लखनऊ

**प्रयागराज** महाकुंभ में मौनी अमावस्या के मौके पर हुई दुर्घटना के कारणों की पड़ताल के लिए गठित तीन सदस्यीय न्यायिक आयोग ने कामकाज शुरू कर दिया है। आयोग के तीनों सदस्य गुरुवार को लखनऊ के जनपथ स्थित अपने कार्यालय पहुंचे। आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति (सेवानिवृत्त) हर्ष कुमार ने बताया, क्योंकि जांच को प्राथमिकता के आधार पर लिया जाना है इसलिए हमने घोषणा के कुछ ही घंटों के भीतर कार्यभार संभाल लिया है। उन्होंने कहा, हमारे पास एक महीने का समय है, लेकिन फिर भी हम जांच को तेजी से पूरा करने की कोशिश करेंगे। आयोग के अध्यक्ष ने यह भी कहा कि वह जल्द ही प्रयागराज का दौरा करेंगे। बता दें कि प्रयागराज महाकुंभ में मौनी अमावस्या के मौके पर स्नान के लिए उमड़ी भीड़ में भगदड़ की स्थिति बन गई, जिसमें 30 लोगों की मौत हो गई थी और 60 अन्य घायल हो गए थे। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने हादसे की जांच के लिए तीन सदस्यीय न्यायिक आयोग का गठन किया था। इलाहाबाद उच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त न्यायमूर्ति हर्ष कुमार की अध्यक्षता वाले इस आयोग में सेवानिवृत्त आईएएस अफसर डी. के. सिंह और सेवानिवृत्त आईपीएस अधिकारी वी. के. गुप्ता भी शामिल हैं। आयोग को अपने गठन के एक महीने के अंदर मामले की जांच रिपोर्ट देनी होगी। इस सिलसिले में जारी अधिसूचना के मुताबिक आयोग भगदड़ के कारणों और परिस्थितियों की जांच करेगा। साथ ही भविष्य में ऐसी घटना की पुनरावृत्ति रोकने के सिलसिले में सुझाव भी देगा।

## आधा दर्जन जैन विभूतियों को आज सम्मानित किया जाएगा

**पायनियर समाचार सेवा।** लखनऊ

**संस्कृति** विभाग उप्र के अधीन जैन विद्या शोध संस्थान का 34वां स्थापना दिवस समारोह 31 जनवरी, 2025 को पूर्वान्ह 11 बजे अन्तरराष्ट्रीय बौद्ध शोध संस्थान, गोमतीनगर में आयोजित किया गया है। इस अवसर पर 6 जैन विद्वान विभूतियों को निजी सहभागिता के आधार पर जैन विद्वानों को विभिन्न श्रेणियों में पुरस्कार एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया जाएगा। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री जयवीर सिंह जैन विद्वानों को सम्मानित करेंगे। पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने बताया कि तीर्थंकर ऋषभदेव सम्मान से प्रो. राजा राम जैन, नोएडा, तीर्थंकर महावीर अहिंसा सम्मान से डॉ. पत्रिका जैन, लखनऊ, आचार्य कुन्दकुन्द सम्मान से डॉ. सचिन्द्र जैन, मंगलायतन, अलीगढ़, भरत चक्रवर्ती सम्मान से डॉ. ज्योति जैन, मुजफ्फरनगर, गणेश प्रसाद वर्णी श्रुत आराधक सम्मान से डॉ. पंकज जैन (भोपाल) और श्रुत संवर्धन सम्मान से जैन अमन अकलंक को सम्मानित किया जाएगा। पर्यटन मंत्री ने बताया कि निजी सहयोग से पहली बार संस्कृति विभाग के जैन संस्थान द्वारा तीर्थंकर महावीर मोक्षकल्याणक वर्ष 2024 सम्मान प्रारंभ किया गया है। ये सम्मान प्रति वर्ष प्रदेश के जैन धर्म-संस्कृति के विद्वानों को प्रदान किया जाएगा, जो जैन धर्म, संस्कृति और विद्या के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान देने और समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए निरंतर कार्य कर रहे हैं। तीर्थंकर ऋषभदेव सम्मान के तहत स्मृति चिह्न, अंगवस्त्र के साथ एक लाख रुपए की धनराशि प्रदान की जाएगी।

## हिन्दी संस्थान के अभिनन्दन पर्व पर आज नौ बाल साहित्यकारों को किया जाएगा सम्मानित

**लखनऊ।** उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा अभिनन्दन पर्व के अवसर पर कल शुक्रवार 31 जनवरी, 2025 को पूर्वाह्न 11 बजे से हिन्दी भवन के निराला सभागार में वर्ष 2023 के निमित्त नौ बाल साहित्यकारों को सम्मानित किया जाना है। हिन्दी संस्थान की प्रधान संपादक डॉ. अमिता दुबे न बताया कि बाल साहित्यकारों को राज बहादुर, निदेशक, उप्र हिन्दी संस्थान द्वारा सम्मानित किया जायेगा। बाल साहित्य सम्मान से सम्मानित साहित्यकारों में सुभद्रा कुमारी चौहान महिला बाल साहित्य सम्मान से डॉ करूणा पाण्डे, लखनऊ को, सोहन लाल द्विवेदी बाल कविता सम्मान से डॉ आरपी सारस्वत, सहारनपुर को, अमृत लाल नागर बाल कथा सम्मान से डॉ मोहम्मद अरशद खान, शाहजहांपुर को, शिक्षार्थी बाल चित्रकला सम्मान से दिलीप शर्मा, अलीगढ़ को, लल्ली प्रसाद पाण्डेय बाल पत्रकारिता सम्मान से नरेन्द्र निर्मल, गौतमबुद्ध नगर को, डॉ राम कुमार वर्मा बाल नाटक सम्मान स बलराम अग्रवाल, गौतमबुद्ध नगर को, कृष्ण विनायक फड़के बाल साहित्य समीक्षा सम्मान से देवी प्रसाद गौड़, मथुरा को, जगपति चतुर्वेदी बाल विज्ञान लेखन सम्मान से डॉ दीपक कोहली, लखनऊ को तथा उमाकान्त मालवीय युवा बाल साहित्य सम्मान से अनिल कुमार 'निलय', प्रतापगढ़ को सम्मानित किया जायेगा।

पायनियर वर्गीकृत

**सूचना**

मैंने अपने बेटे का नाम शौर्यवीर सिंह से परिवर्तित करके शिखर सिंह कर लिया है। भविष्य में मेरे बेटे को परिवर्तित नाम शिखर सिंह से जाना व पहचाना जाए। जितेंद्र सिंह किशुनपुर बाराबंकी

**सूचना**

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि बैनामा . 26.6.2003 .प्लाट नंबर 46 स्थित स्वराज नगर शहर व जिला रायबरेली विकास प्राधिकरण द्वारा जारी बैनामा एवं इसका अलॉटमेंट लेटर और पजेशन लेटर की मूल प्रति वास्तव में कहीं खो गई है। यह कहीं किसी बैंक और वित्तीय संस्थान में बंधक नहीं है। इशरत जहां पुत्री अब्दुल रहमान निवासी प्लॉट नंबर 46 स्वराज नगर तहसील सदर जनपद रायबरेली।

**सार्वजनिक सूचना**

सुमिटोमो मित्सुई फॉईनेन्सियल ग्रुप, इण्डिया होम फाईनेन्स कम्पनी लि०, लखनऊ (एस०एम०एफ०जी०), के निर्देश के तहत, सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि श्रीमती विन्देश्वरी पत्नी श्री रामेन्द्र कुमार, एक किता भूखण्ड खसरा संख्या 1521 मि०, रकबा 504 वर्गफीट, स्थित- अलीनगर सुनहरा, वार्ड-सरोजनी नगर, तहसील- सरोजनी नगर, जिला-लखनऊ की पूर्णतया स्वामिनी है जिसे अफताब आलम व मो० असलम से विक्रय विलेख के माध्यम से क्रय किया है जो दिनांकित 05.10.2024 जो कार्यालय उप-निबन्धक सरोजनी नगर-द्वितीय, लखनऊ में बही सं० 1, जिल्द सं० 479, क्रमांक 11831 पर पंजीकृत है। विदित हो कि उक्त सम्पत्ति से सम्बन्धित विक्रय विलेख दिनांकित 05.10.2024 फातिमा बेगम के मृत्योपरान्त उनके विधिक वारिसों द्वारा निष्पादित किया गया था। जैसा कि श्रीमती विन्देश्वरी व श्री रामेन्द्र कुमार उपरोक्त सम्पत्ति के एवज् में सुमिटोमो मित्सुई फॉईनेन्सियल ग्रुप, इण्डिया होम फाईनेन्स कम्पनी लि०, लखनऊ से ऋण लेना चाहते है। अतः किसी भी व्यक्ति को इस सम्पत्ति में किसी भी पूर्व अधिकार या ब्याज का दावा करने या किसी भी तरह से दावा करने या किसी व्यक्ति / बैंक / निगम / वित्तीय को उपरोक्त विलेख जमा करके ऋण उठाया है तो सार्वजनिक सूचना की तारीख से 7 दिनों के भीतर लिखित आपत्ति दे सकता है। इस नोटिस की अवधि समाप्त होने के बाद किसी भी दावे पर विचार नहीं किया जाएगा और इस तरह के दावे का कानून की नजर में कोई मूल्य नहीं होगा, यह भी माना जाएगा कि सुमिटोमो मित्सुई फॉईनेन्सियल ग्रुप, इण्डिया होम फाईनेन्स कम्पनी लि०, लखनऊ के साथ उपरोक्त सम्पत्ति को गिरवी रखने के लिए किसी को कोई आपत्ति नहीं है।

विवेक श्रीवास्तव (एडवोकेट)
कार्यालय/निवासी- 3/40, वास्तु खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010, फोनः 9839485155

# महाकुंभ हादसे के लिए प्रदेश व केंद्र की भाजपा सरकारें जिम्मेदारः अखिलेश यादव

**पायनियर समाचार सेवा।** लखनऊ

**अखिलेश** यादव ने प्रयागराज महाकुंभ में हुई घटना को बेहद दुःखद बताते हुए कहा कि इसके लिए भाजपा की प्रदेश और केन्द्र दोनों की सरकारें जिम्मेदार हैं। यादव ने कहा कि प्रयागराज में जो कुछ हुआ है, श्रद्धालुओं की जान गयी है, लोगों ने अपनो को खोया है उसकी जिम्मेदारी सरकार की है। भाजपा सरकार इस जिम्मेदारी से बच नहीं सकती है।

अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा सरकार ने महाकुंभ का जितना प्रचार किया उतना इंतजाम नहीं किया। इंतजाम अच्छे होते तो यह घटना नहीं होती। मृतकों के परिजनों के लिए मुआवजा राशि 25 लाख रुपये कम है और मदद करनी चाहिए। साथ ही साथ जिन श्रद्धालुओं की मौत हुई है और जो श्रद्धालु लापता हैं, सबकी सूची जारी करनी चाहिए। क्योंकि आशंका बहुत है, लोगों में कन्फ्यूजन है, वह तभी दूर होगा जब पूरी सूची जारी होगी। गुरुवार को दिल्ली दौरे के दौरान मीडिया के सवालों का जवाब देते हुए अखिलेश यादव ने कहा कि केवल यह कह देना कि वीआईपी वजह से इतनी बड़ी घटना हो गयी यह दुर्भाग्यपूर्ण है। सरकार दावा कर रही कि दस हजार करोड़ का बजट दिया है। हर तरह की सुरक्षा व्यवस्था का दावा है, डबल इंजन की सरकार आयोजन में लगी है, व्यवस्था में अगर कोई कमी नहीं है तो इतने लोगों को कैसे जान गवांनी पड़ी। अखिलेश यादव ने कहा कि कुंभ में हुए हादसे की जानकारी हमें रात में 2 बजकर 48 मिनट पर हुई थी, तो मुख्यमंत्री जी और सरकार को तो जानकारी और पहले हो गयी होगी। लेकिन दुर्भाग्य है कि इतनी बड़ी दुखद घटना के बाद सुबह-सुबह मुख्यमंत्री जी का जो ट्विूट आया उसकी कोई कल्पना नहीं कर सकता है कि सरकार ऐसा ट्विूट कर सकती है। अखिलेश ने कहा कि सरकार महाकुंभ में आने के लिए खुद न्यौता और कार्ड बांट रही थी, जबकि अभी तक कभी कुंभ में आने के लिए कार्ड या न्यौता नहीं बांटे जाते थे। जितना भी पौराणिक और ऐतिहासिक रिकार्ड है, कभी किसी को कार्ड नहीं दिया गया। श्रद्धालु स्वयं अपनी आस्था से कुंभ में स्नान के लिए आते हैं। स्नान, दान के लिए लोग जाते हैं। सरकार ने कार्ड वीआईपी को दिया था। जिन श्रद्धालुओं की भगदड़ में जान गयी है, उन्हें कार्ड नहीं मिला था। ये लोग सरकार की वजह से कुंभ नहीं आये थे, वे अपनी भावना और आस्था से कुंभ आये थे।

## 'हर घर मछलीघर' की परिकल्पना को मूर्त रूप दे रहीं ग्रामीण महिलाएं

**पायनियर समाचार सेवा।** लखनऊ

**आईसीएआर**-नेशनल ब्यूरो ऑफ फिश जेनेटिक रिसोर्सेज (आईसीएआर-एनबीएफजीआर) अपनी अनुसूचित जाति उप योजना (एससीएसपी) परियोजना के माध्यम से मिशन नवशक्ति 2.0 के साथ ग्रामीण परिवर्तन का नेतृत्व कर रहा है। आठ गांवों में फैले 13 स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) की 51 महिलाएं उन्नाव जिले के औरास और हसनगंज ब्लॉक के डोहरा, चिरैया, मीठेपुर, बम्बनाखेड़ा, ऊंचद्वार, सिगनापुर, नवई, बाराखेड़ा और मीरखेड़ा। नारी शक्ति, जय अंबे, जय मां लक्ष्मी, ज्योति स्वामी, कमल, महिला सरस्वती, जय बालाजी, जय हनुमान, जय संतोषी मां, सुघरदास बाबा, ओराश, राधास्वामी और पूजा एसएचजी से जुड़ी महिलाएं आईसीएआर की एक एक्सपोजर यात्रा पर निकलीं। महिलाएं जिन्होंने पहले ही एक्वावर्ल्ड, हाईटेक फिशरीज, केवीके उन्नाव और आईसीएआर-एनबीएफजीआर के सहयोग से केवीके उन्नाव में कौशल विकास प्रशिक्षण पूरा कर लिया है, अब बाजार की जरूरतों के अनुरूप नए उत्पाद बनाने के लिए प्रणालीगत डिजाइन सोच को लागू कर रही हैं। इस संरचित दृष्टिकोण के माध्यम से, वे शहरी घरों और कार्यालय स्थानों के लिए सूक्ष्म और नैनो एक्वेरियम विकसित कर रहे हैं, जो 'हर घर मछली घर' की परिकल्पना को मूर्त रूप देते हैं, जो सजावटी एक्वेरियम को आधुनिक जीवन का एक अभिन्न अंग बनाना चाहता है।

## प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय में महात्मा गांधी के बलिदान दिवस पर अर्पित की गई श्रद्धांजलि

**पायनियर समाचार सेवा।** लखनऊ

**राष्ट्रपिता** महात्मा गांधी के बलिदान दिवस (30 जनवरी) के मौके पर प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय में पूर्वान्ह 10:59 बजे सायरन बजते ही कांग्रेस के वरिष्ठ नेता एवं पूर्व विधायक श्याम किशोर शुक्ला के नेतृत्व में वरिष्ठ नेताओं एवं कार्यकर्ताओं द्वारा दो मिनट मौन रखकर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गयी।

इसी क्रम में आज दिल्ली के राजघाट स्थित राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की समाधि स्थल पहुंचकर उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष, पूर्व मंत्री अजय राय ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए भावभीनी श्रद्धांजलि दी। इस मौके कांग्रेस सांसद तनुज पुनिया, इमरान मसूद एवं पूर्व सांसद प्रदीप जैन आदित्य मुख्य रूप से मौजूद रहे। इस अवसर पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता पूर्व विधायक श्याम किशोर शुक्ल की तथा संचालन बृजेन्द्र कुमार सिंह ने किया। सर्वप्रथम सभी नेताओं ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के चित्र पर माल्यार्पण कर श्रद्धासुमन अर्पित किया। तदुपरान्त विचार गोष्ठी को सम्बोधित करते हुए पूर्व विधायक श्याम किशोर शुक्ला ने कहा कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के मूल्यों और आदर्शों की आज पूरी दुनिया में पूजा हो रही है। लेकिन बड़े दुख की बात है कि मौजूदा सरकार के समर्थन में कुछ ऐसे तत्व हैं जो राष्ट्रपिता की हत्या करने वाली विचारधारा का संरक्षण करते हैं।

**सार्वजनिक सूचना**

सर्वसाधारण जनता को सूचित किया जाता है कि स्वामी विवेकानंद उच्चतर माध्यमिक विद्यालय (श्री विजय सिंह) खसरा संख्या 223 के भूखण्ड भूमि भाग, क्षेत्रफल- 650.7 वर्ग मीटर, ग्राम मानपुर, परगना सरसावां, तहसील बहेड़ी, जिला बरेली, उत्तर प्रदेश में स्थित है और संपत्ति श्रृंखला में मूल उपर्युक्त विक्रय विलेख दिनांक 06.09.2005 दस्तावेज है। एसआरओ- बहेड़ी में बंडल 6996, ग्राहक के पास खो गया/उपलब्ध नहीं है और ऑनलाइन एफआईआर पहले ही दर्ज की जा चुकी है एलआर नंबर 20250000067770 और उक्त संपत्ति वर्धना फाइनेंस प्राइवेट लिमिटेड द्वारा वित्तपोषित की जानी है, यदि किसी के पास उक्त संपत्ति पर कोई प्रभार/ब्याज/स्वामित्व है या किसी प्रकार का विवाद है तो कृपया वर्तमान तिथि से 15 दिनों के भीतर नीचे दिए गए पते पर लिखित रूप से नीचे हस्ताक्षरकर्ता को सूचित करें, ऐसा न करने पर और मुझे पता है कि बंधक संपत्ति के साथ चूक होने की स्थिति में स्वामी विवेकानंद उच्चतर माध्यमिक विद्यालय (श्री विजय सिंह) इसके लिए जिम्मेदार है।
Sonali Ghosh (Advocate) B-220, 2nd Floor, Noida
One, Tower-B, Sector 62, Noida, U.P

**अल्पकालीन निविदा सूचना**

संस्था यजत फाउंडेशन लखनऊ (NGO) द्वारा जिला लखनऊ में गेल (इंडिया) लिमिटेड सीएसआर नीति के अंतर्गत वित्त वर्ष 2024–25 और 2025–26 के लिए "छात्रों को निरोग्यम किट का वितरण और दैनिक स्वच्छता और प्राथमिक चिकित्सा पर जागरूकता" हेतु विभिन्न प्रकार की सामग्री आपूर्ति हेतु निविदा आमन्त्रित की जा रही है। इच्छुक संस्थाएं, दिनाँक 31.01.2025 से निविदा फॉर्म, यजत फाउंडेशन संस्था के कार्यालय पता : ए–34/1, सेक्टर–बी,एल डी ए कॉलोनी कानपुर रोड लखनऊ–226012 से प्राप्त कर सकते है।
निविदा फॉर्म जमा करने की अंतिम तारीख 05.02.2025 है। निविदाएं 07.02.2025 को खोली जायेंगी। 9936364482
theyajatfoundation@gmail.com

पायनियर
लखनऊ, शुक्रवार, 31 जनवरी, 2025



# गणतंत्र दिवस परेड में उत्तर प्रदेश की झांकी को मिला पहला स्थान

**पायनियर समाचार सेवा।** लखनऊ

## केंद्रीय रक्षा राज्य मंत्री ने उत्तर प्रदेश की झांकी को प्रथम स्थान प्राप्त करने पर प्रदान की ट्राफी तथा प्रशस्ति पत्र

**गणतंत्र** दिवस पर निकली उत्तर प्रदेश की झांकी ने पहला स्थान प्राप्त किया। राष्ट्रीय रंगशाला नई दिल्ली में आयोजित अवार्ड सेरेमनी में केंद्रीय रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ ने उत्तर प्रदेश की झांकी को प्रथम स्थान प्राप्त करने पर ट्राफी तथा प्रशस्ति पत्र प्रदान किया।

गणतंत्र दिवस परेड पर नई दिल्ली के कर्तव्य पथ पर निकली यूपी की झांकी इस बार महाकुम्भ पर थी। उत्तर प्रदेश की झांकी भारत ही नहीं, बल्कि संपूर्ण विश्व में मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर के रूप में प्रतिष्ठित महाकुम्भ 2025-स्वर्णिम भारत -विरासत और विकास को प्रदर्शित कर रही थी। यह झांकी प्रयागराज में पवित्र गंगा, अविरल यमुना और पौराणिक सरस्वती के संगम पर हो रहे महाकुम्भ के दिव्य स्वरूप को दर्शा रही थी, जो पृथ्वी पर मानवता का सबसे बड़ा समागम है।

### अध्यात्म, धरोहर, विकास व डिजिटल क्रांति का संगम

**2025** का सबसे महत्वपूर्ण आयोजन महाकुम्भ अध्यात्म, धरोहर, विकास और डिजिटल प्रगति का संगम है। इस झांकी के केंद्र में भी यही रहा। ट्रैक्टर के आगे अमृत कलश की आगे झुकी हुई भव्य प्रतिकृति दर्शाई गई, जिससे अमृतधारा प्रवाहित हो रही थी। साथ ही शंखनाद, आचमन और साधना करते साधु-संत और संगम में डुबकी लगाते श्रद्धालुओं ने महाकुम्भ की आध्यात्मिक ऊर्जा को जीवंत किया। योगी सरकार के नेतृत्व में हो रहे अभूतपूर्व आयोजन का दीदार देश-विदेश से आए आगंतुकों ने भी किया।

### समुद्र मंथन की पौराणिक कथा से भी हुए अवगत

**ट्रेलर** के पैनल पर अमृत (शाही) स्नान के लिए जाते अखाड़ों-श्रद्धालुओं को म्यूरल एवं एलईडी स्क्रीन के द्वारा दर्शाया गया। ट्रेलर के प्लेटफार्म पर समुद्र मंथन की पौराणिक कथा को चित्रित किया गया, जिसने महाकुम्भ के महत्व और इसकी ऐतिहासिकता को रेखांकित किया। इसके पिछले हिस्से में समुद्र मंथन से निकले 14 रत्नों को दर्शाया गया था।

### सुरक्षा व क्राउड मैनेजमेंट को आईसीसीसी के माध्यम से प्रमुखता से दिखाया गया

**झांकी** के माध्यम से महाकुम्भ 2025 के आयोजन में अपनाई जा रही टेक्नोलॉजी, प्रबंधन और डिजिटलीकरण को भी दर्शाया गया। इसके लिए हाईटेक इंटीग्रेटेड कमांड एंड कंट्रोल सेंटर (आईसीसीसी) को प्रमुखता से दिखाया गया, जो सुरक्षा और क्राउड मैनेजमेंट का उत्कृष्ट उदाहरण है। इसके साथ ही एलईडी के माध्यम से महाकुम्भ पर्व स्नान को जाते अखाड़ों के जुलूस को प्रसारित किया गया।

# कृष्णानगर में 25 एकड़ व 20 बीघा क्षेत्रफल में चल रही दो अवैध प्लाटिंग पर एलडीए ने चलाया बुलडोजर

- बख्शी का तालाब में चंद्रिका देवी रोड पर 5 बीघा क्षेत्रफल में की जा रही एक अवैध प्लाटिंग को भी ध्वस्त किया गया

**पायनियर समाचारसेवा।** लखनऊ

**कृष्णानगर** में एलडीए द्वारा बड़ी कार्यवाही की गयी। एलडीए द्वारा कृष्णानगर के अलीनगर सुनहरा में 25 एकड़ व 20 बीघा के विशाल क्षेत्रफल में की जा रही दो अवैध प्लाटिंग को ध्वस्त किया गया। विहित प्राधिकारी द्वारा अवैध निर्माण पर नोटिस भेजा गया था, जिसके बाद प्रवर्तन टीम द्वारा ध्वस्तीकरण की कार्रवाई की गयी। इसके अलावा बीकेटी में चंद्रिका देवी रोड पर चल रही एक अवैध प्लाटिंग पर बुलडोजर चलाया गया।

गुरुवार को कृष्णानगर और अलीनगर सुनहरा में बीघों जमीन पर प्लाटिंग पर एलडीए ने कड़ी कार्रवाई की। प्रवर्तन जोन.3 की जोनल अधिकारी वन्दना पाण्डेय ने बताया कि न्यू गोल्डन सिटी सहकारी आवास समिति लि0 के फज़ल मोहम्मद, चित्रेश तिवारी, आकांक्षा, अरूण सिंह, हिमांशु सक्सेना व अरूण द्विवेदी द्वारा कृष्णानगर के अलीनगर सुनहरा में लगभग 20 एकड़ क्षेत्रफल में अवैध रूप से प्लाटिंग का कार्य करते हुए कालोनी विकसित की जा रही थी। साथ ही संदीप पाल, राघवेन्द्र यादव व अन्य द्वारा अलीनगर सुनहरा में लगभग 25 बीघा क्षेत्रफल में प्लाटिंग का कार्य करते हुए अवैध कालोनी विकसित की जा रही थी। प्राधिकरण से ले.आउट स्वीकृत कराये बिना की जा रही इन दोनों अवैध प्लाटिंग के विरूद्ध विहित न्यायालय ने वाद दर्ज करते हुए ध्वस्तीकरण के आदेश दिए थे। आदेश पर सहायक अभियंता अनूप श्रीवास्तव, अवर अभियंता एसके सिंह व राम चौहान द्वारा प्राधिकरण पुलिस व स्थानीय थाने के पुलिस बल के सहयोग से दोनों अवैध प्लाटिंग के ध्वस्तीकरण की कार्यवाही करायी। इस दौरान डेवलपर ने स्थल पर विकसित की गयी सड़क, नाली, बाउन्ड्रीवॉल, साइट ऑफ्सि व भूखण्डों के डिमार्केशन के लिए ईंट से किये गये चिनाई आदि के कार्य को ध्वस्त कर दियाा।

### बीकेटी में अवैध प्लाटिंग पर चला बुलडोजर

**प्रवर्तन** जोन.4 के जोनल अधिकारी माधवेश कुमार ने बताया कि स्वतंत्र देव मिश्रा व अन्य द्वारा बख्शी का तालाब के ग्राम.भवानीपुर में चंद्रिका देवी रोड पर पर्वतपुर तिराहे के पास लगभग 5 बीघा क्षेत्रफल में अनाधिकृत रूप से प्लाटिंग का कार्य करते हुए अवैध कालोनी विकसित की जा रही थी। प्राधिकरण से ले.आउट स्वीकृत कराये बिना की जा रही इस अवैध प्लाटिंग के विरूद्ध विहित न्यायालय द्वारा वाद दर्ज करते हुए ध्वस्तीकरण के आदेश पारित किये गये थे। प्रवर्तन टीम ने पुलिस बल के सहयोग से अवैध प्लाटिंग के ध्वस्तीकरण की कार्यवाही करायी। डेवलपर ने स्थल पर विकसित की गयी सड़क, नाली, बाउन्ड्रीवॉल आदि को ध्वस्त कर दिया।

# कमता चौराहे पर ट्रैफिक जाम की समस्या से निजात के लिए मेट्रो को भी नोटिस

**विधि संवाददाता।** लखनऊ

**कमता** चौराहे पर जाम की समस्या से निजात के लिए दाखिल जनहित याचिका में हाईकोर्ट की लखनऊ खंडपीठ ने मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन को भी पक्षकार बनाते हुए उसे नोटिस जारी करने का आदेश दिया है। जस्टिस एआर मसूदी एवम जस्टिस सुभाष विद्यार्थी की पीठ ने यह आदेश अवध बार एसोसिएशन की एक जनहित याचिका पर दिया है। वर्ष 2017 में दाखिल इस याचिका पर पिछली सुनवाई के दौरान ही पीठ ने कहा था कि मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन का कोई जिम्मेदार अधिकारी भी ट्रैफिक समस्या से निजात का हल तलाशने वाली कोर टीम में होना चाहिए। ताकि भविष्य में मेट्रो रेल को लेकर कोई बाधा उत्पन्न न हो। पीठ ने यह भी कहा था कि शहीद पथ से कमता पर आने वाली ट्रैफिक सर्विस लेन पर शिफ्ट होने और संकरे सर्विस लेन के कारण जो अव्यवस्था फैलती है उसके समाधान की आवश्यकता है। कमता चौराहे पर शहीद पथ व एयरपोर्ट पॉलिटेक्निक से अयोध्या रोड आदि का पूरा ट्रैफिक आकर मिलता है। जिसकी वजह से यह चौराहा बॉटलनेक में तब्दील हो जाता है। पीठ ने एलडीए को आदेश भी दिया कि इन बातों को ध्यान में रखते हुए और विस्तृत व लंबे समय तक टिकने वाले समाधान की आवश्यकता है।

# कुष्ठ उन्मूलन को लेकर सरकार कर रही हर संभव प्रयासः मुकेश शर्मा

- प्रदेश में शुरू हुआ स्पर्श कुष्ठ जागरूकता अभियान, 13 फरवरी तक चलेगा अभियान

**पायनियर समाचार सेवा।** लखनऊ

**राष्ट्रपिता** महात्मा गांधी की पुण्यतिथि (30 जनवरी) कुष्ठ निवारण दिवस के रूप में मनायी जाती है। इसी क्रम में बृहस्पतिवार को बलरामपुर जिला अस्पताल में कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम का उद्घाटन विधायक मुकेश शर्मा, विधानपरिषद सदस्य ने किया और स्पर्श कुष्ठ जागरूकता अभियान की शुरुआत की जो कि 13 फरवरी तक चलेगा।

विधानपरिषद सदस्य ने कहा कि सरकार ने साल 2027 तक कुष्ठ उन्मूलन का लक्ष्य रखा है और इसके उन्मूलन के लिए सरकार हर संभव प्रयास कर रही है। उन्होंने कहा कि लोगों को कुष्ठ के प्रति जागरूक करें। अधिक से अधिक लोगों की स्क्रीनिंग करें और कुष्ठ रोगियों का पता लगाकर उनका इलाज शुरू करें। इसके साथ ही कुष्ठ को लेकर लोगों में जो भ्रांतियां है उन्हें भी दूर करें। राज्य कुष्ठ अधिकारी डॉ. जया देहलवी बताती हैं कि हर साल यह दिवस किसी न किसी थीम के साथ मनाया जाता है। इस साल इस दिवस की थीम है-आइये मिलकर जागरूकता फैलायें, भ्रांतियों को दूर भगायें, कुष्ठ प्रभावित कोई पीछे छूट न जाये। उन्होंने बताया कि कुष्ठ रोगियों का इलाज मल्टी ड्रग ट्रीटमेंट(एमडीटी) के माध्यम से निःशुल्क किया जाता है। इस रोग से पीड़ित व्यक्ति की करेक्टिव सर्जरी की जाती है और मरीज को श्रम ह्रास के बदले 12,000 रूपये दिए जाते हैं। साल 2024-25 प्रदेश भर में 9755 नए कुष्ठ रोगी पाए गए हैं। बलरामपुर जिला अस्पताल के निदेशक डॉ. सुशील कुमार ने कहा कि कुष्ठ माइकोबैक्टीरियम लेप्रे नामक जीवाणु के कारण होने वाला संक्रामक रोग है। इसमें त्वचा में अल्सर, तंत्रिका क्षति और मांसपेशियां कमजोर होती है। मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ.एन.बी.सिंह ने कहा कि सभी स्वास्थ्य केन्द्रों पर कुष्ठ रोग की जाँच और इलाज की सुविधा निःशुल्क है। कुष्ठ रोग के लक्षण लम्बे समय के बाद दिखाई देते हैं क्योंकि कुष्ठ रोग से लक्षण उत्पन्न होने की अवधि कुछ हफ्तों से लेकर 20 साल या उससे अधिक की होती है। इस रोग की औसत इन्क्यूबेशन अवधि पांच से सात साल की होती है।

इस मौके पर जिला कुष्ठ अधिकारी डॉ. ए.के.सिंघल, बलरामपुर जिलाअस्पताल के मुख्य चिकित्साधीक्षक डॉ. सुनील तेवतिया, जिला स्वास्थ्य शिक्षा एवं सूचना अधिकारी योगेश रघुवंशी, चिकित्सा अधीक्षक डॉ. हिमांशु चतुर्वेदी व डॉ. उस्मानी, जिला अस्पताल के अन्य चिकित्सक अधिकारी, जिला कुष्ठ सलाहकार डॉ. शोमित और कर्मचारी मौजूद रहे।

# भिक्षावृत्ति से मुक्त हुए बच्चों के परिवारों को योजनाओं का लाभ देने के निर्देश

**पायनियर समाचार सेवा।** लखनऊ

**डीएम** की अध्यक्षता में भिक्षावृत्ति से मुक्त करने के लिए बैठक किया गया। बैठक में डीएम द्वारा बेसिक शिक्षा अधिकारी को निर्देशित कि या गया कि दाखिला लिए बच्चों को ग्राम प्रधानों के माध्यम से स्कूलों में उपस्थित को निरंतर सत्यापित किया जाए, जिससे कोई बच्चा ड्राप आउट न होने पाए। साथ ही इनके परिवारों को योजनाओं का लाभ देते हुए आयुष्मान कार्ड, दिव्यांग प्रमाण पत्र सहित अन्य सुविधाएं देने के भी निर्देश दिए गए।

गुरुवार को राजधानी को बाल भिक्षावृत्ति से मुक्त किये जाने के लिए कलेक्ट्रेट में बैठक जिलाधिकारी विशाख जी की अध्यक्षता में किया। बैठक में जिला प्रोबेशन अधिकारी ने जिलाधिकारी को बताया कि पिछली बैठक में इस अभियान में बदलाव संस्था लखनऊ को भी जोड़ा गया है। इन तीनों संस्थाओं और विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं के विभागों ने अभियान चलाते हुए बाल भिक्षावृत्ति करने वाले परिवारों को चिन्हित करते हुए 256 बच्चों को बाल सेवा योजना अंतर्गत संतृप्त करते हुए उनके दाखिले स्कूलों में कराए है। जिसके सम्बन्ध में जिलाधिकारी ने बेसिक शिक्षा अधिकारी को निर्देश दिए कि बाल सेवा योजना से जुड़े बच्चे जो स्कूल जा रहे है इनके ग्राम प्रधानों को यह जिम्मेदारी दी जाए कि इन बच्चों की स्कूल में उपस्थिति का निरंतर सत्यापन करना सुनिश्चित किया जाए, ताकि कोई बच्चा ड्राप आउट न होने पाए। जिला प्रोबेशन अधिकारी ने बताया कि चाइल्ड लाइन, नगर निगम, वन स्टॉप सेंटर और डूडा की संयुक्त टीमों ने भिक्षावृत्ति वाले पॉकेटों को चिन्हित करते हुए अपनी टीमें तैनात करके इन बच्चों को मुख्य धारा से जोड़ा है। उन्होंने जिलाधिकारी को बताया कि वर्तमान में नगराम में और भजा खेड़ा में 10 दिनों का कैंप किया जा रहा हैं। जिन लोगों के दस्तावेज कम है उनके दस्तावेज बनवा कर उनको सरकार की कल्याणकारी योजनाएं से संतृप्त करते हुए मुख्य धारा से जोड़ा जा रहा है। बैठक में उपस्थित स्टेक होल्डर्स से भी गहन विचारा विमर्श करते हुए उनके भी सुझाव लिए गए। बैठक में जिलाधिकारी ने निर्देश दिए कि आगामी 3-4 फरवरी को सभी चिन्हित पॉकेट जहां भिक्षावृत्ति करने वाले परिवार आवासित है वहां पर लाभार्थीपरक योजनाओं से जोड़ने के लिए समस्त सम्बन्धित विभागों को अधिकारियों एवं कार्मिकों ने उनका आधार कार्ड बनवाना, आयुष्मान कार्ड बनवाना, दिव्यांग प्रमाण पत्र, मेडिकल कैम्प, समाज कल्याण एवं महिला कल्याण की योजनाओं से आच्छादित करने, भिक्षावृत्ति में लिप्त महिलाओं एवं बच्चों को कौशल विकास कार्यक्रम जोड़ने एवं खण्ड शिक्षा अधिकारी द्वारा बच्चों का स्कूलों में नामाकंन करते हुए उन्हें ड्रेस, किताबे और अन्य सामग्री उपलब्ध कराये जाने और कोटेदारों द्वारा राशन एवं श्रम विभाग द्वारा रजिस्ट्रेशन करवाने के लिए कैम्पों का आयोजन किया जाए। साथ निर्देशित किया कि बाल भिक्षावृत्ति करने वाले परिवारों के सदस्यों को सम्मिलित कर स्वयं सहायता संगठन का गठन करते हुए आरसेटी और डूडा के माध्यम से स्वरोजगार के लिए अवसर प्रदान किए जाए एवं पीएम स्वनिधि व अन्य वित्तीय योजनाओं से ऋण भी उपलब्ध कराया जाए। यही नहीं साथ ही भिक्षावृत्ति में लिप्त परिवारों की महिलाओं के स्वरोजगार हेतु स्वयं सहायता समूह का गठन और पुरुषों के लिए जो स्वरोजगार के इच्छुक है उनकी आरसेटी में स्किल डेवलपमेंट की ट्रेनिंग कराना सुनिश्चित कराया जाए। महिला स्वयं सहायता समूह से जोड़कर आरसेटी ट्रेनिंग सेंटर आने जाने के लिए साधन की निःशुल्क व्यवस्था को भी सुनिश्चित कराया जाए।

# महापौर की उपस्थिति में स्वास्थ्य शिविर में हुई लोगों की जांचें

**पायनियर समाचार सेवा।** लखनऊ

**ऐशबाग** में अपोलो हास्पिटल के सहयोग से नगर निगम द्वारा निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। महापौर की उपस्थिति में शिविर में लोगों के स्वास्थ्य का परीक्षण किया गया। शिविर में ब्लड प्रेशर, रैंडम शूगर और आंखों की जांच की गयी। साथ ही विशेष कर कार्डियोपल्मीनरी रिससिटेशन (सीपीआर) हार्ट अटैक और कार्डियक अरेस्ट मे दिये जाने वाला प्राथमिक उपचार की जानकारी दी गयी। गुरुवार को अपोलो हास्पिटल लखनऊ के सहयोग से जलकल विभाग, नगर निगम, ऐशबाग लखनऊ मे निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया, जिसका उद्घाटन महापौर सुषमा खर्कवाल के द्वारा किया। इस शिविर का मुख्य उद्देश्य जलकल विभाग में कार्यरत अधिकारियों व नियमित एवं अनियमित कर्मचारियों और सभी जनमानस के सभी प्रकार के निःशुल्क स्वास्थ्य चेकअप और डॉ के परामर्श की सेवायें दी। हास्पिटल की टीम ने हार्टअटैक कार्डियक अरेस्ट की स्थिति मे सीपीआर देकर जान बचाने के लिये डेमो देकर लोगो को जागरूक किया। हॉस्पिटल की टीम द्वारा यह भी बताया गया कि कार्डियोपल्मीनरी रिससिटेशन (सीपीआर) हार्ट अटैक और कार्डियक अरेस्ट मे दिये जाने वाला एक प्राथमिक उपचार है। यह उपचार रोगी को तब दिया जाता है, जब किसी व्यक्ति को दिल की धड़कन अचानक रूक जाती है, इस स्थिति मे सीपीआर देकर उसकी जान बचाई जा सकती है। इस स्वास्थ्य शिविर में अपर नगर आयुक्त ललित कुमार, महाप्रबंधक जलकल कुलदीप सिंह, प्र.अधिशाषी अभियंता सचिन सिंह यादव, वित्त अधिकारी धर्मेन्द्र सिंह, लेखाधिकारी पंकज सोती, अपोलो हॉस्पिटल की ओर से असिस्टेंट जनरल मैनेजर प्रतीक दिक्षित उपस्थित हुए।

गणतंत्र दिवस परेड के दौरान निकली कुल 22 झाकियों में स्वास्थ्य विभाग की झांसी को तीसरा स्थान प्राप्त हुआ है। विभाग की ओर से पेश की गई झांकी में टीबी उन्मूलन से संबंधित गतिविधियों को प्रभावशाली तरीके से दर्शाया गया था। गुरुवार को राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन की मिशन निदेशक डॉ. पिंकी जोवेल ने पुरस्कार स्वरूप ट्राफी प्राप्त किया।

# एनटीडी उन्मूलन के लिए जन आंदोलन में बनें भागीदारः सीएमओ

**पायनियर समाचार सेवा।** लखनऊ

**हर** साल 30 जनवरी को विश्व उपेक्षित उष्णकटिबंधीय रोग ( वर्ल्ड नेगलेक्टेड ट्रॉपिकल डिजीज डे यानि एनटीडी) दिवस मनाया जाता है। इसी क्रम में बृहस्पतिवार को वर्ल्ड एनटीडी दिवस के अवसर पर मच्छरजनित बीमारियों से बचाव के लिए विभिन्न जागरूकता गतिविधियां आयोजित हुयीं जिसके माध्यम से लोगों को मच्छर जनित बीमारियों जैसे-डेंगू, मलेरिया, चिकनगुनिया और फ़ाइलेरिया आदि के लक्षण, बचाव और उपचार के बारे में बताया गया। मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. एनबी सिंह ने बताया कि जिला मलेरिया अधिकारी डॉ. रितु श्रीवास्तव व उनकी टीम ने एम्बेड परियोजना के सहयोग से विद्यालयों में वेक्टर जनित रोगों को लेकर जागरूकता रैली निकाली, जागरूकता गोष्ठी की और पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया व विजेताओं को पुरस्कृत भी किया। इसके अलावा जनपद की 10 मलिन बस्तियों में जागरूकता कार्यक्रम और सीएचसी इंदिरानगर पर कैनोपी लगाकर आनेवाले लोगों को जागरूक किया गया।

# एनआरएलएम, पंचायती राज, बेसिक शिक्षा विभाग मिलकर छेड़ेंगे फाइलेरिया रोधी अभियान

- प्रमुख सचिव स्वास्थ्य ने तीनों विभागाध्यक्षों को लिखा पत्र, सहयोग की अपील

**पायनियर समाचार सेवा।** लखनऊ

**प्रदेश** में 10 फरवरी से शुरू होने जा रहे फाइलेरिया रोधी अभियान मास ड्रग एडिमिनिस्ट्रेशन (एमडीए) में राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (एनआरएलएम), पंचायती राज व बेसिक शिक्षा विभाग के कर्मचारी स्वास्थ्य विभाग के साथ कंधे से कंधा मिलाकर दवा खिलाएंगे। प्रमुख सचिव चिकित्सा स्वास्थ्य, परिवार कल्याण एवं चिकित्सा शिक्षा पार्थ सारथी सेन शर्मा ने बुधवार को तीनों विभागाध्यक्षों को सहयोग देने का पत्र लिखा है। देश को वर्ष 2027 तक फाइलेरिया मुक्त बनाने का लक्ष्य तय किया गया है। 10 से 28 फरवरी तक प्रदेश के 14 जनपदों (लखनऊ, उन्नाव, बाराबंकी, अमेठी, बलिया, बरेली, चित्रकूट, हमीरपुर, जालौन, जौनपुर, पीलीभीत, शाहजहांपुर, प्रयागराज और सोनभद्र) के 45 ब्लाक में एमडीए राउंड चलाया जाएगा जिसमें एक वर्ष से छोटे बच्चों, गर्भवती महिलाओं व गंभीर रोगियों को छोड़कर सभी स्वस्थ जनमानस को फाइलेरिया रोधी दवाएं खिलाई जानी हैं। पत्र के अनुसार राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के अधीन पोषण सखी मिशन मैनेजर व ब्लाक मैनेजर सक्रिय हैं व राज्य सरकार के विभिन्न कार्यक्रमों में सहयोग करते हैं। एमडीए राउंड से पहले सभी पोषण सखियां अपने-अपने क्षेत्र में घर-घर जाकर अभियान का प्रचार-प्रसार करेंगी और अभियान के दौरान प्रतिरोधी परिवारों को समझा-बुझाकर दवा खिलाने में टीम का सहयोग करेंगी। मिशन मैनेजर व ब्लाक मैनेजर इन गतिविधियों का पर्यवेक्षण करेंगे। प्रमुख सचिव ने पंचायती राज विभागाध्यक्ष को पत्र लिखकर बीते साल फरवरी व अगस्त राउंड में मिले अपेक्षित सहयोग के लिए सराहा है।

# सरकारी स्कूलों के बच्चों की पढ़ाई और गणना क्षमता में दर्ज हुआ उछाल

## असर की रिपोर्ट में कक्षा तीन के बच्चों के पढ़ने के स्तर में 8.3 फीसद अंक और गणितीय दक्षता में 7 फीसद अंक का सुधार

**पायनियर समाचार सेवा।** लखनऊ

**वर्ष** 2018 में उत्तर प्रदेश के सरकारी स्कूलों में राष्ट्रीय औसत से नीचे रहने वाली बच्चों की पढ़ाई और गणना क्षमता में जबरदस्त उछाल दर्ज किया गया है। हालांकि, निपुण भारत मिशन के प्रभावी क्रियान्वयन और सतत प्रयासों के चलते, 2024 की असर रिपोर्ट में चौंकाने वाले सकारात्मक बदलाव दर्ज किए गए हैं। रिपोर्ट के अनुसार, कक्षा तीन के बच्चों के पढ़ने के स्तर में 8.3 फीसद अंक और गणितीय दक्षता में 7 फीसद अंक का सुधार हुआ है।

देशभर में प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता को मापने और छात्रों की बुनियादी पढ़ने एवं गणना करने की क्षमताओं का आकलन करने वाला स्वतंत्र सर्वेक्षण असर 2024 रिपोर्ट के अनुसार, वर्ष 2018 में जहां परिषदीय प्राथमिक स्कूलों में छात्रों की औसत उपस्थिति 59.9 फीसद थी, लेकिन 2024 में यह बढ़कर 71.4 फीसद तक पहुंच गई, जो एक सकारात्मक संकेत है। इसी तरह, शिक्षकों की उपस्थिति भी 2018 में 85.2 फीसद थी, जो 2024 में 85.5 फीसद तक पहुंच गई है। बच्चों की पढ़ने-लिखने की क्षमता में भी निरंतर सुधार हो रहा है। 2018 में कक्षा तीन के केवल 12.3 फीसद छात्र ही कक्षा दो का पाठ पढ़ने में सक्षम थे, लेकिन 2024 तक यह आंकड़ा बढ़कर 27.9 फीसद हो गया है। इसी तरह, कक्षा पांच के छात्रों की पढ़ने की क्षमता भी 2018 में 36.2 फीसद थी, जो 2024 में 50.5 फीसद तक पहुंच गई। वहीं, कक्षा आठ के छात्रों में यह प्रतिशत 2022 में 62.6 फीसद था, जो 2024 में बढ़कर 67.3 फीसद हो गया। बेसिक शिक्षा राज्यमंत्री संदीप सिंह ने कहा कि पिछले छह वर्षों में हुए इन सुधारों ने उत्तर प्रदेश को शिक्षा के क्षेत्र में देश के अग्रणी राज्यों की कतार में ला खड़ा किया है।

### गुजरात और तमिलनाडु जैसे शीर्ष राज्यों की श्रेणी में शामिल हुआ यूपी

**कक्षा** तीन के बच्चों के पढ़ने का स्तर 8.3 फीसद अंक बढ़ा है, जबकि कक्षा तीन और पांच के बच्चों की अंकगणितीय दक्षता में 7 फीसद अंक की बढ़ोतरी हुई है। वर्ष वर्ष 2018 में कक्षा 3 के बच्चों की पढ़ने की क्षमता का स्तर 12.3 फीसद था, जो 2024 में बढ़कर 24.7 फीसद हो गया है, यानी कुल 15.6 प्रतिशत अंकों की वृद्धि दर्ज की गई है। इतना ही नहीं, गणितीय दक्षता के स्तर में भी बड़ी बढ़ोतरी हुई है। वर्ष 2018 में जो क्षमता 11.2 फीसद थी, वह वर्ष 2024 में बढ़कर 31.6 फीसद तक पहुंच चुका है। इस प्रकार, कुल 20 प्रतिशत अंकों की वृद्धि के साथ उत्तर प्रदेश अब गुजरात और तमिलनाडु जैसे शीर्ष राज्यों की श्रेणी में शामिल हो गया है।

#### राष्ट्रीय औसत से अधिक है शिक्षक उपस्थिति

**वर्ष** 2018 की तुलना में वर्ष 2024 में शिक्षकों की उपस्थिति दर भी बढ़ी है। अब शिक्षकों की उपस्थिति 87.5 फीसद और छात्रों की उपस्थिति दर 75.9 फीसद तक पहुंच गयी है, जो राष्ट्रीय औसत से कहीं अधिक है। इसके अलावा, 14 से 16 वर्ष की आयु के बच्चों के बीच स्मार्टफोन एक्सेस में 15.2 फीसद की वृद्धि दर्ज की गई है।

# विस चुनाव: भाजपा का करें राजतिलक : शाह

## बोले, प्रधानमंत्री मोदी की गारंटी के रूप में महिलाओं के खाते में हर महीने 2,500 रुपये पहुंचने शुरू हो जाएंगे

**पायनियर समाचार सेवा।** नई दिल्ली

रोहिणी में भाजपा प्रत्याशी विजेंद्र गुप्ता के समर्थन में जनसभा के दौराना लोगों का अभिवादन करते केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह।

केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने बृहस्पतिवार को आम आदमी पार्टी के संयोजक अरविंद केजरीवाल पर जमकर निशाना साधा। उन्होंने यमुना नदी के पानी में जहर मिलाने वाले केजरीवाल के आरोप को लेकर पूर्व सीएम की जमकर खिंचाई की।

साथ ही यमुना में डुबकी लगाने को लेकर किए अपने वादे से मुकरने को लेकर भी सवाल पूछा। शाह ने केजरीवाल को सलाह दी कि चुनाव जीतने के लिए झूठ बोलना बंद करें। केंद्रीय मंत्री आप नेता पर हमला बोलते हुए कहा कि केजरीवाल कहते हैं कि भाजपा नेताओं ने ने दिल्ली वालों को परेशान करने के लिए हरियाणा से यमुना नदी के पानी में जहर मिलाया है। शाह ने आप प्रमुचा से सवाल पूछा कि कौन सा जहर मिलाया है, कौन सी लेबोरेटरी में आपने जांच कराई, उसका नाम बताइए।

आप कह रहे हैं कि जहर मिलाया हुआ पानी आपने रोक दिया। यमुना का पानी रुकता है तो गांवों में बाढ़ आ जती है। उन्होंने लोगों से पूछा कि वे बताएं दिल्ली के किसी गांव में बाढ़ आई क्या। अमित शाह बृहस्पतिवार को रोहिणी में भाजपा प्रत्याशी विजेंद्र गुप्ता के समर्थन में जनसभा और शालीमार बाग विस क्षेत्र की भाजपा प्रत्याशी रेखा गुप्ता के समर्थन में रोड शो किया। शाह ने कहा कि आम आदमी पार्टी ने पूदी दिल्ली को कूड़ेदान में तब्दील कर दिया है। केजरीवाल ने कोई वादा पूरा नहीं नहीं किए। ऐसे में 5 फरवरी को दिल्ली वालों के पास केजरीवाल की आप-दा से मुक्त होने का बहुत बड़ा मौका है।

आप-दा को हटाने का मतलब है पिछले 10 सालों के केजरीवाल के भ्रष्टाचार को जवाब देना। शाह ने इलाके मतदाताओं से अपील की वे आप-दा को हटाकर प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में डबल इंजन की सरकार बनाएं। आप नेता ने दावा किया था कि दिल्ली सुंदर बनेगी, कूड़े के पहाड़ खत्म हो जाएंगे, सड़कों को विश्वस्तरीय बनाएंगे और गलियों की साफ-सफाई होगी लेकिन इनमें से एक भी वादा पूरा नहीं किया। इसीलिए मतदाताओं को चाहिए कि वह 5 फरवरी को केजरीवाल और उनकी पार्टी को राजनीतिक वनवास पर भेज कर भाजपा का राजतिलक कर दें। रोहिणी की जनसभा में शाह के पहुंचते ही पूरा पंडाल जय श्री राम, भारत माता की जय व नरेंद्र मोदी जिंदाबाद के नारों से गूंज उठा।

इस अवसर पर शाह ने एक-एक करके केजरीवाल के झूठे वादों को गिनवाया और चुनौती दी कि अगर केजरीवाल ने लोगों के कल्याण के लिए एक भी काम किया हो तो वो बताएं। केजरीवाल ने जितनी भी विकास की परियोजनाएं थी सबका पैसा हड़प लिया और एक भी काम नहीं करवाया। कहा था कि यमुना को साफ करवाकर दिल्ली वालों को उसमें डुबकी लगवांगे। यमुना तो साफ नहीं हुई, लेकिन केजरीवाल ने यमुना साफ करने के लिए केंद्र के पैसों में डुबकी जरूर लगा ली। शिक्षा क्रांति के नाम पर न तो कोई नया स्कूल बनवाया और न ही कोई क्लासरूम।

शिक्षा के नाम पर करोड़ों का भ्रष्टाचार कर लिया। बसों में पैनिक बटन के नाम पर करोड़ों का घोटाला, पानी साफ करने के नाम पर दिल्ली जल बोर्ड का 28400 करोड़ का घोटाला, शीश महल में सजावट और रेनोवेशन के नाम पर 55 करोड़ रुपये का घोटाला किया। ये इतने घोटाले हैं कि अगर गिनने बैठेंगे तो चुनाव खत्म हो जाएगा, इनकी गिनती खत्म नहीं होगी।

उन्होंने भाजपा के संकल्प पत्र का जिक्र करते हुए कहा कि विधान सभा चुनाव के बाद भाजपा की सरकार बनना तय है और सरकार बनते ही विकसित दिल्ली के लिए मोदी की गारंटी के रूप में महिलाओं को हर महीने की 5 तारीख को 2,500 रुपये उनके बैंक खाते में पहुंचने शुरू हो जाएंगे। इसके अलावा 500 रुपये में एलपीजी सिलेंडर, होली-दिवाली पर 1-1 मुफ्त सिलेंडर, 70 साल से अधिक के बुजुर्गों को 10 लाख तक का मुफ्त इलाज, अटल कैंटीन से जेजे क्लस्टर में सिर्फ 5 रुपये में पौष्टिक भोजन उपलब्ध करवाना, ऑटो/टैक्सी/ई-रिक्शा चालकों को 10 लाख रुपये तक का जीवन बीमा, टेक्सटाइल कर्मचारियों को भी 10 लाख तक का जीवन बीमा, 50,000 सरकारी नौकरियां व 20 लाख रोजगार-स्वरोजगार का सृजन, दिल्ली को सौ फीसदी ई-बस सिटी बनाने, 1700 अनधिकृत कॉलोनियों के लोगों को पूर्ण स्वामित्व देने समेत अन्य वादों को लागू करने की प्रक्रिया शुरू कर दी जाएगी। इसके अलावा शाह ने उपस्थित जन समुदाय को यह भी आश्वासन दिया कि वर्तमान में चल रही किसी भी जनकल्याणकारी योजना को बंद नहीं किया जाएगा और सभी योजनाएँ बदस्तूर जारी रहेंगीं।

## सभी सीटों पर हारेगी भाजपा : अखिलेश

**नई दिल्ली।** आप के राष्ट्रीय संयोजक केजरीवाल के साथ समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने गुरुवार को किराड़ी विधानसभा मे मेगा रोड शो किया। अखिलेश ने केजरीवाल को जीत की बधाई देते हुए कहा दिल्ली में एक बार फिर आम आदमी पार्टी की सरकार बनने जा रही है और भाजपा की सभी 70 सीटों पर हार होगी। जिस तरह से आप नेता की अगुआई में आम आदमी पार्टी की सरकार ने शिक्षा-स्वास्थ्य और बिजली-पानी के क्षेत्र में अच्छा काम किया है, उसकी पूरी दुनिया स्टडी करना चाहती है।

इसलिए लोग एक बार फिर आप पर भरोसा कर पार्टी को ऐतिहासिक जीत दिलाएंगे और भाजपा की बेइमानी का सफाई करेंगे। अखिलेश यादव ने आम आदमी पार्टी ने मन बना लिया है कि भाजपा को पटखनी देनी है। आप का चुनाव चिन्ह झाड़ू भाजपा की बेईमानी का सफाया करने जा रहा है। भाजपा और उसकी बेईमानी का भी सफाया होगा। मेरी दिल्ली की जनता से अपील है कि सभी लोग मिलकर भाजपा का सफाया करिए और झाड़ू को वोट दीजिए। अपना एक-एक वोट झाड़ू को जाना चाहिए। आप ने फ्री स्वास्थ्य, शिक्षा, बिजली, पानी में ऐसा काम किया है, जो दुनिया भर में उदाहरण बना है और लोग इस मॉडल की स्टडी करके अपने देशों में लागू करना चाहते हैं। जनता आम आदमी पार्टी की सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओ को खोना नहीं चाहती है। कोई ऐसा नहीं है जो भाजपा को वोट डालकर अपना ही नुकसान कर लें। भाजपा के लोग भी कह रहे हैं कि वह भी आम आदमी पार्टी और अरविंद केजरीवाल की चल रही योजनाओं को बंद नहीं करेंगे। भाजपा वाले जनहित की योजनाओं और विकास से घबराने वाले लोग हैं। इसलिए कोई भी वोट खराब ना हो। सभी वोट झाड़ू को डालकर आम आदमी पार्टी की सरकार बनाने का काम करें।

# भाजपा ने स्टार प्रचारकों को मैदान में झोंका

पूर्वी दिल्ली पहुंचे में भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा गदा उठाते हुए।

**पायनियर समाचार सेवा।** नई दिल्ली

भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष जे पी नड्डा ने बृहस्पतिवार को कहा कि यमुना में प्रदूषण के मुद्दे पर आम आदमी पार्टी के आरोप-प्रत्यारोप ने राष्ट्रीय राजधानी की सरकार की अक्षमता को उजागर कर दिया है। उन्होंने मांग की कि आप के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल को यमुना में जहर मिलाने वाली अपनी टिप्पणी के लिए हरियाणा और दिल्ली के लोगों से माफी मांगनी चाहिए।

नड्डा ने एक्स पर इंफोइनडेटा के एक इन्फोग्राफिक को भी टैग किया, जिसमें दावा किया गया है कि यमुना के दिल्ली में प्रवेश करते ही प्रदूषण बढ़ जाता है।

भाजपा अध्यक्ष ने कहा, यमुना में प्रदूषण को लेकर आप-दा के आरोप-प्रत्यारोप ने इसकी अक्षमता और इसके विफल शासन को उजागर कर दिया है। उन्होंने कहा, जिम्मेदारी लेने की बजाय आप-दा सरकार ने राजनीतिक लाभ के लिए लोगों में डर फैलाना शुरू कर दिया है। अरविंद केजरीवाल को अपने बयान के लिए हरियाणा और दिल्ली की जनता से माफी मांगनी चाहिए।

केजरीवाल सरकार ने पिछले 10 साल से अधिक समय में भ्रष्टाचार, झूठ और खोखले वादों के अलावा कुछ नहीं किया है।

उन्होंने कहा, केंद्र सरकार से 8,500 करोड़ रुपए प्राप्त होने के बावजूद, नदी को साफ करने के लिए कोई सार्थक काम नहीं किया गया।

## हरियाणा के लोगों से माफी मांगे केजरीवाल: नड्डा

## गहलोत ने बिजवासन में आप के उम्मीदवार पर उठाए सवाल

**नई दिल्ली।** भाजपा नेता कैलाश गहलोत ने बिजवासन विधानसभा सीट पर आम आदमी पार्टी के उम्मीदवार चयन पर सवाल उठाते हुए आरोप लगाया कि दिल्ली में सत्तारूढ़ पार्टी की तथाकथित नैतिकता और आदर्श अब पूरी तरह से नीचे की ओर जा रहे हैं। बिजवासन सीट से भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) उम्मीदवार कैलाश गहलोत ने कहा, जिन वादों के साथ आम आदमी पार्टी सत्ता में आई थी, वे अब तक अधूरे हैं। गहलोत ने आरोप लगाते कहा कि सबसे चौंकाने वाली बात यह है कि आप ने सुरेंद्र भारद्वाज को बिजवासन विधानसभा सीट से उम्मीदवार बनाया है, जबकि उनके खिलाफ कई प्राथमिकी दर्ज हैं। सुरेंद्र के खिलाफ कल ही एक नया मामला दर्ज हुआ है। गहलोत ने कहा कि आम आदमी पार्टी ने जनता से किये वादों को पूरा नहीं किया। पार्टी की नैतिकता में कमी दिखाई देने लगी, जिसके बाद उन्होंने पिछले साल 17 नवम्बर को मंत्री पद और आम आदमी पार्टी दोनों से इस्तीफा दे दिया था।

## पंजाब के आप समर्थक सुरक्षा को खतरा : प्रवेश

**नई दिल्ली।** नई दिल्ली सीट से भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी प्रवेश वर्मा ने को आरोप लगाया कि पंजाब से आम आदमी पार्टी के हजारों समर्थक राष्ट्रीय राजधानी में दाखिल हुए हैं और राज्य सरकार के स्टीकरों वाले वाहन इस्तेमाल कर रहे हैं।

उन्होंने पांच फरवरी को होने वाले विधानसभा चुनाव से पहले शहर की सुरक्षा को खतरा पैदा होने की आशंका जताई है। भाजपा नेता ने पंजाब भवन के सामने बुधवार को एक वाहन जब्त होने का हवाला देते हुए संवाददाता सम्मेलन में कहा कि दिल्ली पुलिस को इन वाहनों की जांच करके उनमें बैठे लोगों के ठिकानों का पता लगाना चाहिए। उन्हें आशंका है कि अगले कुछ दिन तक दिल्ली की सुरक्षा को खतरा रहेगा। वह एक निजी वाहन था, जिसपर पंजाब सरकार का स्टीकर लगा हुआ था। वाहन में से शराब, चुनाव सामग्री और आठ लाख रुपए की नकदी मिली। वर्मा ने आम आदमी पार्टी पर पकड़े जाने के बाद झूठ बोलने के आरोप लगाया है तो वहीं आप के राज्यसभा सदस्य संजय सिंह ने कहा कि पंजाब सरकार ने राष्ट्रीय राजधानी में ऐसा कोई वाहन होने की बात से इनकार किया है।

# आरक्षण विरोधी है आप-भाजपा: राहुल गांधी

### ● बादली की चुनावी सभा में केजरीवाल को निशाने पर लिया

**पायनियर समाचार सेवा।** नई दिल्ली

कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने बृहस्पतिवार को भाजपा और दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल पर झूठ बोलने तथा दलित विरोधी होने का आरोप लगाया है।

बादली की एक चुनावी सभा में केजरीवाल को निशाने पर लिया। राहुल गांधी ने कहा, मैं आपको स्पष्ट रूप से बता दूं कि जब केजरीवाल (राजनीति में) आए तो मैंने शुरुआत में उन्हें समझने की कोशिश की। मुझे समझ आया कि केजरीवाल भी नरेन्द्र मोदी की तरह आरक्षण और दलित विरोधी हैं।

उन्होंने आरोप लगाया, मोदी की तरह केजरीवाल भी झूठे हैं। शायद केजरीवाल पीएम से भी ज्यादा चालाक हैं। भाजपा और आप के लोग खोखली बातें करते हैं, दोनों एक पर एक झूठ बोलते हैं, दोनों आरक्षण और दलित विरोधी हैं, दोनों बहुजन भागीदारी नहीं चाहते हैं और दोनों सत्ता की शक्ति बस अपने हाथों में रखना चाहते हैं।

# आप घोटालों से दम तोड़ रही: राजनाथ

विश्वास नगर में भाजपा प्रत्याशी के समर्थन में गृहमंत्री राजनाथ सिंह ने किया प्रचार।

**नई दिल्ली।** केन्द्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने आम आदमी पार्टी पर जमकर हमला बोला। उन्होंने कहा कि जनलोकपाल के मुद्दे पर आम आदमी पार्टी सत्ता में आई थी और आज खुद घोटालों में फंस कर आप सरकार दम तोड़ रही है। ऐसा कोई सगा नहीं जिसको आप-दा ने ठगा नहीं।

यमुना नदी में जहर मिलाने के केजरीवाल के कथित बयान को आड़े हाथों लेते हुए सिंह ने कहा कि भाजपा सरकार ने रेगिस्तान और पहाड़ों तक पानी मुहैया कराने का काम किया लेकिन राष्ट्रीय राजधानी में आप-दा सरकार पानी तक मुहैया नहीं करा पा रही है। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि जिस संवैधानिक व्यवस्था के दम पर देश चलता है, उसका भी मजाक उड़ाने से पीछे नहीं हटे आप संयोजक केजरीवाल। राजनाथ सिंह ने बृहस्पतिवार को दिल्ली कैंट में भाजपा प्रत्याशी भुवन तंवर और विश्वास नगर से पार्टी के उम्मीदवार ओम प्रकाश शर्मा के समर्थन में दो जनसभाओं को संबोधित करते हुए कहा कि राजनेताओं की कथनी और करनी में अंतर होने के कारण जनता के विश्वास का संकट पैदा हुआ और उस संकट को अगर किसी ने चुनौती के रुप में लिया तो वह अकेले भारतीय जनता पार्टी ने स्वीकार हैं। भाजपा ऐसी राजनीतिक पार्टी है जो कहती है उसे करती है। कोई भी एक उदाहरण ऐसा बता दें कि जो हमने कहा उसे पूरा नहीं किया हो तो वह खुद माफी मांगेंगे।

# केजरीवाल मानसिक संतुलन खो बैठे हैं : मुख्यमंत्री हिमंता

**नई दिल्ली।** असम के मुख्यमंत्री हिमंता बिस्वा सरमा ने गुरुवार को दावा किया कि आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने समाजसेवी अन्ना हजारे को धोखा देने के बाद से अपना मानसिक संतुलन खो दिया है। उन्होंने आरोप लगाया कि तिहाड़ जेल में रहने के दौरान केजरीवाल में आपराधिक मानसिकता विकसित हो गई।

करावल नगर में भाजपा उम्मीदवार कपिल शर्मा और अजय महावर के समर्थन में घोंडा के समर्थन में जनसभा को संबोधित करते हुए सरमा ने कहा कि केजरीवाल मौलानाओं को पैसे देने का वादा कर रहे हैं, जबकि भाजपा अल्पसंख्यकों सहित हर भारतीय का उत्थान करने और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने की कोशिश कर रही है।

करावल नगर पहुंचे असम के सीएम हिमंता व साथ में कपिल।

# मालीवाल ने केजरीवाल के आवास के बाहर कूड़ा फेंका

### ● विकासपुरी में सड़कों से कूड़ा उठा मिनी ट्रक में भरकर फिरोजशाह रोड पहुंची गई थी

**पायनियर समाचार सेवा।** नई दिल्ली

आम आदमी पार्टी की राज्यसभा सदस्य स्वाति मालीवाल ने बृहस्पतिवार को पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के घर के बाहर विरोध स्वरूप कूड़ा फेंका जिसके बाद पुलिस ने उन्हें हिरासत में ले लिया। मालीवाल और उनके सहयोगियों ने विकासपुरी में सड़कों से कूड़ा उठाया, उसे तीन मिनी ट्रकों में भरा और फिरोजशाह रोड पर केजरीवाल के घर पहुंचे। उन्होंने वहां जमीन पर कूड़ा फेंका, जिसके बाद महिला पुलिसकर्मियों ने उन्हें रोका और वहां से हटा दिया। केजरीवाल के पांच फिरोजशाह रोड स्थित आवास के पास सैकड़ों महिलाएं हाथों में तख्तियां लिए देखी गईं, जिन पर लिखा था, मुस्कुराइए, आप दिल्ली में हैं। मालीवाल कचरा उठाने वाले तीन ट्रक में से एक में सवार होकर वहां पहुंचीं। इससे पहले उन्होंने सोशल मीडिया मंच एक्स पर एक वीडियो साझा किया था जिसमें वह और अन्य लोग विकासपुरी से कूड़ा इकट्ठा करते दिख रहे हैं। उन्होंने पोस्ट में लिखा, विकासपुरी में वर्षों से सड़कों पर कूड़े के ढेर लगे हुए हैं। लोग बहुत गुस्से में हैं। वे यह सारा कूड़ा इकट्ठा करके केजरीवाल के घर पर फेंकने जा रहे हैं। उन्होंने कहा, पूरी दिल्ली की हालत खराब हो गई है। दिल्ली वाले रोज जो गंदगी और बदबू झेलते हैं, आज वही केजरीवाल को झेलना पड़ेगा जनता आ रही है, केजरीवाल जी, डरो मत। घटना के मद्देनजर केजरीवाल के आवास के बाहर सुरक्षा बढ़ा दी गई। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने कहा, हमने कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए अवरोधक लगा दिए हैं और अतिरिक्त पुलिसकर्मियों को तैनात किया है।

# युवाओं के बिना संभव नहीं है विकसित भारत: जयशंकर

### ● विदेश मंत्री ने डीयू के हंसराज कॉलेज में किया युवाओं से संवाद

**पायनियर समाचार सेवा।** नई दिल्ली

हंसराज कॉलेज में छात्रों के साथ संवाद करते विदेश मंत्री जयशंकर व अन्य।

भारत के विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर ने कहा कि विकसित भारत के लिए युवाओं की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है, युवाओं के बिना विकसित भारत संभव नहीं है।

विकसित भारत का संकल्प युवाओं के भविष्य से जुड़ा हुआ है और इसकी सिद्धि के लिए उनकी सक्रिय भूमिका अनिवार्य है। डॉ. एस. जयशंकर हंसराज कॉलेज में 'विकसित भारत के लिए युवा' विषय पर आयोजित एक इंटरेक्शन कार्यक्रम में युवाओं से संवाद कर रहे थे। डीयू कुलपति प्रो. योगेश सिंह ने डॉ. एस. जयशंकर का स्वागत करते हुए कहा कि डॉ. जयशंकर दिल्ली विश्वविद्यालय के सम्मानित पूर्व विद्यार्थी हैं। ऐसे कर्मयोगी पर डीयू को गर्व है। जयशंकर ने विकसित भारत में युवाओं की भूमिका पर डोर देते हुए कहा कि तकनीक आधारित इस युग में युवा ही तकनीक के सर्वाधिक करीब हैं । विदेश मंत्री ने कहा कि दिल्ली देश की राजधानी है और दुनिया भर से आने वाले लोग दिल्ली को देखकर भारत के सम्बन्ध में अपनी राय बनाते हैं, इसलिए विकसित भारत हेतु विकसित दिल्ली आवश्यक है। दिल्ली में लोगों को जरूरी सुविधाएं मिले, अधिक से अधिक कॉलेज हों, अच्छी सड़कें हों, पानी उपलब्ध हो और एक आदर्श शहर के रूप में यह विकसित हो इस दिशा में काम करना बेहद आवश्यक है। कुलपति प्रो. योगेश सिंह ने अपने विश्वविद्यालय के पूर्व विद्यार्थी विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर का स्वागत करते हुए कहा कि कुलपति ने विद्यार्थियों से विकसित भारत के संकल्प को साकार करने में अपनी भूमिका निभाने का भी आह्वान किया।

युवाओं से चर्चा कार्यक्रम में संवादी के रूप में एसओएल की निदेशक प्रो. पायल मागो ने विदेश मंत्री के दिल्ली विश्वविद्यालय में विद्यार्थी जीवन के उनके अनुभव, उनकी सोच, युवाओं को सन्देश, देश की सोच को दिशा देने में उनकी भूमिका आदि से संबंधित अनेक बिंदुओं पर विस्तार से चर्चा करते हुए अनेक रोचक और महत्वपूर्ण प्रश्नों के साथ चर्चा को आगे बढ़ाया।

उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दृष्टिकोण, विकसित भारत और युवा से सम्बंधित विभिन्न बिंदु पर भी चर्चा की। विद्यार्थियों के साथ प्रश्नों की कड़ी में विदेश मंत्री ने खुलकर सबके प्रश्नों के उत्तर दिये।

कार्यक्रम के दौरान कुलपति प्रो. योगेश सिंह, डीन ऑफ कॉलेजे प्रो. बलराम पाणी, दक्षिणी परिसर के निदेशक प्रो. श्री प्रकाश सिंह, डीयू एसओएल की निदेशक प्रो. पायल मागो उप प्राचार्या प्रो. विजय रानी राजपाल एवं कार्यक्रम संयोजिका अलका कक्कड सहित अनेकों शिक्षक और विद्यार्थी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन एसोसिएट प्रोफेसर माधवी मोनी ने किया।

## चोरी के 200 मोबाइल फोन जब्त, एक गिरफ्तार

**नई दिल्ली।** वजीराबाद इलाके में एक व्यक्ति को गिरफ्तार कर उसके कब्जे से करीब दो करोड़ रुपए मूल्य के चोरी के 200 मोबाइल फोन बरामद किए गए हैं। उसने बताया कि अपराध शाखा की टीम ने वजीराबाद इलाके में चोरी के मोबाइल फोन की खेप पकड़ी। इन मोबाइल फोन को तस्करी के जरिए नेपाल, बांग्लादेश और श्रीलंका भेजा जाना था। उसने बताया कि इन मामले में मनीष यादव नामक एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया गया है। बरामद मोबाइल फोन में 39 एप्पल आईफोन, 52 सैमसंग, 45 वनप्लस, 12 गूगल पिक्सल फोन, 28 ओप्पो और 19 वीवो स्मार्टफोन शामिल हैं। इनमें से 18 फोन शहर के विभिन्न थानों में दर्ज प्राथमिकी से जुड़े हैं। पुलिस ने बताया कि शेष मोबाइल फोन के मालिकों की पहचान करने के प्रयास किए जा रहे हैं।

# मतदान के दिन सभी 700 बाजार बंद रहेंगे : सीटीआई

**पायनियर समाचार सेवा।** नई दिल्ली

चैंबर ऑफ ट्रेड एंड इंडस्ट्री ने बृहस्पतिवार को कहा कि विधानसभा चुनाव मतदान के दिन पांच फरवरी को राष्ट्रीय राजधानी में सभी 700 बाजार बंद रहेंगे।

सीटीआई के अध्यक्ष बृजेश गोयल ने कहा कि व्यापारियों को चुनाव आयोग और श्रम विभाग के आदेशों का अनुपालन सुनिश्चित करना चाहिए। सीटीआई अध्यक्ष ने कहा कि कुछ मामलों में खुदरा क्षेत्र के दुकानदार मतदान करने के बाद शाम को अपनी दुकानें खोल सकते हैं। हालांकि, गोयल ने कहा कि यदि कोई दुकान या कारखाना खोला जाता है तो कर्मचारियों को सवेतन अवकाश दिया जाना चाहिए और वेतन में कोई कटौती नहीं की जानी चाहिए। सीटीआई ने सभी बाजार संघों और व्यावसायिक प्रतिष्ठानों को पांच फरवरी को अपनी दुकानें बंद रखने का निर्देश दिया। औद्योगिक क्षेत्रों में भी अवकाश रहेगा। सीटीआई महासचिव गुरमीत अरोड़ा ने इस बात पर जोर दिया कि दिल्ली सरकार ने पहले ही निर्देश जारी कर दिया है कि दुकानों, होटल, रेस्तरां, रिसॉर्ट और औद्योगिक इकाइयों सहित सभी व्यावसायिक प्रतिष्ठानों को मतदान के दिन कर्मचारियों को बिना किसी वेतन कटौती के छुट्टी देनी होगी। श्रम विभाग ने एक आदेश भी जारी किया है, जिसमें यह सुनिश्चित किया गया है कि किसी भी पेशे, व्यापार या औद्योगिक उपक्रम में लगे प्रत्एक कर्मचारी को मतदान के लिए अवकाश का अधिकार है।

# किन्नर अखाड़ा ने बनाए पांच महामंडलेश्वर और चार श्रीमहंत

## जूना अखाड़ा के संरक्षक महंत हरि गिरि पहुंचे किन्नर अखाड़ा, दिया आशीर्वाद

**महाकुंभ नगर।** किन्नर अखाड़ा का विस्तार महाकुंभ प्रयागराज में लगातार किया जा रहा है। किन्नर अखाड़ा के आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी डा लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी ने गुरुवार को चार महामंडलेश्वर और चार श्रीमहंत बनाए। सभी महामंडलेश्वर और श्रीमहंत को इसके पूर्व पिण्ड दान और संन्यास दीक्षा संगम पर विधि विधान से कराया गया। इसके बाद किन्नर अखाड़ा के शिविर में किन्नर अखाड़ा के आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी डा लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी जूना अखाड़ा के महामंडलेश्वर गर्गाचार्य मुचकुन्द पीठाधीश्वर स्वामी महेन्द्रानंद गिरि और जूना अखाड़ा की महामंडलेश्वर स्वामी जय अम्बा नंद गिरि सहित किन्नर अखाड़ा के सभी संत महंत पट्टाभिषेक कार्यक्रम में शामिल हुए। किन्नर अखाड़ा ने आज जिनको महामंडलेश्वर बनाया है उसमें महामंडलेश्वर शंकरानन्द गिरी महाराष्ट्र महामंडलेश्वर स्वरूपा भारती राजस्थान महामंडलेश्वर यशोधा नंद गिरी और महामंडलेश्वर नारायणी नंद गिरी पुणे और महामंडलेश्वर सतीनंद गिरी शामिल हैं जबकि भैरवी नंद गिरी दिल्ली सरस्वती नंद गिरी दिव्यानी नंद गिरी दिल्ली और हरिहर नंद गिरी किशोर दिलीप पटेल श्रीमहंत बनाए गए हैं। इस दौरान किन्नर अखाड़ा की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष महामंडलेश्वर स्वामी पार्वती नंद गिरी महामंडलेश्वर मनिकंडन किन्नर अखाड़ा की प्रदेश अध्यक्ष महामंडलेश्वर स्वामी कौशल्यानंद गिरि महामंडलेश्वर स्वामी कल्याणीनंद गिरि महामंडलेश्वर पवित्रा नंद गिरी महामंडलेश्वर ऋषिकेश नंद गिरी श्रीमहंत धैर्य राज नंद गिरी सहित अन्य पदाधिकारी मौजूद थे। श्रीपंच दशनाम जूना अखाड़ा के संरक्षक और अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री महंत हरि गिरि आज महाकुंभ के सेक्टर 16 स्थित किन्नर अखाड़ा पहुंचे। उन्होंने किन्नर अखाड़ा की आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी डा लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी सहित सभी को आशीर्वाद दिया। इस दौरान उन्होंने सभी का कुशलक्षेम पूछा। जूना अखाड़ा के संरक्षक और किन्नर अखाड़ा की आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी डा लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी ने महाकुंभ की तैयारियों सहित अन्य पर विस्तार से वार्ता किया। इस दौरान महामंडलेश्वर स्वामी वामदेव महराज सहित अन्य लोग थे।

## लाखों तीर्थयात्रियों के लिए चिकित्सा हुई सुनिश्चित

**प्रयागराज।** समग्र मौखिक स्वास्थ्य और कल्याण को बेहतर बनाएगी। देश के नंबर एक आयुर्वेदिक टूथ पेस्ट डाबर रेड पेस्ट ने रिलायंस इंडिया लिमिटेड के सहयोग से महाकुंभ मेले में आने वाले भक्तों के लिए मुफ्त दंत जांच प्रदान करने के लिए एक विशेष पहल शुरू की है। प्रयागराज में रिलायंस स्टोर्स में आयोजित शिविरों का उद्देश्य इस आध्यात्मिक मण्डली में भाग लेने वाले लाखों तीर्थयात्रियों के लिए दंत चिकित्सा देखभाल सुनिश्चित करना है। डाबर इंडिया लिमिटेड के ओरल केयर मार्केटिंग हेड प्रशांत अग्रवाल ने कहा डाबर में उपभोक्ताओं के साथ गहरे और सार्थक संबंध बनाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। जहां हम उन्हें केवल उत्पाद ही नहीं बल्कि विशेषज्ञ सलाह और देखभाल भी प्रदान करते हैं।

# डेयरी इकाइयों की स्थापना को लेकर किया गया चयन

**सोनभद्र।** जिलाधिकारी बी0एन0 सिंह के निर्देशन में मुख्य विकास अधिकारी जागृति अवस्थी के देख-रेख में कलेक्ट्रेट सभागार में नन्द बाबा दुग्ध मिशन योजनान्तर्गत मुख्यमंत्री स्वदेशी गौ-संवर्धन योजना के तहत जनपद के 24 पात्र लाभार्थियों का चयन ई-लाटरी के माध्यम से किया गया। इस योजना को जनपद में सकुशल व पारदर्शिता के लिए जिलाधिकारी की अध्यक्षता में जनपद स्तरीय समिति का गठन किया है। योजना ईकाई की लागत 2 लाख निर्धारित है, जिसमें 80 हजार रूपये पात्र लाभार्थी को अनुदान देने का प्राविधान किया गया है। नन्द बाबा दुग्ध मिशन के अन्तर्गत जनपद में स्वदेशी गोवंश को बढ़ावा देने के लिए कुल 24 इकाईयों का स्थापना कर पात्र लाभार्थियों को आच्छादित करने का लक्ष्य निर्धारित हैं। जिसके क्रम में कुल 40 आवेदक द्वारा आवेदन किया गया था, जिसके सापेक्ष आज ई-लाटरी के माध्यम से पात्र 12 महिला व 12 पुरूष लाभार्थियों का चयन किया गया है। इस योजना के तहत 06 महिलाओं व 10 पुरूषों आवेदकों को प्रतीक्षा सूची में रखा गया है, चयनित आवेदकों में किसी प्रकार की कमी या निर्धारित समय में उपस्थित न होने की स्थिति में प्रतीक्षा सूची में से चयनित करते हुए प्रक्रिया चयन प्रक्रिया को सम्पन्न कराया जायेगा। इस मौके पर पशु मुख्य चिकित्साधिकरी डॉ0 अजय कुमार मिश्रा सहित समिति के सदस्य उपस्थित रहें।

**नई तकनीक को लेकर साझेदारी:**कानपुर। प्योर ईवी ने फ्रांस की प्रमुख क्लाइमेट टेक कंपनी बीई एनर्जी के साथ एक रणनीतिक साझेदारी की घोषणा की है। बैटरी रिकंडीशनिंग में वैश्विक तौर पर अग्रणी बीई एनर्जी इस साझेदारी के साथ भारत में अपने कामकाज की शुरूआत करने जा रही है।इस सहयोग से ईवी मालिकों के लिए दीर्घकालिक लागत बचत संभव होगीए क्योंकि रिकंडीशनिंगध्कायाकल्प प्रक्रिया नई बैटरियों की आवश्यकता को कम करेगी, जिससे कुल लागत कम होगी। सहयोग पर टिप्पणी करते हुएए प्योर ईवी के फाउंडर और एमडी डॉण् निशांत डोंगरी ने कहाए श्बीई एनर्जी के साथ हमारी साझेदारी प्योर ईवी के विजन के साथ पूरी तरह मेल खाती है। बीई एनर्जी के फाउंडर और ग्लोबल प्रेसिडेंट बर्ट्रेंड कॉस्टे ने कहा,साझेदारी को लेकर बहुत उत्साहित हैं।

## यात्रियों की सुविधा के लिए 150 मेला स्पेशल गाड़ियों का किया संचालन

**प्रयागराज।** महाकुंभ में रेल प्रशासन द्वारा श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए सुरक्षा आश्रय आसान टिकट वितरण एवं बड़ी संख्या में गाड़ियों की व्यवस्था की गयी है। महाकुंभ में आए श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए बुधवार को 7 बजे तक 150 गाड़ियाँ चलायी गयी। जिसके अंतर्गत उत्तर मध्य रेलवे के प्रयागराज जंक्शन प्रयागराज छिवकी नैनी जंक्शन एवं सूबेदारगंज रेलवे स्टेशन से सौ गाड़ियाँ एवं प्रयागराज परिक्षेत्र के उत्तर रेलवे के प्रयाग स्टेशन से 19 फाफामऊ स्टेशन से 03 तथा पूर्वोत्तर रेलवे के प्ररयाग्राज रामबाग स्टेशन से 07 सहित झूसी स्टेशन से 21 गाड़ियों का संचालन भी किया गया। उत्तर मध्य रेलवे के प्रयागराज जंक्शन प्रयागराज छिवकी नैनी जंक्शन एवं सूबेदारगंज रेलवे स्टेशन से 05 विस्तारित गाड़ियाँ 05 रिंगरेल 03 लंबी दूरी की गाड़ियाँ एवं गैर टाइम टेबल की 69 गाड़ियाँ चलायी गई। इसी क्रम में सुबह 8 बजे के आस पास श्रद्धालुओं की संख्या जैसे ही बढ़नी शुरू हुई उत्तर मध्य रेलवे ने खुसरोबाग में स्थित होल्डिंग पॉइंट को ओपरेट कर दिया।

# सुरक्षित ड्राइविंग कर जीवन की करें रक्षा-आरपी सिंह

**सोनभद्र।** हिण्डालको रेनूसागर के यूनिट हेड आरपी सिंह के दिशा निर्देशन में सड़क सुरक्षा अभियान के अन्तर्गत आवासीय परिसर स्थित आदित्य बिड़ला इण्टरमीएट कॉलेज, रेणुसागर में सड़क सुरक्षा जागरूकता अभियान का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि रेनूसागर पावर डिवीजन के यूनिट हेड आर पी सिंह ने झंडी दिखाकर सड़क सुरक्षा जागरूकता रैली को रवाना किया। हिण्डालको रेनुसागर के यूनिट हेड आरपी सिंह ने सड़क सुरक्षा के नियमों की विस्तृत जानकारी देते हुये कहा कि जीवन अमूल्य है, सुरक्षित ड्राईविंग कर अपने एवं दूसरे के जीवन की रक्षा करे। हमारा रेनूसागर प्रबंधन सड़क दुर्घटनाओं के प्रति सदैव जागरूक हैं हमारा प्रयास है कि आप सभी लोगों में जागरूकता पैदा करना। उन्होंने बताया कि ड्राईविंग करते समय हेलमेट पहनने व सीट बेल्ट बॉधने को सुरक्षित सतर्क ड्राईविंग के लिए अनिवार्य बताया। यूनिट हेड ने कहा 18 वर्ष से कम उम्र के छात्र/छात्राओं को वाहन न चलाने की नसीहत देते हुए कहा कि वगैर ड्राईविंग लाईसेन्स से चलाना गैरकानूनी है। वाहन चलाते समय मोबाइल फोन या अन्य गैजेट का उपयोग न करें जो ध्यान भटका सकते हैं। इस अवसर पर हेड मानव संसाधन शैलेश विक्रम सिंह जगदीश पात्रा नवींद्र पाठक अरविंद सिंह प्रणव सोनी समीर आनन्द कर्नल जयदीप मिश्रा मृदुल भारद्वाज एवं हिण्डालको रेनुसागर के सभी विभागाध्यक्ष प्रधानाचार्य सुनील कुमार सिंह बृजेश कुमार सिंह प्रधानाध्यापिका पूनम वार्ष्णेय सहित छात्र छात्राएं शिक्षकों एवं शिक्षणेत्तर कर्मचारियों ने भाग लिया। धन्यवाद ज्ञापन मुकेश श्रीवास्तव द्वारा किया गया।

# आईएएस प्रशिक्षुओं के लिए आयोजित हुआ अध्ययन दौरा

सोनभद्र। एनटीपीसी विंध्याचल ने 2024 बैच के आईएएस प्रशिक्षुओं के लिए दो दिवसीय शीतकालीन अध्ययन दौरे का आयोजन किया। इस दौरान प्रशिक्षुओं को पावर सेक्टर, संचालन में उत्कृष्टता और पर्यावरण के प्रति स्थिरता आधारित पहलों पर गहरे अनुभव प्राप्त हुए। दौरे में स्टेज-111 और कंट्रोल रूम की यात्रा शामिल थी, जहां प्रशिक्षुओं ने पावर जनरेशन प्रक्रियाओं को करीब से समझा। राम सेवक जायसवाल द्वारा स्टेशन के प्रदर्शन, प्रमुख उपलब्धियों और पर्यावरणीय पहलुओं पर एक महत्वपूर्ण प्रस्तुति दी, जिसमें खास तौर पर कार्बन-टू-मिथेनॉल प्रोजेक्ट को बताया गया। यह प्रोजेक्ट स्थायी ऊर्जा समाधान की दिशा में एक बड़ा कदम है। इस कार्यक्रम में 18 सदस्यीय आईएएस प्रशिक्षु समूह ने वरिष्ठ नेतृत्व टीम के साथ संवाद भी किया, जिसमें ई सत्य फणि कुमार, कार्यकारी निदेशक संजीब कुमार साहा प्रमुख रूप से शामिल थे। साथ ही, कामना शर्मा, उप महाप्रबंधक ने स्टेशन की मानव संसाधन विकास, नेतृत्व प्रशिक्षण और सामुदायिक योगदान की पहल पर प्रकाश डाला, जिसमें बालिका सशक्तिकरण अभियान का विशेष उल्लेख किया गया। इसके अलावा स्टेशन के संचालन, मानव संसाधन और सीएसआर कार्यों पर एक कॉर्पोरेट फिल्म भी दिखाई गई, जिसने स्टेशन की विविध पहलों का एक व्यापक अवलोकन प्रस्तुत किया। आईएएस प्रशिक्षुओं ने अध्ययन दौरे के समुचित आयोजन और गहन अनुभव के लिए सराहना किया। आभार स्वरूप, उन्होंने कार्यकारी निदेशक ई सत्य फणि कुमार को स्मृति चिह्न भेंट किया। कार्यक्रम को आशीष कुमार अग्रवाल पुनीत कुमार अजय कुमार मीना वरिष्ठ प्रबंधक और पंकज कुमार उप-प्रबंधक द्वारा प्रभावी ढंग से समन्वित किया गया।

## उद्यमियों को किया गया सम्मानित

वाराणसी। कौशल विकास और उद्यमशीलता मंत्रालय के राज्य मंत्री जयन्त चौधरी की उपस्थिति में कौशल भवन में आयोजित एक विशेष कार्यक्रम में स्किल ईकोसिस्टम से भारत भर के 100 प्रतिष्ठित उद्यमियों की उपलब्धियों का उत्सव मनाया गया। भारत सरकार द्वारा आमंत्रित इन उद्यमियों को गणतंत्र दिवस परेड में विशेष अतिथि के रूप में सम्मानित भी किया गया। जिसमें स्किल इंडिया मिशन के तहत राष्ट्र के विकास और इनोवेशन को आगे बढ़ाने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका पहचानी गई। दावोस में वर्ल्ड ईकोनोमिक फोरम से लौटने के बाद जयन्त चौधरी ने ग्लोबल बिजनेस लीडरों के साथ हुई बातचीत से मिली सोच साझा की। उन्होंने कहाए ष्भारत के स्किल्ड वर्कफोर्स को वैश्विक स्तर पर बड़ी पहचान मिल रही हैए साथ ही हमारे टैलेन्ट पूल की व्यापक रूप से सराहना की जा रही है। ग्लोबल स्किल कैपिटल के रूप में हमारा उभरना एक्सीलेन्स के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का प्रमाण है।ष् दावोस में हुई चर्चा सस्टेनेबिलिटीए आर्टिफिशियल इन्टेलीजेन्स जैसी उभरती टेक्नोलॉजी और महिलाओं के नेतृत्व वाले विकास पर ध्यान केंद्रित करने पर आधारित थी।

# निर्धारित लक्ष्य को समय सीमा के अन्दर कराया जाये पूर्ण-डीएम

सोनभद्र। जिलाधिकारी बी0एन0 सिंह ने कैम्प कार्यालय पर नवीन व्यवस्था अन्तर्गत सी0एम0 डैशबोर्ड के माध्यम से विकास कार्यों की समीक्षा की। उन्होंने कहा कि जिन विभागों को शासन द्वारा लक्ष्य निर्धारित किया गया है, को शत-प्रतिशत पूरा करते हुए करते हुए ए ग्रेड में लाना सुनिश्चित किया जाये। जिलाधिकारी ने महत्वपूर्ण योजनाओं, परियोजनाओं, सेवाओं की सम्बन्धित अधिकारियों से सी0एम0 डैशबोर्ड पर उपलब्ध सूचनाओं के आधार पर बारी-बारी से समीक्षा की। उन्होंने सम्बन्धित अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि लाभार्थीपरक योजनाओं से पात्र लोगों को लाभान्वित किया जाये, निर्माण कार्य को निर्धारित समय में पूरा किया जाये, निर्धारित लक्ष्य के अनुसार गुणवत्ता के साथ अधूरे कार्यों को पूर्ण किया जाये, अन्यथा की स्थिति में जिस स्तर से कमी पायी जायेगी उनके खिलाफकड़ी कार्यवाही करते हुए उच्च स्तर पर पत्राचार भी किया जायेगा, जिसकी जिम्मेदारी सम्बन्धित कार्यालयाध्यक्षों की होगी। समीक्षा बैठक में अपर जिलाधिकारी नमामि गंगे रोहित यादव जिला अर्थ एवं संख्याधिकारी संतपाल बीएसए अधिकारी मुकुल देव पाण्डेय डीपीआरओं नमिता शरण, प्रभारी जिला सूचना अधिकारी सुधांशु शेखर शर्मा जिला समाज कल्याण अधिकारी रमाशंकर यादव सहित अन्य सम्बन्धित उपस्थित रहें।

## महाकुंभ मेले से चित्रकूट आये श्रद्धालुओं को उपलब्ध कराये बेहतर सेवाएं-डीएम

चित्रकूट।जिलाधिकारी शिवशरणप्पा जीएन, पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह द्वारा मौनी अमावस्या व महाकुंभ मेला-2025 प्रयागराज को देखते हुए सकुशल संपन्न कराने के लिए बेडीपुलिया, रामघाट, बरहा के हनुमान मंदिर, यूपीटी तिराहा समेत सभी धार्मिक स्थलों पर लगातार भ्रमणशील होकर श्रद्धालुओं को लेकर की गई व्यवस्थाओं का जायजा लिया। इस दौरान डीएम ने अधिकारियों को निर्देश दिये कि श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की समस्या न होने पाए। निरीक्षण के दौरान डीएम ने सुरक्षा में लगे सुरक्षा कर्मियों को निर्देशित करते हुए कि मेला को सकुशल संपन्न करना हम सभी का दायित्व है। उन्होंने श्रद्धालुओं से भी अपील किया कि आप लोगों की सहयोग की अपेक्षा रहेगी। जिससे कि मेला को सकुशल संपन्न कराया जा सके। उन्होंने सेक्टर मजिस्ट्रेट व जोनल मजिस्ट्रेट को भी निर्देशित किया कि भीड़ इकट्ठी ना होने पाए। उनके गंतव्य तक पहुंचाना हम सभी का दायित्व है। कहा कि श्रद्धालु जनपद से एक अच्छा संदेश लेकर जाएं। जिलाधिकारी ने अधिशाषी अभियंता सिंचाई विभाग को निर्देशित किया बैरिकेटिंग को टाइट रखें। जिससे कि नाविक किनारे पर न आ सके। श्रद्धालुओं को स्नान करने में परेशानी न हो। उन्होंने अधिशासी अधिकारी कर्वी को निर्देशित किया कि रामघाट पर साफसफाई व्यवस्था सुनिश्चित करे। उन्होंने नविको को भी निर्देशित किया कि कोई भी श्रद्धालु से अतिरिक्त पैसा नहीं लेंगे। जिलाधिकारी ने उप जिलाधिकारी व पुलिस क्षेत्राधिकारी कर्वी को निर्देशित किया कि निर्मोही अखाड़ा से फूड प्लाजा तक जो रोड़ पर अतिक्रमण किए हैं उनको नोटिस जारी करें। उन्होंने फूड प्लाजा के पास विकास प्राधिकरण की खाली पडी जमीन के लिए कहा कि लेखपाल से नक्शा लेकर निरीक्षण करें। जिलाधिकारी ने सीसी टीवी कैमरा का भी निरीक्षण किया एवं निर्देशित किया कि यह संचालित रहनी चाहिए।

# शिविरों में मां सीता रसोई की ओर से चल रहा भण्डारा

**महाकुंभ नगर।** महाकुंभ में देश विदेश के बड़ी संख्या में साधु संतों का कल्पवास हो रहा है। इसमें मां सीता रसोई का संचालन करने वालीं श्रीमहंत ज्ञान दास महाराज हनुमान गढी अयोध्या की सदप्रेरणा से संकटमोचन सेना महिला प्रकोष्ठ पंजाब की अध्यक्ष प्रख्यात समाजसेवी मनप्रीत कौर लुधियाना उनकी सेवा में लगी हैं। वह महाकुंभ में अपनी टीम के साथ साधु संतों और स्नानार्थियों की भण्डारों से सेवा कर रही है?? वह अलग अलग शिविरों में जाकर मां सीता रसोई चला रही है। वह प्रतिदिन 15 से 20 हजार से ज्यादा साधु संतों और स्नानार्थियों को भोजन प्रसाद उपलब्ध करा रही हैं। आचार्य अंशुल पाराशर ने बताया कि महाकुंभ के सेक्टर 18 स्थित हरियाणा के चर खी दादरी आश्रम के पीठाधीश्वर दंडी स्वामी ब्रह्माश्रम महराज के शिविर में वरिष्ठ समाजसेवी मनप्रीत कौर मां सीता रसोई के माध्यम से अन्नक्षेत्र चलाकर संतों और स्नानार्थियों की सेवा कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि सेक्टर 20 में स्थित अटल अखाड़े में पहुंची और साधु संतों को भोजन प्रसाद और दक्षिणा आदि वितरित की। संकट मोचन सेना महिला प्रकोष्ठ पंजाब की अध्यक्ष प्रख्यात समाजसेवी मनप्रीत कौर ने कहा कि वह कई वर्षों से अयोध्या और वृंदावन में सीता की रसोई चला रही हैं। जिनके माध्यम से वह धार्मिक स्थलों पर जा जाकर इसी तरह साधु संतों और निर्धनों निराश्रितों की सेवा करती हैं।उनका प्रयास रहता है कि कोई भी व्यक्ति भूखा न सोए। उन्होंने बताया कि समाजसेवा करने से उन्हें बहुत संतुष्टि मिलती है। इसीलिए उनकी पूरी कोशिश रहती है कि वह अधिक से अधिक लोगों की अन्न से सेवा कर सकें। प्रख्यात समाजसेवी मनप्रीत कौर ने बताया कि सीता रसोई की ओर से महाकुंभ में महाशिवरात्रि तक अन्नसेवा यथावत चलती रहेगी। उन्होंने बताया कि गुरुवार की दोपहर 12 बजे से बड़ी संख्या में संतों स्नानार्थियों का विशाल भंडारा सेक्टर 19 मुक्ति मार्ग बावला बाबा के आश्रम सानिध्य में धर्म सम्राट ज्ञान दास महाराज संजय दास महाराज हेमंत दास महाराज तुलसी माता फ्रांस से शिवम भाई समीर भाई की मौजूदगी में होगा।

# महाकुंभ जाने वाले श्रद्धालुओं के रुकने की ली जानकारी

**सोनभद्र।** जिलाधिकारी बी0एन0 सिह ने बुधवार को आदर्श इण्टर कालेज राबर्ट्सगंज में रात्रि में महांकुंभ जा रहे श्रद्धालुओं को रहने की स्थिति का जायजा लिया। बृहस्पतिवर की शाम में महाकुंभ प्रयागराज जा रहे श्रद्धालुओं को रात्रि विश्राम करने व जाम की समस्या से राहत दिलाने के मकसद से जनपद के विभिन्न इण्टर कालेज, महाविद्यालय व तकनीकी संस्थान में रहने की व्यवस्था के साथ ही जरूरी सहयोग करने के लिए सम्बन्धित उप जिलाधिकारी को निर्देशित किया गया था, ताकि श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की कठिनाइयों का सामना न करना पड़ें। इसी निर्देश के क्रम में सम्बन्धित उप जिलाधिकारी अपने क्षेत्र में भ्रमण कर जो श्रद्धालु जिस रूट पर मिलें, नजदीक के विद्यालयों में रात्रि विश्राम कराने के साथ ही सहयोग भी किया गया। इसी के मद्देनजर जिलाधिकारी ने आदर्श इण्टर कालेज राबट्र्सगंज में रात्रि विश्राम के लिए रूके श्रद्धालुओं के जानकारी के लिए पहुंचकर स्थिति का जायजा लिया। मौके पर मौजूद अध्यापक से जानकारी लेने पर बताया गया कि सुबह 7 से 8 बजे तक श्रद्धालु महाकुंभ प्रयागराज के लिए रवाना हो चुके हैं और रात्रि विश्राम के समय उन्हें किसी प्रकार की कोई अव्यवस्था का सामना नहीं करना पड़ा।

## श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की असुविधा नहीं होनी चाहिए:बिंद



चंदौली । डीडीयू जंक्शन पर महाकुंभ में स्नान करने वाले श्रद्धालुओं की भारी भीड़ देखकर भदोही सांसद डॉ विनोद बिंद डीआरएम डीडीयू से बात की। इस दौरान उन्होंने डीआरएम से कहा कि जक्शन पर भारी संख्या में श्रद्धालु मौजूद हैं। श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की असुविधा न हो इसका पूरा ख्याल रखा जाए। दिल्ली इलेक्शन और बजट सत्र में शामिल होने के लिए भदोही सांसद डॉ विनोद बिंद बुधवार की रात ट्रेन पकड़ने के लिए डीडीयू जंक्शन पहुंचे। इस दौरान उन्होंने महाकुंभ के स्नानार्थियों की भारी भीड़ प्लेटफॉर्म समेत रेलवे सर्कुलेटिंग एरिया में देखी। भीड़ इतनी ज्यादा थी तो प्लेटफार्म पर चलने में भी काफी दिक्कत हो रही थी। ऐसे में डॉक्टर विनोद बिंद ने मंडल रेल प्रबंधक डीडीयू से टेलिफोनिक वार्ता की। उन्होंने डीडीयू जंक्शन पर मौजूद श्रद्धालुओं की भारी भीड़ की सुविधाओं के बारे में भी बात की। इसी के साथ ही उन्होंने मंडल रेल प्रबंधक को निर्देशित किया कि महाकुंभ में शामिल होने वाले श्रद्धालुओं को किसी भी प्रकार की दिक्कत नहीं होनी चाहिए। श्रद्धालुओं के ठहरने के साथी उनके आने.जाने के दौरान उनकी सुरक्षा का भी विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है

# डीएम ने श्रद्धालुओं के लिए व्यवस्थाओं का लिया जायजा




**अंबेडकर नगर।** जिलाधिकारी अविनाश सिंह ने महाकुम्भ प्रयागराज से मौनी अमावस्या स्नान कर वापस आ रहे श्रद्धालुओं के सुरक्षित एवं सुगम यातायात एवं आवागमनए भोजन और जलपान आदि व्यवस्थाओं को सुगमता के साथ उपलब्धता सुनिश्चित करने के दृष्टिगत जनपद के विभिन्न सीमाओं के मार्गों यथा पूर्वांचल एक्सप्रेसवे ;दोस्तपुरद्धए खंडौरा जलालपुर आदि का निरीक्षण करते हुए ड्यूटीएरुट डायवर्जनए भोजन एवं जलपान आदि व्यवस्थाओं में लगे अधिकारीध्कर्मचारीगण एवं पुलिस के जवानों को आवश्यक दिशा निर्देश दिये। जिलाधिकारी ने ड्यूटी पर लगे समस्त अधिकारियों को निरंतर सतर्क रहते हुए श्रद्धालुओं को बेहतर से बेहतर व्यवस्थाएं उपलब्ध कराने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि शासन के मंशानुसार यह सुनिश्चित किया जाए कि किसी भी श्रद्धालु को किसी भी प्रकार की समस्या का सामना न करना पड़े। इस अवसर पर जिलाधिकारी ने समस्त संबंधित उपजिलाधिकारियों को निर्देशित किया कि श्रद्धालुओं को नियमित भोजन एवं अन्य व्यवस्थाएं निरंतर सुगमता से उपलब्ध कराने के निर्देश दिए। इस अवसर पर अपर जिला अधिकारी वित्त एवं राजस्व डॉक्टर सदानंद गुप्ता उप जिलाधिकारी जलालपुर एसडीएम अकबरपुर सहित अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

## महात्मा गॉधी की पुण्यतिथि पर विविध आयोजन



अंबेडकर नगर । राष्ट्र पिता महात्मा गॉधी की पुण्य तिथि के अवसर पर जिलाधिकारी अविनाश सिंह की उपस्थिति मे कलेक्ट्रेट सभागार मे जनपद को कुष्ठ रोग मुक्त बनानेए कुष्ठ रोगियों को हर संभव मदद करने एवं उन्हें समाज के मुख्य धारा में लाने संबंधी शपथ ग्रहण का आयोजन किया गया था। इस अवसर पर उपस्थित जिलाधिकारी के साथ.साथ मुख्य विकास अधिकारी एवं अन्य अधिकारियोंएकर्मचारियों द्वारा प्रतिज्ञा की गई कि ष्हम सभी अम्बेडकरनगर जनपद के लोग और जिला प्रशासन ष्विकसित भारत अभियानष् के अवसर पर यह घोषणा करते हैं कि हम अपने जनपद को कुष्ठ रोग से मुक्त बनाने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ेंगे। कुष्ठ रोग को पहचानना बहुत आसान है और यह साध्य है। हम सभी कुष्ठ रोगियों को जितनी जल्दी हो सके खोजने के लिए हर सम्भव प्रयास करेंगे। हम इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए जिले में उपलब्ध सभी संसाधनों का उपयोग करेंगे। इसके साथ हम कुष्ठ रोग प्रभावित व्यक्ति से कोई भेदभाव नहीं करेंगे और न ही किसी दूसरे व्यक्ति को कुष्ठ रोग प्रभावित व्यक्ति और उनके परिवार के सदस्यों के साथ किसी भी प्रकार का भेदभाव करने देंगे। हम व्यक्तिगत एवं सामूहिक रूप से कुष्ठ रोग से प्रभावित व्यक्तियों से जुड़े कलंक और भेदभाव को समाप्त करने और उनको समाज की मुख्यधारा में लाने के लिए अपना पूर्ण योगदान देंगे। हम सभी कलंक एवं भेदभाव के प्रति शून्य सहिष्णुता के लिये ष्आइए मिलकर जागरूकता फैलाएँए भ्रांतियों को दूर भगाएंए कुष्ठ प्रभावित कोई पीछे छूट न जायष् की प्रतिज्ञा लेते हैं। जिलाधिकारी ने बताया कि 'जनपद में 30 जनवरी 2025 से 13 फरवरी 2025 तक स्पर्श कुष्ठ जागरूकता पखवाड़े का आयोजन किया जा रहा हैए जिसकी थीम है.ष्आइये मिलकर जागरूकता फैलायें भ्रांतियों को दूर भगाएंए कुष्ठ प्रभावित कोई पीछे छूट न जाये।' मुख्य चिकित्सा अधिकारी द्वारा अपने सम्बोधन मे बताया गया कि कुष्ठ रोग पूर्व जन्मों का पाप नहीं हैए ये माइकोबैक्ट्रियम लेपरे द्वारा होता है जिसका इलाज समस्त सरकारी इकाईयों मे मुफ्त उपलब्ध है। जिला कुष्ठ अधिकारी द्वारा बताया गया कि पखवाड़े के दौरान कुष्ठ रोग से प्रभावित रोगियों की पहचान लक्षणों के आधार पर स्वास्थ्य विभाग द्वारा की जायेगी।

## भारतीय अर्थव्यवस्था

### वैश्विक योगदान

**भारत** की अर्थव्यवस्था सारी दुनिया की प्रगति में अपना योगदान कर रही है। यह गति बनाए रखने के लिए आगामी बजट में सही नीतियों की आवश्यकता है। विश्व बाजारों में बाधाओं के बावजूद भारत की अर्थव्यवस्था तेजी से प्रगति कर रही है। भारतीय अर्थव्यवस्था ने अपनी गतिशीलता बनाए रखी है और वह अगले दो साल तक इसे बरकरार रखेगी। विश्व बैंक की जनवरी, 2025 में प्रस्तुत 'ग्लोबल इकोनोमिक प्रोस्पेक्ट्स रिपोर्ट' के अनुसार भारत दुनिया की सबसे तेज प्रगति करने वाली बड़ी अर्थव्यवस्था का अपना दर्जा बनाए रखेगा। वित्त वर्ष 26 और 27 में उसके 6.7 प्रतिशत की शानदार वृद्धि दर प्राप्त करने की आशा है। यह उल्लेखनीय मार्ग न केवल 2.7 प्रतिशत की वैश्विक वृद्धि दर से आगे जाता है, बल्कि विश्व आर्थिक परिदृश्य में भारत का महत्वपूर्ण देश के रूप में स्थान बनाए रखता है। भारत का जीवन्त आर्थिक प्रदर्शन कई प्रमुख कारणों से है। सेवा क्षेत्र भारतीय अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार है जो सकल घरेलू उत्पाद-जीडीपी तथा रोजगार सृजन में महत्वपूर्ण योगदान करता है। आईटी सेवायें, वित्त तकनीक तथा स्वास्थ्यरक्षा प्रगति को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। 'मेक इन इंडिया' तथा 'प्रोडक्शन लिंक्ड इंसेटिव'-पीएलआई योजना जैसी सरकारी पहलों ने विनिर्माण में सहायता देने के साथ ही खोज को बढ़ावा दिया है तथा घरेलू और विदेशी निवेशकों को आकर्षित किया है। ढांचागत संरचना, जैसे सड़कों, रेलवे व डिजिटल कनेक्टिविटी में निवेशों ने आर्थिक गतिविधियों को प्रोत्साहित किया है तथा उत्पादकता बढ़ाई है।

भारत की आर्थिक प्रगति वैश्विक संदर्भ में उल्लेखनीय है जहां वृद्धि बहुत मामूली है। अगले वर्ष चीन की वृद्धि दर धीमी होकर 4 प्रतिशत रहने का अनुमान है, ऐसे में भारत का लगातार विस्तार उसके बढ़ते महत्व को रेखांकित करता है। अंतरराष्ट्रीय मुद्राकोष की 'वर्ड इकोनोमिक आउटलुक' विश्व बैंक के अनुमानों की तरह है जिसने 2025 और 2026 में भारत की 6.5 प्रतिशत वृद्धि दर का अनुमान लगाया है। इससे देश के स्थिर आर्थिक मूलाधार और मजबूत होते हैं। लेकिन इस शानदार प्रदर्शन के बावजूद भारत को अनेक चुनौतियों का भी सामना करना पड़ रहा है जिन पर खासकर वित्त वर्ष 26 के आगामी बजट में ध्यान देने की आवश्यकता है। हालांकि, वृद्धि दर जीवन्त है, पर हमें तत्काल भारत की बढ़ती युवा जनसंख्या के लिए उपयुक्त रोजगार अवसर सृजित करने की आवश्यकता है। विश्व स्तर पर वस्तुओं की बढ़ती कीमतें तथा घरेलू सप्लाई श्रृंखला की बाधाओं को संबोधित करने की आवश्यकता है जो मूल्य स्थिरीकरण के लिए खतरा पैदा करती हैं। आर्थिक वृद्धि को प्रभावित किए बिना मुद्रास्फीति पर नियंत्रण के लिए प्रभावी मौद्रिक और राजकोषीय उपायों की जरूरत है। ढांचागत संरचना और समाज कल्याण पर खर्च बढ़ाने के साथ राजकोषीय अनुशासन बनाए रखना नीति निर्माताओं के लिए संतुलनकारी काम होगा। कृषि क्षेत्र भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी है। लेकिन वह अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा है जिनमें मानसूनों की अनियमितता, कम उत्पादकता तथा बाजार विसंगतियां शामिल हैं। इस क्षेत्र के आधुनिकीकरण व स्थिरीकरण के लिए समग्र सुधारों की जरूरत है। भू-राजनीतिक तनाव, व्यापार विवाद, अमेरिका द्वारा टैरिफ बढ़ाने का खतरा तथा जलवायु परिवर्तन जैसे बाहरी जोखिमों का भी भारत की आर्थिक वृद्धि पर प्रभाव पड़ता है। इन अनिश्चितताओं का मुकाबला करने के लिए आर्थिक मजबूती बढ़ाना जरूरी है। बजट पेश करने की तैयारी कर रही वित्त मंत्री सुश्री निर्मला सीतारमण को भारत की तेज आर्थिक वृद्धि दर बनाए रखने के लिए इन चुनौतियों को संबोधित करना चाहिए। इस दृष्टिकोण से शिक्षा, स्वास्थ्यरक्षा तथा कौशल विकास में निवेशों से सुनिश्चित होगा कि देश की आर्थिक वृद्धि के लाभ सारी जनता तक पहुंचेंगे।

# वर्तमान विश्व में गांधी जी की विरासत

**वर्तमान समय में अनेक समाज असहमति और विभाजन के शिकार हैं। ऐसे में गांधीजी की विरासत हमें संवाद, सद्भावना व एकता के लिए प्रेरित करती है।**

**राजदीप पाठक**
(लेखक, गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति से संबद्ध हैं)

30 जनवरी, 1948 को तीन गोलियों ने महात्मा गांधी के शरीर का अंत कर दिया, पर उनके आदर्श आज भी हमारे साथ बने हुए हैं और पूर्णत: प्रासांगिक हैं। गांधीजी के भौतिक मौन ने उनके अहिंसा, सुलह-समझौते व समझदारी के संदेशों को अमर बना दिया है। निधन के 75 साल बाद भी उनकी शिक्षायें पहले की तरह जीवन्त बनी हुई हैं तथा वे लगातार अधैर्य, असहिष्णुता व ध्रुवीकरण का सामना कर रही दुनिया में तेजी से अपना महत्व प्रकट कर रही हैं। उनकी गूंज हर जगह सुनाई दे रही है। दुनिया के समक्ष उपस्थित इन चुनौतियों को देखते हुए गांधीजी का जीवन और उनके कार्य लगातार मानवता को प्रेरित कर रहे हैं कि वह धैर्य, संवेदना तथा रचनात्मक संवाद के मूल्यों की पुन: खोज करे। हमारे ध्रुवीकृत वैश्विक समाज में जहां विभाजन और गहरे होते जा रहे हैं, वहीं असहमतियां अक्सर शत्रुता में बदलती दिख रही हैं। ऐसे में गांधीजी का दर्शन हमारे सामने आशा की किरण की तरह सामने आता है। गांधीजी के नश्वर शरीर पर चलाई गई तीन गोलियों के बाद पैदा मौन हमारे सामने एक महत्वपूर्ण सवाल छोड़ता है। क्या मानवता आज बिना हिंसा का रास्ता अपनाए अपने भीतर व्याप्त विभाजनों को दूर कर सकती है? हालांकि गांधीजी का संदेश एक विशिष्ट ऐतिहासिक संदर्भ में उभरा था, पर उसकी प्रासांगिकता ने समय की सीमायें पार की हैं और वह आज अधीरता और असहमतियों का प्रभावी जवाब है जो हमारी साझा मानवता के समक्ष गंभीर खतरा पैदा कर रही हैं। इनसे निपटने के लिए हमें गांधीजी के आदर्शों को शिक्षा में पुनर्जीवित करना होगा। युवा पीढ़ियों की शिक्षा में धैर्य, संवाद और संवेदना जैसे मूल्यों को तत्काल स्थापित करना सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।

इन सिद्धान्तों से जल्दी परिचय भविष्य के नेताओं को स्वरूप दे सकता है। 'टेक गांधी टु स्कूल्स' जैसी पहलों का उद्देश्य गांधीवादी दर्शन को बच्चों के जीवन में कहानियों, चर्चाओं तथा प्रायोगिक शिक्षण के माध्यम से जोड़ना है। ये कार्यक्रम उपदेश देने से आगे जाते हैं और छात्रों में अहिंसा तथा सह-अस्तित्व की भावनायें पैदा करते हैं। उदाहरण के लिए, कक्षा में होने वाले टकरावों के प्रबंधन से छात्र संवेदना तथा ध्यान से सुनने के माध्यम से असहमतियों से निपटने के सबक सीखते हैं। बाद में वे ये कौशल सारी दुनिया में फैलाते हैं। शिक्षक व समुदायों के नेता भी इन मूल्यों को प्रसारित करते हैं।

**हमारे ध्रुवीकृत वैश्विक समाज में जहां विभाजन और गहरे होते जा रहे हैं, वहीं असहमतियां अक्सर शत्रुता में बदलती दिख रही हैं। ऐसे में गांधीजी का दर्शन हमारे सामने आशा की किरण की तरह सामने आता है। गांधीजी के नश्वर शरीर पर चलाई गई तीन गोलियों के बाद पैदा मौन हमारे सामने एक महत्वपूर्ण सवाल छोड़ता है।**

अहिंसक संवाद, ध्यान व टकराव समाधान पर कार्यशालाओं से ये अमूर्त अवधारणायें कारगर व्यवहारों में बदल जाती हैं। इन उपकरणों का प्रयोग विविधतापूर्ण स्थितियों में किया गया है जिनमें घरेलू विवादों के समाधान से लेकर टकराव-ग्रस्त समुदायों में विश्वास बहाली तक शामिल हैं। सुलह-समझौते की गांधीवादी भावना की जड़ें क्षमा करने, अहिंसा और संवाद में निहित हैं जो सर्वाधिक गंभीर विभाजनों से निपटने और घावों पर मरहम लगाने में महत्वपूर्ण भूमिका करते हैं।

सुलह-समझौते की परिवर्तनकारी शक्ति बहुत महत्वपूर्ण है। सुलह-समझौते के प्रति गांधीजी का दृष्टिकोण केवल टकरावों का समाधान न होकर संबंधों की पुन: बहाली तक विस्तारित था। उनका विश्वास था कि साहस के साथ अन्याय का सामना किया जाना चाहिए, लेकिन इसके बावजूद गलत काम करने वाले के प्रति कोई घृणा नहीं होनी चाहिए। यह गांधीवादी दर्शन बदले पर सामंजस्य को प्राथमिकता देता है तथा समझदारी व सामूहिक बेहतरी पर जोर देता है। आर्चबिशप डेसमंड टूटू ने इस विश्वास को स्पष्ट करते हुए कहा था, 'सच्चा सुलह-समझौता गलतियों, विसंगतियों, आघात एवं सच्चाई को उजागर करता है।' इसी प्रकार गांधीजी के विचारों से प्रभावित नेल्सन मंडेला ने क्षमा को स्थाई शांति के लिए एक उपकरण माना है। उन्होंने जोर देकर कहा, 'साहसी लोग शांति स्थापना के उद्देश्य से क्षमा करने से डरते नहीं हैं।'

इन सिद्धान्तों को शिक्षा और सामाजिक विमर्श में समाहित कर गांधीजी की विरासत एक समारोह से आगे जाती है और हमारे सामने जीवन्त यथार्थ बन जाती है। क्षमा, अंतर-धार्मिक सामंजस्य, आदि विषयों पर सेमिनारों और चर्चाओं के साथ ही प्रतिभागियों के बीच संवाद से इन मूल्यों को गहराई से अंगीकार करने की भावना पैदा होती है। इस प्रकार के गहन अनुभव युवा मस्तिष्कों में परिवर्तन के महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में अहिंसा की भावना स्थापित करने में सहायक सिद्ध होते हैं। गांधीजी की विरासत को स्थाई बनाने के दृष्टिकोण से 'गांधी स्मृति' एक जीवन्त श्रृद्धांजलि के रूप में सामने आती है। 'गांधी स्मृति' गांधीजी की स्थाई विरासत के केन्द्र में है और वहां स्थापित है जहां गांधीजी ने अपने जीवन के अंतिम दिन बिताए थे। दिल्ली में 5, तीस जनवरी मार्ग पर स्थित यह ऐतिहासिक स्थान पहले बिड़ला हाउस था। इसका बहुत महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थान है। गांधीजी यहां 9 सितंबर, 1947 को आए थे क्योंकि इसके पहले उनके लक्षित आवास पर विभाजन के बाद पश्चिम पंजाब से आए शरणार्थियों ने कब्जा कर लिया था। आज गांधी स्मृति एक राष्ट्रीय स्मारक है जिसमें संग्रहालय, गांधीजी का संरक्षित कमरा और वह प्रार्थना स्थल है जहां वे शाम को बैठकें करते थे।

यह दुनिया भर के आगंतुकों को अपनी ओर आकर्षित करता है और तीर्थस्थल के रूप में सम्मानित है। यह उस त्रासदी की याद दिलाता है जिसने गांधीजी के भौतिक जीवन को समाप्त कर दिया था। लेकिन इसके बावजूद 'गांधी स्मृति' एक विरासती स्थल से आगे जाता है। यह एक शैक्षणिक केन्द्र है जहां सभी आयुवर्ग के लोग, खासकर बच्चे साहस, संवेदना और जिम्मेदार नागरिकता के सबक सीखते हैं। हर वर्ष गांधीजी की जन्म जयंती और पुण्य तिथि के अवसर पर बच्चे शाम को प्रार्थना बैठक में संगीतमय श्रृद्धांजलि देते हैं। इन आयोजनों से गांधीजी का यह विश्वास मूर्त रूप लेता है कि शांति का प्रारंभ बच्चों से होता है। गांधीजी ने कहा था, 'यदि हम दुनिया में असली शांति सिखाना चाहते हैं तो इसकी शुरुआत हमें बच्चों से करनी चाहिए।'

आज गांधीजी के सिद्धान्तों पर अमल की आवश्यकता है। गांधीजी ने अहिंसा, सुलह-समझौते तथा समझदारी की पैरवी की थी। ये केवल अतीत की सजावटी चीजें न होकर आधुनिक चुनौतियों से निपटने के महत्वपूर्ण हथियार हैं। उनकी शिक्षायें हमें याद दिलाती हैं कि परिवर्तन की शुरुआत दया, संवेदना तथा रचनात्मक संवाद से होती है। बच्चों के मन में इन मूल्यों को पोषित करने से हम ज्यादा सामंजस्यपूर्ण भविष्य की नीव डालते हैं।

गांधीजी के जीवन और दर्शन की याद करते हुए हमें स्मरण रखना चाहिए कि गांधीजी के शरीर का अंत करने वाली तीन गोलियां एक समाप्ति न होकर प्रारंभ था। इससे हमें विभाजनों को एकता, दुश्मनी को समझदारी तथा निराशा को आशा में बदलने की प्रेरणा मिलती है। शांति का मार्ग लंबा और थका देने वाला है, पर इसकी शुरुआत इस साहसी विश्वास से होती है कि अहिंसा की शक्ति तथा अगली पीढ़ी के दिलों में आशा की किरण पैदा करने से हम इसे प्राप्त कर सकते हैं।

# पवित्र भावनाओं का सृजन

**हमारी भावनाएं शुद्ध होती हैं, तो शुभकामनाएं और अच्छा व्यवहार स्वाभाविक रूप से आते हैं। हमें खुद को किसी के साथ अच्छा व्यवहार करने के लिए कहने की ज़रूरत नहीं है।**

**ब्रह्मकुमार निकुंज**
(लेखक, आध्यात्मिक उपदेशक हैं)

बचपन से ही हमें दूसरों के साथ विनम्र और अच्छा व्यवहार करना सिखाया जाता है। एक तरह से, यह महत्वपूर्ण है क्योंकि आप जो देते हैं, वही आपको मिलता है, और अगर हम चाहते हैं कि दूसरे हमारे साथ अच्छा व्यवहार करें, तो उनके प्रति हमारा व्यवहार भी वैसा ही होना चाहिए, है न? लेकिन! अगर हमारा तथाकथित अच्छा व्यवहार सतही है, जो अच्छी भावनाओं को छिपाने का काम करता है, तो इससे हमें बदले में कोई सद्भावना नहीं मिलेगी, क्योंकि कर्म का नियम सबसे सूक्ष्म स्तर पर भी काम करता है, जो कहता है: जैसा बोओगे, वैसा ही पाओगे।

इसलिए, दूसरों के प्रति वास्तव में अच्छी भावना रखना बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि जब हमारी भावनाएं शुद्ध होती हैं, तो शुभकामनाएं और अच्छा व्यवहार स्वाभाविक रूप से आते हैं। हमें खुद को किसी के साथ अच्छा व्यवहार करने के लिए कहने की ज़रूरत नहीं है या, अधिक सूक्ष्म स्तर पर, किसी को देखकर उठने वाले नकारात्मक विचारों को दबाने या खारिज करने की ज़रूरत नहीं है। क्योंकि अगर भावनाएं शुद्ध हैं, तो हमारे भीतर से ऐसी नकारात्मकता कभी पैदा नहीं होगी। हम अपने प्रियजनों के प्रति शुद्ध भावनाएं और प्यार रखते हैं। हम अपने दिल की गहराइयों से उन्हें शुभकामनाएं देते हैं और उनकी सफलताओं का जश्न मनाते हैं। यहां तक कि जब वे असफल होते हैं, तब भी हम उन्हें उम्मीद देते हैं और उन्हें बेहतर करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। क्यों? क्योंकि हम उनसे प्यार करते हैं।

लेकिन हमारे परिवार और दोस्तों के घेरे से बाहर के लोगों के बारे में क्या? उनके प्रति हमारी भावनाएँ इस बात के अनुसार बदलती रहती हैं कि हम उन्हें कैसे देखते हैं। ऐसा नहीं है कि कोई भी व्यक्ति स्वाभाविक रूप से बुरा होता है, लेकिन यह हमारी धारणा ही है जो हमें अलग तरह से प्रतिक्रिया करने के लिए प्रेरित करती है जब वही गलती किसी प्रियजन या किसी और द्वारा की जाती है। एक के प्रति हम सहानुभूति और समझ दिखाते हैं, और दूसरे के प्रति हम चिड़चिड़ाहट और गुस्सा दिखा सकते हैं। हम दूसरों पर नकारात्मक लेबल लगाने में जल्दी करते हैं जैसेः स्वार्थी, आलसी, मूर्ख, अहंकारी, आदि। उस व्यक्ति के प्रति हमारे विचार, शब्द और व्यवहार उस लेबल से आकार लेते हैं। इस प्रकार, हम खुद को कुछ लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करने में असमर्थ पाते हैं। हालाँकि, यह समझना महत्वपूर्ण है कि हमारी धारणा अक्सर हमारे अपने पूर्वाग्रहों और पूर्वाग्रहों से घिरी हो सकती है। हम हमेशा अपने निर्णयों के पीछे के कारणों से अवगत नहीं हो सकते हैं, और ये निर्णय हमें ऐसे तरीकों से कार्य करने के लिए प्रेरित कर सकते हैं जो वास्तव में हमारे मूल्यों को प्रतिबिंबित नहीं करते हैं। इसे स्वीकार करके, हम अपनी धारणाओं को चुनौती देना शुरू कर सकते हैं और अधिक सहानुभूतिपूर्ण दृष्टिकोण की दिशा में काम कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, अगर हम किसी ऐसे व्यक्ति से मिलते हैं जो शुरू में अप्राप्य या मुश्किल लगता है, तो अपनी शुरुआती धारणा को अपनी बातचीत को निर्धारित करने देने के बजाय, हमें उन अंतर्निहित कारकों की संभावना पर विचार करने के लिए एक पल लेना चाहिए जो उनके व्यवहार को प्रभावित कर सकते हैं।

माइंडफुलनेस हमें वर्तमान में मौजूद रहने और प्रत्येक बातचीत को खुले दिमाग और दिल से करने के लिए प्रोत्साहित करती है। जब हम माइंडफुल होते हैं, तो हम आवेगपूर्ण तरीके से प्रतिक्रिया करने या अपने निर्णयों को अपनी बातचीत को प्रभावित करने की अनुमति देने की संभावना कम होती है। यह हमें अधिक गहराई से सुनने और अधिक सहानुभूति के साथ प्रतिक्रिया करने में मदद करता है। यह प्रशंसा स्वाभाविक रूप से दूसरों तक फैलती है, जिससे हमें उनमें अच्छाई देखने में मदद मिलती है, भले ही यह उनके कार्यों या व्यवहार से अस्पष्ट हो। इसके अलावा, मजबूत, प्रामाणिक संबंध बनाने के लिए प्रयास और इरादे की आवश्यकता होती है। इसमें न केवल आसान क्षणों में दयालु होना शामिल है, बल्कि चुनौतीपूर्ण समय के दौरान समझ और समर्थन बढ़ाना भी शामिल है। इसका मतलब है खुले और ईमानदार संचार में शामिल होने और प्रतिक्रिया के लिए ग्रहणशील होना। संक्षेप में, हर व्यक्ति को दया और करुणा से देखने की आदत से गहरा परिवर्तन हो सकता है - न केवल उनमें, बल्कि हममें भी।

जब हम लगातार दूसरों में अच्छाई देखना चुनते हैं और अपना समर्थन देते हैं, तो हम एक ऐसा वातावरण बनाते हैं जहाँ उपचार और विकास संभव है। इन दृष्टिकोणों और प्रथाओं को विकसित करके, हम एक अधिक दयालु और समझदार दुनिया में योगदान करते हैं। याद रखें!

हममें से प्रत्येक के पास अपने कार्यों और दृष्टिकोणों के माध्यम से अपने परिवेश को प्रभावित करने की शक्ति है, और दूसरों के साथ सार्थक और सहायक तरीके से जुड़ने का विकल्प चुनकर, हम वास्तविक सद्भावना और सद्भाव की विशेषता वाले समुदाय का निर्माण करने में मदद करते हैं।

## आप की बात

### भावनाओं पर नियंत्रण जरूरी

**देश** आस्थावानों से भरा पड़ा है। छोटे-मोटे पर्वों पर भी लोग धार्मिक स्थलों और नदी क्षेत्रों में बड़ी तादाद में उमड़ पड़ते हैं। प्रयागराज में मौनी अमावस्या पर हुई भगदड़ दुखद और चिंताजनक तो है ही धार्मिक आयोजनों में बढ़ती भीड़ प्रबंधन के लिए गंभीर चुनौती बन चुकी है। पिछले दो कुंभ आयोजनों 1954 और 2013 में अप्रत्याशित हादसों के बाद सुधार के लिए अमल में लायें गए उपाय बढ़ती आबादी के आगे छोटे साबित हो रहे हैं। चाहे कोई बड़ा धार्मिक आयोजन हो या कुंभ अथवा सिंहस्थ भीड़ के रेले में अनियंत्रित भीड़ के कारण अव्यवस्था के शिकार हो जाते हैं जो बड़ी जन-धन हानि की वजह बनते है।इस भीड़ में जब विशिष्ट सरकारी अतिथि, कोई बड़ी हस्ती की उपस्थिति हो तो सुरक्षा को ठेंगा अवश्य देखने में आता है। हादसा भीड़ में आत्मसंयम की बड़ी कमजोरी से होना माना जाता है जो छोटे से कार्यक्रम में भी जरूरी होती है। लोग आगे आने के लिए संयम तोड़ बेठते हैं और नतीजन हादसे हो जाते है। अक्सर धार्मिक आयोजनों में ऐसे स्थानों पर सुरक्षा व्यवस्था केवल नियंत्रण भर की होती है लेकिन इस हादसे के बाद अब उसका सख्त होना बहुत जरूरी हो गया है। भीड़ प्रबंधन के माकुल इंतजाम एक व्यवहारिक आचार संहिता के जरिए तय किए जाने चाहिए जिससे धार्मिक आयोजन सुरक्षित और गरिमापूर्ण बने रहें ही और हादसों से उन्हें कलंकित होने से भी बचाया जा सके।

- **अमृतलाल मारू,** इंदौर

### केजरीवाल का चरित्र

**शीला** दीक्षित से रॉबर्ट वाड्रा सहित कांग्रेस के नेतृत्व के प्रति भ्रष्टाचार के आरोपों की झड़ी, जनलोकपाल से लेकर कांग्रेस से कैसा भी गठजोड़ नहीं करने के लिए अपने ही बच्चों की शपथ, सरकारी गाड़ी, सुरक्षा और निवास न लेने का संकल्प, नितिन गडकरी पर आरोप मढ़ने से बाद में क्षमायाचना की कथा, पंजाब विधानसभा चुनाव में अकाली नेता विक्रम मजीठिया पर पंजाब में नशा व्यापार का आरोप फिर माफी। आम आदमी पार्टी के नेता अरविन्द केजरीवाल का यही चरित्र है इसलिए जब उसने हरियाणा द्वारा दिल्ली के पानी को विषैला बनाने का दावा किया तो आश्चर्यचकित होने की अपेक्षा ऐसे राजनेता को राजनीति से विलग कर देना मतदाता का दायित्व है और चुनाव आयोग का भी । झूठ, पाखण्ड, अराजकता, धूर्तता, कुटिलता ही केजरीवाल के राजनीतिक उपकरण हैं । प्रारम्भ से ही इसकी कोई भी बात विश्वसनीय नहीं है। बस कुछ (बिजली, पानी आदि) मुफ्त बांटने के अतिरिक्त। दुर्भाग्य से भ्रष्टाचार के गम्भीर आरोपों के रहते भी सुप्रीम कोर्ट ने केजरीवाल व उसके गिरोह जनों को जेल से बाहर निकाल दिल्ली के सामाजिक राजनैतिक वातावरण में प्रदूषण को बनाए रखने का काम किया है। सब जानते हैं कि सुप्रीम जज किस आधार पर निर्णय लेते हैं, सब जानते हैं सुप्रीम जजों और अभिषेक मनु सिंघवी - कपिल सिब्बल का गठजोड़ ।

- **डॉ जय प्रकाश**, अंबाला छावनी

### मिलावटखोरी की समस्या

**भारत** अपनी प्रगति, सांस्कृतिक विरासत और आर्थिक विकास के लिए विश्वभर में प्रसिद्ध है, लेकिन मिलावटखोरी जैसी कुप्रथाएं इसकी छवि को गंभीर रूप से नुकसान पहुंचा रही हैं। हाल ही में, मध्य प्रदेश में मिलावटी दूध और उससे बने उत्पादों की आपूर्ति से जुड़ा मामला सामने आया, जिसमें ईडी ने नौ स्थानों पर छापेमारी की। चौंकाने वाली बात यह है कि इन मिलावटी उत्पादों की आपूर्ति न केवल देश में, बल्कि विदेशों तक भी की जा रही थी। इससे आम जनता के स्वास्थ्य के साथ-साथ भारत की वैश्विक साख को भी खतरा है। मिलावटी खाद्य पदार्थों, विशेषकर दूध और दुग्ध उत्पादों, का सेवन अत्यंत हानिकारक होता है। इनमें मिलाए गए रसायन गंभीर बीमारियों का कारण बन सकते हैं। यदि भारत से निर्यात किए गए उत्पादों में मिलावट पाई जाती है, तो इससे अंतरराष्ट्रीय बाज़ार में भारतीय खाद्य उद्योग की विश्वसनीयता को गहरा आघात लगेगा। यह समस्या सिर्फ दूध तक सीमित नहीं है, बल्कि मसाले, मिठाइयां और अन्य खाद्य पदार्थ भी इसकी चपेट में हैं। मिलावट का यह जाल जितना विस्तृत होता जा रहा है, उतना ही यह देश की साख और आम जनता के स्वास्थ्य के लिए घातक सिद्ध हो रहा है। सरकार कड़े कदम उठा रही है, लेकिन जब तक जनता जागरूक नहीं होगी और सख्त कार्रवाई नहीं होगी, यह बुरी प्रथा जारी रहेगी।

- **आर के जैन**, बड़वानी

### इस ओर भी ध्यान दें!

**समय** के साथ सुविधाओं के तौर तरीके बदले हैं अब लगभग सामान्य जरूरत की सभी चीजें होम डिलीवरी के लिए उपलब्ध हैं। बाजार में प्रतिस्पर्धा बढ़ रही है और प्रतिस्पर्धा में भी सबसे तेज पहुंचने की होड़ में लगभग हर कोई आगे निकलना चाहता है। पिज्जा तीस मिनट में आपके घर पहुँचने की गारंटी दी जाती है , अगर थोडी सी भी देर हो जाए तो हम डिलीवरी पहुंचाने वाले व्यक्ति पर नाराजगी ज़ाहिर करते हैं लेकिन क्या हमने समय पर हर चीज पहुंचाने वाले इन लोगों की सुरक्षा और स्वास्थ्य के बारे में कभी सोचा है ? आजकल डिलीवरी सेवा देने वाले कर्मचारियों पर दबाव बढ़ चुका है। उन्हें समय पर हर चीज पहुंचाने की जिम्मेदारी दी जाती है, लेकिन इस प्रक्रिया में उनकी सुरक्षा और स्वास्थ्य अक्सर अनदेखा कर दिया जाता है। अक्सर देखा जाता है कि इन डिलीवरी कर्मचारियों को ट्रैफिक, मौसम, या अन्य जोखिमों का सामना करते हुए तेज़ी से पहुंचने की कोशिश करनी पड़ती है, जिससे उनका मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। अगर किसी डिलीवरी कर्मचारी को चोट लगती है या वह थकान ग्रस्त होता है, तो उस पर किसी का ध्यान नहीं जाता।

- **नितिन रावत**, फिरोज़ाबाद

**पाठक अपनी प्रतिक्रिया ई-मेल से responsemail.hindipioneer@gmail.com पर भी भेज सकते हैं।**

# डीएम ने विभिन्न विषयों पर बैठक कर दिये आवश्यक निर्देश

संवाददाता। अमेठी

**जिलाधिकारी** निशा अनंत ने आज कलेक्ट्रेट सभागार में जिला पोषण समिति, राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य तथा टीबी उन्मूलन कार्यक्रम की बैठक कर संबंधित अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए। बैठक में जिलाधिकारी ने निर्माणाधीन आंगनबाड़ी केंद्र, केंद्रों पर पीने के पानी की व्यवस्था, विद्युत कनेक्शन की स्थिति, शौचालय की व्यवस्था, आंगनबाड़ी केंद्रों पर ग्रोथ मॉनिटरिंग डिवाइस मशीनों का विवरण तथा कार्यप्रणाली, हॉट कुक्ड मील योजना के अंतर्गत बच्चों को गर्म भोजन उपलब्ध कराए जाने की स्थिति, बच्चों का वजन/ऊंचाई आदि मापने की मशीन की उपलब्धता सहित अन्य बिंदुओं पर गहन समीक्षा किया एवं संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

बैठक में जिलाधिकारी ने कुपोषित/अति कुपोषित बच्चों, गर्भवती महिलाओं, धात्रियों को पोषाहार वितरण की जानकारी ली एवं पोषाहार वितरण की ग्राम पंचायत वार सूची उपलब्ध कराने के निर्देश डीपीओ को दिए। जिलाधिकारी ने डीपीओ को निर्देश दिया कि जो बच्चे रेड श्रेणी में है उनकी नियमित जानकारी रखें साथ ही उन्हें समुचित मात्रा में पोषाहार उपलब्ध कराकर हरी श्रेणी में लाने का प्रयास करें।

जिला कार्यक्रम अधिकारी संतोष श्रीवास्तव ने बताया कि जनपद की समस्त आंगनवाड़ी केंद्रों पर समुदाय आधारित गतिविधियों का आयोजन करते हुए पंजीकृत लाभार्थियों को विभागीय योजनाओं से लाभान्वित किया जा रहा है। जिलाधिकारी ने मुख्य चिकित्साधिकारी को निर्देशित करते हुए कहा कि सैम-मैम श्रेणी के बच्चों का अस्पताल के ओपीडी में हुए इलाज, दिए गए परामर्श तथा दी जाने वाली दवाओं का शत प्रतिशत रजिस्टर में अंकन किया जाए। इसके उपरांत जिलाधिकारी ने जिलाधिकारी ने राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम की कार्यप्रणाली की समीक्षा कर निर्देश समस्त संबंधित को दिए।

# कुष्ठ निवारण दिवस पर डीएम ने कुष्ठ रोगियों में बांटे फल

**गोंडा।** बृहस्पतिवार को जिलाधिकारी श्रीमती नेहा शर्मा ने कुष्ठ सेवा केंद्र बहराइच रोड में कुष्ठ निवारण दिवस/शहीद दिवस के अवसर पर जनपद के कुष्ठ रोग के मरीजों को फ्लू, बर्तन, साबुन, कंबल, चप्पल आदि सामग्री का वितरण किया। कार्यक्रम के दौरान जिलाधिकारी ने वहां पर उपस्थित सभी लोगों को शपथ दिलाई। वहीं वितरण के दौरान सभी मरीजों को कुष्ठ रोग निवारण की दवा भी वितरित की गई, साथ ही मरीजों को दवा के संबंध में विस्तृत जानकारी दी गई। कार्यक्रम के दौरान स्पर्श कुष्ठ रोग निवारण जागरूकता अभियान रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। कार्यक्रम के दौरान डीएम ने बताया है कि इस रैली के माध्यम से जनपद के अन्य जनसामान्य को कुष्ठ रोग निवारण के संबंध में जागरूक किया जाएगा तथा इसकी दवाओं का बराबर सेवन करके कुष्ठ रोग को दूर भगाया जाएगा। इस मौके पर स्वतन्त्रता संग्राम में अपने प्राणों की आहूति देने वाले अमर शहीदों की स्मृति में जिलाधिकारी ने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के साथ दो मिनट का मौन-धारण किया गया। सभी ने अमर शहीदों को याद करते हुए उनसे प्रेरणा लेने का संकल्प लिया।

# जिला स्वास्थ्य समिति बैठक में सीडीओ ने की स्वास्थ्य सेवाओं की समीक्षा

संवाददाता। संतकबीरनगर

**जिलाधिकारी** महेन्द्र सिंह तंवर के निर्देश के क्रम में मुख्य विकास अधिकारी जयकेश त्रिपाठी की अध्यक्षता में जिला स्वास्थ समिति (शासी निकाय) के कार्यक्रमों/संचालित योजनाओं की अद्यतन स्थिति एवं प्रगति की समीक्षा बैठक कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित हुई। समीक्षा के दौरान मुख्य विकास अधिकारी ने राष्ट्रीय क्षय रोग उन्मूलन कार्यक्रम के तहत टीवी कार्यक्रम के सफल संचालन हेतु दिए गए दिशा-निर्देशों पर कार्य योजना बनाकर क्षय उन्मूलन की दिशा में पूरे जनपद में जनवरी माह 2025 से चलाए जा रहे 100 दिवसीय सघन टीवी अभियान में जन भागीदारी बनाकर क्षय उन्मूलन को आंदोलन के रूप में सफल बनाने हेतु प्रभावशाली व्यक्तियों, प्रशासनिक अधिकारियों, जनप्रतिनिधिगणों सहित विभिन्न विभागों, उद्योगों, गैर सरकारी संगठनों व निजी स्वास्थ्य क्षेत्र की भागीदारी सुनिश्चित करते हुए नि:क्षय मित्र बनाए जाने की कार्यवाही तेजी लाने का निर्देश दिया तथा कहा कि नि:क्षय मित्र बनने हेतु लोगों को प्रेरित भी किया जाए।

मुख्य विकास अधिकारी द्वारा समीक्षा के दौरान जनपद में पात्र लाभार्थियों के आयुष्मान कार्ड बनने की प्रगति एवं 70 वर्ष या उससे अधिक की आयु के सभी व्यक्तियों का आयुष्मान कार्ड बनाए जाने की प्रगति की समीक्षा की गई। उन्होंने कहा कि जिला चिकित्सालय सहित जनपद के सभी सीएचसी/पीएचसी में आधारभूत सुविधाओं में यदि कोई कमी है तो उसे तत्काल सुधारने की आवश्यकता है। समीक्षा के दौरान मुख्य विकास अधिकारी द्वारा पिछली बैठक में दिए गए निर्देशों की अनुपालन आख्या की समीक्षा की गई, जिसमें जननी सुरक्षा योजना के अंतर्गत लाभार्थियों के भुगतान की स्थिति, गर्भवती महिलाओं के संस्थागत प्रसव का आंकड़ा, ओपीडी/आईपीडी में माहवार मरीजों की संख्या के सापेक्ष दवाओं का वितरण आदि की आंकड़ेवर समीक्षा की गई।

# रजिस्ट्री स्टाम्प वादों में एकमुश्त समाधान योजना का उठाएं लाभ

**संतकबीरनगर।** जिलाधिकारी महेंद्र सिंह तंवर ने शासन के निर्देश का हवाला देते हुए बताया है कि शासन द्वारा स्टाम्प वादों की 'एकमुश्त समाधान योजना' का आगामी 31, मार्च, 2025 तक प्रभावी रहने के विषय में नागरिकों में व्यापक प्रचार-प्रसार किये जाने तथा लम्बित स्टाम्पवादों का अधिकाधिक निस्तारण किये जाने के निर्देश निर्गत किये गये हैं। उन्होंने बताया कि उक्त निर्देश के बावजूद स्टाम्प वादों की 'एकमुश्त समाधान योजना' के प्रभावी होने के 01 माह बाद शासन स्तर पर की गयी समीक्षा से यह तथ्य संज्ञान में आया है कि स्टाम्पवादों के निस्तारण एवं निर्णीत वादों में वसूल की गयी धनराशि की प्रगति अत्यन्त धीमी है। जिलाधिकारी ने उपरोक्त के संबंध में जनपद के ऐसे प्रकरणों के समाधान/निस्तारण एवं स्टाम्प समाधान योजना का अधिकाधिक लाभ आम जनमानस को उपलब्ध कराने के क्रम में संबंधित विभागीय अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा है कि उक्त योजना का प्रिन्ट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में व्यापक प्रचार-प्रसार कराया जाये। उक्त के अतिरिक्त समस्त वादकारियों को पोर्टल पर पंजीकृत उनके मोबाईल दूरभाष नम्बर पर उक्त योजना के अन्तर्गत स्टाम्प कमी की धनराशि तथा ब्याज एवं मात्र रूपए 100 के टोकन अर्थदण्ड की धनराशि को कोषागार में जमा कर इसका लाभ उठाये जाने हेतु अवगत कराया जाय।

# कबीर मगहर महोत्सव में बुधवार को पंजाबी गायक काका का दिखा जलवा

संवाददाता। संतकबीरनगर

**कबीर** मगहर महोत्सव बुधवार की रात पंजाबी सिंगर काका के नाम रही। जिनके पंजाबी गीतो के तड़का पर लोग थिरकने को मजबुर हो गये। कार्यक्रम के दौरान उन्होंने अपने गीतो को आवाज दी तो पण्डाल में मौजूद दर्शक अपने आप को रोक नहीं पाये और कुर्सी छोड़कर उनके साथ थिरकने लगे। कार्यक्रम उपरांत समिति सदस्य ने कलाकार को अंग वस्त्र व स्मृति चिन्ह प्रदान कर उनका स्वागत किया।

कबीर मगहर महोत्सव पर पहुंचने पर काका का स्वागत जोरदार अन्दाज में दर्शकों ने किया और तालियों की गड़गड़ाहट से पूरा पण्डाल गुंज उठा। कार्यक्रम का आगाज काका ने अपने अंदाज में 'काला जी लिबास' से झन्नारेदार अंदाज में की। जिसे सुन श्रोता उनके साथ पंजाबी अंदाज में थिरकने लगे। टम्परेरी प्यार बड़ी वार हो गया गाने को श्रोता के सुर से सुर मिला कर गाने और पूरे महौल को रंगीन कर दिया। मिट्टी दी पिड्डी गीत को गया तो दर्शक थिरकने व नाचने लगे। काका ने 'मेरे जजबात छेडे' को पंजाबी धुन पर सुनाया तो पुरा पण्डाल इस गीत को गुन गुनाने लगा। इसकी बाद काका ने अपने मशहूर गीतो को दर्शकों की फरमाईस पर अपनी दिलकश आवाज में सुना कर खुब मनोरंजन किया। ',प्यार जब हद से बढ़ा तो सारे तकल्लुफदूर हुए रफ्ता रफ्ता . . . वो मेरे हस्ती का सामान हो गये' भीगा भीगा है समा ऐसे में तु है कहा' जैसे तमाम अपने आवाज में गाकर लोगों को अपने साथ में नाचने पर मजबुर कर दिया।

इस तरह के दिलकश गानों को अपने आवाज देकर लोगों का भरपूर मनोरंजन किया। इस अवसर एडीएम वित्त एवं राजस्व जय प्रकाश, एएसपी सुशील कुमार सिंह, सीडीओ जयकेश त्रिपाठी, एसडीएम शैलेश दूबे, सीओ अजीत चौहान, तहसीलदार जर्नादन मौर्या, नायब तहसीलदार प्रियंका त्रिपाठी, चेयरमैन प्रतिनिधि नूरुज्जमा अंसारी, सभासद अवधेश सिंह, आमिरुद्दीन कादिरी, मेंहदी हसन, अत्रेश श्रीवास्तव, चंदन सैनी, अहमद अली, सुहेल अख्तर, डा. चित्रसेन श्रीवास्तव आदि मौजूद रहे।

## सीमेंट से लदा हुआ ट्रक पलटा बाल बाल बचे ड्राइवर खलासी

**नसीराबाद, रायबरेली।** गुरुवार की सुबह करीब सात बजे सलोन-जायस मार्ग पर धर ई चौराहे के समीप सीमेंट से लदा एक ट्रक अनियंत्रित होकर रोड के किनारे खंथी में पलट गया। ड्राइवर व खलासी तथा लेबर बाल बाल बचे। मौके पर पहुंचकर पुलिस ने राहत व बचाव कार्य किया। ट्रक नंबर यू पी 36 टी 0874 जैसे ही उनका ट्रक परसदेपुर से जायस सलोन मार्ग धर ई चौराहे के पुल के पास पहुंचा तो परशदेपुर की तरफ से आ रहे एक तेज रफ्तार पिकप को बचाने के चक्कर में रोड के किनारे खंथी में गिरकर पलट गया। जिससे उसकी गाडी अनियंत्रित हो गई। और पुल की रेलिंग तोडते हुए गहरी खंथी मे गिरकर कर पलट गया। डाईवर राजू ने बताया कि किसी तरह उन लोगों की जान बच गई है। सीमेट उतारने वाले मजदूर बाल बाल बच गए।थाना प्रभारी कमलेश कुमार ने बताया सीमेट लदा एक ट्रक पलट गया है ,मौके पर पहुंचकर ड्राइवर व खलासी तथा लेबर की सहायता की गई।

## क्विक न्यूज

### पुलिस कर्मियों ने बचाई युवक की जान

**श्रावस्ती, भिनगा।** पुलिस मुख्यालय से जनपदीय मीडिया सेल को गुरुवार को प्रातः 5 बजकर 30 मिनट पर सूचना प्राप्त हुई कि एक युवक ने सोशल मीडिया प्लेटफार्म इंस्टाग्राम पर आत्महत्या का संकेत देने वाला वीडियो पोस्ट किया है जिसमें वह चूहे मारने की दवा का पैकेट दिखाते हुए आत्मघाती कदम उठाने की बात कर रहा है। सूचना मिलते ही जनपदीय पुलिस व मीडिया सेल ने त्वरित संज्ञान लेते हुए चौकी प्रभारी लक्ष्मणपुर बाजार उ0नि0 जगतराम मौर्या को अवगत कराया चौकी प्रभारी ने तत्काल सक्रियता दिखाते हुए बताई गई लोकेशन पर पहुंचकर युवक को आत्महत्या करने से रोक लिया। पूछताछ के दौरान युवक ने बताया कि कभी-कभी मानसिक स्थिति अस्थिर हो जाती है जिसके कारण उसने यह वीडियो गलती से पोस्ट कर दिया जिसपर चौकी प्रभारी द्वारा युवक की काउंसलिंग की गई तथा उसे समझाया गया कि इस प्रकार के नकारात्मक विचारों से दूर रहना चाहिए साथ ही उसके परिजनों को भी इस घटना की जानकारी दी गई और उन्हें युवक के उचित इलाज एवं देखभाल के लिए प्रेरित किया गया युवक ने भविष्य में इस प्रकार की गलती न करने का आश्वासन दिया।

### साइट ने दिया साथ तो फार्मर रजिस्ट्री में आया उछाल

**महराजगंज, रायबरेली।** पिछले चार पांच दिनों से सर्वर और साइट के साथ देने के कारण किसानों को बडी राहत मिली है, फार्मर रजिस्ट्री कराने के अब कई कई दिन तक जनसुविधा केन्द्रो के चक्कर नहीं लगाने पड रहें हैं, यदि अभिलेखों में कोई मिसिंग नहीं है, तो अब फार्मर रजिस्ट्री आसानी से हो जा रही है, जिसका प्रतिफल ये है, कि पिछले एक सप्ताह के अंदर फार्मर रजिस्ट्री कराने में बडी संख्या में उछाल आया है, एक सप्ताह के अंदर 18: फिसदी फार्मर रजिस्ट्री हुई हैं, जिसका प्रतिशत बढकर अब 40 हो गया है, इसके पीछे एसडीएम सचिन यादव की सक्रियता भी एक कारण है, एसडीएम द्वारा स्वतरू नजर रखी जा रही है, और जनसुविधा केन्द्रो का निरीक्षण करते हुए बेहतर कार्य करने की हिदायत दी जा रही है। बता दें कि जबसे फार्मर रजिस्ट्री होना शुरू हुई थी तब से ही साइट दगा दे रही थी और आधार कार्ड वेरीफिकेशन, भूलेख मैपिंग, सहित अन्य कई समास्या आ रही थीं जिससे किसानों को एक जन सुविधा केंद्र से दूसरे केंद्र पर भटकना पड रहा था।

# मंत्री दिनेश प्रताप सिंह की उपस्थिति में हुआ पंचायत प्रतिनिधि सम्मेलन

संवाददाता। रायबरेली

**गुरुवार** को अमांवा विकास खण्ड सभागार व जिला पंचायत सभागार में पंचायत प्रतिनिधि सम्मेलन का आयोजन उद्यान मंत्रीं दिनेश प्रातप सिंह द्वारा किया गया। इस अवसर पर पंचायत प्रतिनिधियों को सम्बोधित करते हुए उद्यान मंत्री ने कहा कि मैं हर सुख-दुख में आपके साथ कंधे से कंधा मिलाकर सदैव खड़ा रहा हूं और खड़ा रहूंगा।

पंचायत प्रतिनिधियों के सम्मान व उनके द्वारा बताये गये विकास कार्यो को अमली जामा पहनाने में मैंने अब तक कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी है। सम्मेलन में सभासदों द्वारा नगर पालिका में उनके साथ हो रहे अन्याय की बात पर कहा कि मैं खुद अगली नगर पालिका की बोर्ड बैठक में शामिल रहूंगा। आप लोगो को किसी भी प्रकार की कोई दिक्कत नहीं होने दी जायेगी। मंत्री ने कहा कि सम्मान हो विकास ये दोनों चीजो से रायबरेली को गांधी परिवार ने वंचित किया है। गांधी परिवार का व्यक्तिगत मोबाइल नम्बर किसी के पास नहीं है।

जबकि मंत्री दिनेश हर सुख-दुख में आपके साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ा है। राज्य मंत्री दिनेश प्रताप सिंह ने सम्मेलन में आये हुए सभी पंचायत प्रतिनिधियों के सम्मेलन को सफल बनाने के लिए उनका स्वागत किया। गुरूवार को आयोजित पंचायत जनप्रतिनिधि सम्मेलन में गांधी परिवार, राज्यमंत्री के निशाने पर रहा। कार्यक्रम के दौरान दिनेश प्रताप सिंह ने कहा कि गांधी परिवार ने कभी भी किसी जनप्रतिनिधि का सम्मान नहीं किया है। अगर गांधी परिवार से जनप्रतिनिधि मिलना चाहे तो कहां चाहे कहा जाए। जनप्रतिनिधियों को सम्बोधित करते हुए राज्यमंत्री दिनेश प्रताप सिंह के निशाने पर सरकारी अफसर भी रहे। साफ शब्दों में उन्होंने कहा कि तहसील थाना हो या फिर ब्लाक कर्मचारियों को जनप्रतिनिधियों का सम्मान करना पड़ेगा।

## मिल्कीपुर उपचुनाव के लिए डिंपल यादव ने किया रोड शो

**अमेठी।** प्रदेश की बहुचर्चित मिल्कीपुर विधान सभा के उप चुनाव में रोड शो करने पहुंची मैनपुरी से सपा सांसद डिम्पल यादव के कार्यक्रम में शामिल होने के सपा नेता जयसिंह प्रताप यादव के नेतृत्व में अमेठी जिले के युवा कार्यकर्ताओं ने बड़ी संख्या में जिले की सीमा हलियापुर से बाइक रैली के साथ कार्यक्रम में शामिल हुए। सपा नेताओं जयसिंह प्रताप यादव ने डिम्पल यादव का स्वागत कर भेंट किया तो डिम्पल यादव ने चुनाव में जुट कर सपा उम्मीदवार को भारी मतो से जिताने का आवाहन कर धन्यवाद प्रकट किया। कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए सपा नेता जयसिंह प्रताप यादव ने कहा कि मिल्कीपुर उप चुनाव में स्थानीय प्रशासन भाजपा कार्यकर्ता के रूप में काम कर रहा है।

# शहीद दिवस पर महात्मा गांधी को कांग्रेसियों ने दी श्रद्धांजलि

**रायबरेली।** राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की पुण्यतिथि को कांग्रेस ने शहीदी दिवस के रूप में मनाय। कांग्रेस कार्यालय तिलक भवन में उनके चित्र पर एवं महात्मा गांधी इंटर कालेज स्थित उनकी प्रतिमा पर मार्ल्यापण कर राष्ट्रपिता को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। कांग्रेस कार्य.जिलाध्यक्ष पंकज तिवारी ने बापू के चित्र पर पुष्प अर्पित करते हुए कहा कि राष्ट्रपिता के बलिदान और उनके संघर्षो को देश कभी भी नहीं भूल सकता है। गांधी जी के बिना स्वतंत्र भारत की कल्पना भी नहीं की जा सकती है, अहिंसा का संदेश विश्व में देने वालें ऐसे महात्मा को हम सभी बारम्बार नमन करते हैं।कार्यवाहक जिला प्रवक्ता महताब आलम ने बताया कि कांग्रेस कार्यालय तिलक भवन में गांधी जी का प्रिय भजन ''रघुपति राघव राजा राम'' का सामूहिक पाठ किया गया, उपस्थित सभी कांग्रेस जनों ने राष्ट्रपिता को श्रद्धांजलि अर्पित की। महताब आलम ने कहा कि बड़े दुर्भाग्य की बात है मौजूदा समय में गांधी जी के हत्यारे नाथू राम गोडसे का महिमा मंडन कर उसे सम्मानित किया जाता है, जबकि विश्व में भारत की पहचान गांधी के देश के रुप में होती है।

# चौपहिया वाहन की छिनौती के मामले का पुलिस ने किया खुलासा

**रायबरेली।** पुलिस ने आठ अभियुक्त की गिरफ्तारी व उनके पास से लूटी गई कार बरामद करने का दावा किया है। हरचंदपुर थाने पर वादी रामतेज ने तहरीर देकर बताया कि उसकी अर्टिगा कार यूपी 44 बी 8618 को वाहन चालक नवाब अहमद 6 जनवरी को अहिमामऊ लखनऊ से तीन व्यक्तियों द्वारा कार को सुल्तानपुर चलने के लिए बुक किया गया तथा कुछ दूर चलने के बाद तीन व्यक्ति और मिले गाडी में बैठ गए। गाडी जगदीशपुर वगही पहुंचने पर अभियुक्त द्वारा असलाह लगाकर ड्राइवर को कब्जे में लिया गया। उसके हाथ पैर मुंह को टेप से बांध दिया तथा मारपीट कर बतोही रेस्टोरेंट रायबरेली लखनऊ रोड के पास चालक को फेंक कर वे सभी गाडी छीनकर भाग गए थे। जिस संबंध में थाना हरचंदपुर में दर्ज मुकदमे की विवेचना से पाया गया कि अभियुक्त अरविंद कुमार मोहम्मद हसीब उदय प्रताप सिंह द्वारा अहमामऊ लखनऊ के योजना बाद तरीके से बुक किया गया। जिनमें तीन साथी राजू प्रमोद शुभम भी थोडी दूर आगे चलकर गाडी में बैठ गए, तथा सुल्तानपुर रोड पर हैदरगढ टोल प्लाजा पार करने के बाद शुभम् मिश्रा उर्फसिनटू हसीब ने ड्राइवर पर तमंचा लगा दिया और सभी ने मिलकर उसे मारपीट कर बंधक बना लिया। ड्राइवर को बांधकर रायबरेली ले गए। जहां बटोही रेस्टोरेंट के पास सडक किनारे ड्राइवर को फेंक कर गाडी लूट कर भाग गए।

# उद्यमियों की समस्याओं का निराकरण सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में एक: जिलाधिकारी

संवाददाता। उरई, जालौन

**गुरुवार** को जिलाधिकारी राजेश कुमार पाण्डेय की अध्यक्षता में विकास भवन के रानी लक्ष्मीबाई सभागार में जिला उद्योग बन्धु व व्यापार बन्धु समिति की बैठक में व्यापार बन्धुओं द्वारा उठाई गई समस्याओं का समाधान गुणवत्तापूर्वक करने के लिए संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए। जनपद के औद्योगिक समस्याओं पर विचार-विमर्श के साथ-साथ योजनाओं की भी समीक्षा की गयी।

जिलाधिकारी ने कहा कि उद्यमियों की समस्याओं का निराकरण करना सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में एक है, इसमें किसी प्रकार की शिथिलता ना बरती जाय। व्यपारियो की समस्या के निस्तारण हेतु सम्बंधित विभागों के अधिकारियों के निर्देश दिए गए और व्यापारियों एवं उद्यमियों से संबंधित समस्याओं का समाधान किया गया। जिलाधिकारी ने सभी ऋण योजनाओं में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए इंडियन और पाइप उद्योगों को विशेष निर्देश दिए। बिजली विभाग को कालपी से संबंधित फीडर की समस्या शीघ्र समाधान करने के लिए बजट की मांग करने का निर्देश दिया गया। साथ ही, हैंडलूम उद्यमियों की बिजली सब्सिडी को समायोजित करने की भी दिशा में कदम उठाने को कहा गया।

पीडब्ल्यूडी विभाग को एट टोल प्लाजा के पास स्थित कृष्णा कोल्ड रोड की समस्या का पैच वर्क शीघ्र पूरा करने का निर्देश दिया गया। इसके साथ ही बिजली विभाग को 150 ट्यूबवेल जो एक ही फीडर से जुड़े हुए हैं, उन्हें पिरान्हा फीडर से जोड़ने के निर्देश दिए गए। गौरी ट्रेडिंग कंपनी, हरिओम मिल्क प्रोडक्ट, और अप सिड फेस 1 में तार फेंसिंग से संबंधित समस्याओं का निस्तारण किया गया। कालपी के हैंडमेड पेपर उद्यमी भोले शंकर की समस्या का भी समाधान किया गया। जिलाधिकारी ने नगर पालिका और पीडब्ल्यूडी विभाग को निर्देशित किया कि वह व्यापारियों से संबंधित समस्याओं का शीघ्र निस्तारण करें।

उसके उपरांत उद्योग बन्धु की बैठक में मौनी मन्दिर के पास स्थित सब्जी मण्डी में भीड़भाड़ की समस्या पर चर्चा की गई। इस संबंध में जिलाधिकारी ने राठ रोड, बजाज एजेन्सी के पास सब्जी मण्डी को स्थानांतरित करने का प्रस्ताव दिया और उक्त स्थान का निरीक्षण करने के निर्देश दिए। विद्युत पोल के स्थानांतरण के लिए विद्युत विभाग के अधिकारियों को निर्देशित किया गया। उपायुक्त राज्य कर अमित कुमार यादव ने जानकारी कहा कि जीएसटी काउंसिल द्वारा स्वीकृत जीएसटी एमनेस्टी स्कीम 2024 के तहत व्यापारी 2017-18, 2018-19 और 2019-20 के बकाया करों पर ब्याज और दंड से छूट प्राप्त कर सकते हैं। इस योजना का लाभ व्यापारी 31 मार्च 2025 तक उठा सकते हैं।

उन्होंने यह भी बताया कि व्यापारी किसी भी समय जीएसटी कार्यालय से पूरी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। सीडीओ, नगर मजिस्ट्रेट , उपायुक्त राज्य कर, जीएमडीसी प्रभात यादव, उद्यमी मनीष गुप्ता, कुलदीप शुक्ला, भोले शंकर, व्यापार बंधु डॉ. दिलीप सेठ और संतोष गुप्ता सहित अन्य अधिकारी व उद्योग व व्यपार बन्धु मौजूद रहे।

## नगरीय क्षेत्र की सूरत बिगाड़ रहे अवैध होर्डिंग

**जालौन, उरई।** अवैध होर्डिंग से नगर पालिका को एक धेले की कमाई नहीं है। इसके बावजूद नगर में जगह जगह अवैध होर्डिंग की बाढ़ आई हुई थी। नगर में जगह जगह टंगे फ्लैक्स बोर्ड पर तस्वीरों के साथ शुभ कामना संदेश नजर आते हैं। यह स्थिति तब भी होती है जब नगर में किसी दल के नेता का दौरा या आमसभा होती है या फिर कोई अन्य त्योहार नजदीक हो। चाहे स्ट्रीट लाइट हो या बिजली के पोल या फिर कोई दीवार ही सही हर जगह आपको होर्डिंग टंगी हुई नजर आ जाएगी। नगर में स्थित स्ट्रीट लाइट के प्रत्येक खंभे पर होर्डिंग टंगी हुई नजर आ रही है। चौराहों पर चारों ओर कहीं लकड़ी के खंभे के सहारे तो कहीं दीवार के सहारे होर्डिंग लगाई गई हैं। इससे जहां वाहन चालकों का ध्यान भंग होता है तो दूसरी ओर बिजली आदि के खंभे पर टंगी होर्डिंग बिजली कर्मचारियों के लिए परेशानी का सबब बनती है। ऐसे में इन अवैध होर्डिंग को हटाने के लिए कई बार मांग की जा चुकी है। लेकिन होर्डिंग न हटने से लोगों को काफी परेशानी हो रही है।

# लक्ष्मी नारायण की पूजा करने वाले को स्वतः ही मिलती है भगवान की कृपा: कथावाचक

संवाददाता। जालौन, उरई

**भगवान** की लीलाएं मानव जीवन के लिए प्रेरणादायक हैं। भगवान कृष्ण ने बचपन में अनेक लीलाएं की। बाल कृष्ण सभी का मन मोह लिया करते थे।

यह बात कथा वाचक पंडित जगमोहन त्रिपाठी ने मां सरस्वती माता मंदिर में आयोजित भागवत कथा सप्ताह ज्ञान यज्ञ के पांचवे दिन उपस्थित श्रोताओं के समक्ष कही। इस मौके पर बाल लीलाओं की मनोहारी झांकी भी प्रस्तुत की गई।

नगर के एकमात्र मां सरस्वती माता मंदिर में आयोजित श्रीमद्भागवत कथा के पांचवें दिन कथा की अमृत वर्षा करते हुए पंडित जगमोहन त्रिपाठी ने कहा कि भगवान कृष्ण ने बचपन में अनेक लीलाएं की। बाल कृष्ण सभी का मन मोह लिया करते थे। नटखट स्वभाव के चलते यशोदा मां के पास उनकी हर रोज शिकायत आती थी। मां उन्हें कहती थी कि प्रतिदिन तुम माखन चुरा के खाया करते हो, तो वह तुरंत मुंह खोलकर मां को दिखा दिया करते थे कि मैंने माखन नहीं खाया।

भगवान श्रीकृष्ण के विवाह प्रसंग को सुनाते हुए बताया कि भगवान श्रीकृष्ण का प्रथम विवाह रुक्मिणी के साथ हुआ था। कहा कि रुक्मिणी स्वयं साक्षात लक्ष्मी है और वह नारायण से दूर रह ही नहीं सकती। जब कोई लक्ष्मी नारायण को पूजता है या उनकी सेवा करता है तो उन्हें भगवान की कृपा स्वत: ही प्राप्त हो जाती है।

इस मौके पर इस मौके पर पुजारी हृदेश नारायण मिश्रा, पारीक्षित अनिल तिवारी, शीतला तिवारी, डॉ. वेद प्रकाश शर्मा, निशा माहेश्वरी, पिंटू तिवारी, बिटोली, श्रवण कुमार तिवारी, शिवकुमारी, प्रदीप तिवारी, अशोक तिवारी, रोहित, शुभ, पूरब, राम दुबे, वरूण, पंकज, अंबर द्विवेदी, चंदन, अरूण आदि मौजूद रहे।

# डीएम ने ली उद्योग बन्धु समिति की बैठक

संवाददाता। फतेहपुर

**जिला** स्तरीय उद्योग बन्धु समिति की बैठक कलेक्ट्रेट महात्मा गांधी सभागार में जिलाधिकारी रविन्द्र सिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। उन्होंने निवेश मित्र पोर्टल से संबंधित आवेदनों का निस्तारण ससमय कराने के निर्देश दिए एवं कोई भी प्रकरण डिफॉल्टर न होने पाए का विशेष ध्यान रखे संबंधित अधिकारी। वित्त पोषण योजना के तहत उद्योग स्थापना के लिए जो ऋण बैंक से स्वीकृत हो गए है, उनका जल्द से जल्द वितरण कराना सुनिश्चित करे। साथ ही जो आवेदन लंबित है उनका ससमय निस्तारण कराए।

उन्होंने कहा कि एच0वी0-02 एवं विद्युत उपभोक्ताओं को सुचारू रूप से आपूर्ति हेतु बिन्दकी टाउन से निर्मित 11 केवी दक्षिणी फीडर का लोड बांटने हेतु नए 11 केवी फीडर का निर्माण मुगल रोड पर बिन्दकी टाउन पावर हाउस से सम्राट मोड तक किया जाना है, के लिए जो पोल लगाने के लिए शेष बचे है, को जल्द से जल्द मानक के अनुसार लगवाने के निर्देश अधिशाषी अभियंता विद्युत बिन्दकी को दिए।

राईस मिल तथा कोल्ड स्टोरेज के लिए शांतिनगर बेरूईहार विद्युत उपकेंद्र से विद्युत आपूर्ति की जा रही है में ट्रिपिग का मामला सामने आया जिस पर जिलाधिकारी ने कहा उच्च स्तरीय जांच हेतु संबंधित को पत्राचार करने के निर्देश संबंधितों को दिए। उन्होंने कहा औद्योगिक क्षेत्र मलवा में जिन औद्योगिक प्रतिष्ठानों को स्वच्छ पेय जल की आवश्यकता है के लिए आवेदन करें, सभी आवेदनों को एकत्र के रिपोर्ट से अवगत कराने के निर्देश उपायुक्त उद्योग को दिए। मिनी औद्योगिक स्थान चकहाता को मूलभूत सुविधाओं से विकसित करने के लिए आगणन बनाते हुए कार्यवाही पूरी की जाय।

उन्होंने कहा कि औद्योगिक क्षेत्र में जो भूखंड पूर्व में आवंटित हो गए है परंतु उनमें उद्योग स्थापित नहीं है एवं निरस्तीकरण की श्रेणी में आते है तो निरस्तीकरण की कार्यवाही पूरी की जाये। साथ ही खाली हुए भूखंडो को नियमानुसार कार्यवाही कर उद्योग लगाने के लिए आवंटित किए जाय। औद्योगिक क्षेत्र मलवा में औद्योगिक प्रतिष्ठानों के लिए जो विद्युत लाइन गई है, में विद्युत तार जर्जर है को नियमानुसार कार्यवाही करते हुए जर्जर तार बदलने के निर्देश संबंधित को दिए।

उन्होंने कहा कि ऐसे विद्युत बिल जिसमें टीडीएस/जीएसटी काटा गया है परंतु उनके खाते में प्रदर्शित नहीं हो रहा है कि सूची उपलब्ध कराने के निर्देश संबंधितों को दिए। जेड सर्टिफिक्रेशन के प्रशिक्षण के संबंध में विस्तार से जेड के प्रतिनिधियों ने जानकारी दी और कहा कि जेड प्रमाणन योजना का उद्देश्य यह है कि एम0एस0एम0ई0 के बीच शून्य दोष और शून्य प्रभाव (जेड) विनिर्माण को बढ़ावा देना और निम्नलिखित उद्देशों के साथ उनके प्रमाणन के लिए जेड मूल्यांकन करनादृगुणवत्ता, उपकरण/प्रणाली और ऊर्जा कुशल विनिर्माण के अनुकूल को बढ़ावा देना है एवं इससे होने वाले फायदे के बारे में जानकारी उद्यमियों को दी।

## सड़क दुर्घटना में घायल हुए शिक्षक की मौत

**मौदहा, हमीरपुर।** कस्बे के बीआरसी कार्यालय में परिषदीय विद्यालय के शिक्षक की सड़क दुर्घटना के उपरांत इलाज के दौरान मौत हो गई ।जिसकी शोक सभा बीआरसी कार्यालय में शिक्षक संगठन ने संवेदना प्रकट करते हुए शिक्षा विभाग के अधिकारियों की संवेदनहीनता पर आक्रोश भी जताया। जानकारी के अनुसार तीस जनवरी को बीआरसी मौदहा में सभी शिक्षक संगठनों एवं अध्यापकों के द्वारा स्वर्गीय शिक्षक अजय कुमार पांडेय प्रधानाध्यापक उच्च प्राथमिक विद्यालय कुनेहटा मौदहा के निधन पर शोक संवेदना प्रकट की गई एवं 2 मिनट मौन रहकर उनकी आत्मा की शांति के लिए शिक्षकों ने अपनी अपनी शोक संवेदना व्यक्त की उनके निधन से सारा शिक्षक समाज शोक में डूबा हुआ है। मगर ग्रुप में सूचना प्रेषित करने के बाद भी शिक्षक के आकस्मिक निधन पर जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी हमीरपुर द्वारा किसी भी तरह की शोक संवेदना व्यक्त नहीं की गई।

# अनुसूचित जाति वित्त विकास निगम के हाल बेहाल, ऋण की वसूली एक फीसदी से कम

संवाददाता। हमीरपुर

**अनुसूचित** जाति वित्त विकास निगम द्वारा गरीबों को दिया गया ऋण की वसूली नही हो पा रही है,साढ़े तीन करोड़ रुपये की वसूली के सापेक्ष हमीरपुर जिले से एक फीसदी से भी कम वसूली हुई है लिहाजा पूरे प्रदेश में जिले का 22 वां स्थान मिला है। शासन ने पत्र लिखकर वसूली करने के आदेश दिये है।

जानकारी के मुताबिक अनूसूचित जाति वित्त विकास निगम द्वारा जिले में पिछले कई सालों में अनूसूचित जाति के गरीब लोगो को ऋण वितरण किया गया था जिले में 351.07 लाख रुपये का ऋण वितरित किया गया है जिसमे मार्जिन मनी भी शामिल है। समय समय पर इस मामले में बैठक भी होती रहती है। जिसमे वसूली के सख्त आदेश दिये जाते रहे है,बताया जाता है कि शासन की हुई समीक्षा बैठक में नवंबर 2024 तक केवल .61 फीसदी यानी एक फीसदी से भी कम वसूली हो पायी है। लिहाजा वसूली की श्रेणी में जिले का प्रदेश में 22वां स्थान बताया जाता है। बताया जाता है कि इसमे ज्यादातर लोन बहुत पुराना है,हालाकि शासन ने समाज कल्याण अधिकारी (प्रशासन) को कड़ा पत्र लिखकर वसूली करने को कहा है।

इधर जिले में समाज कल्याण अधिकारी का प्रशासन की सीट कई सालों से खाली चल रही है जिससे वसूली व ऋण देने का काम ठप चल रहा है। हालाकि गरीबों को वित्त विकास निगम से बडा ऋण नही दिया गया है मगर वसूली के लिये प्रयास न करने से स्थिति खराब होती जा रही है। अधिकारियों का कहना है कि समाज कल्याण विभाग के ब्लाकों में जो एडीओ समाज कल्याण होते है उनकी भी जिम्मेदारी होती है कि वसूली जमा करे ताकि राजस्व को बढाया जा सके। इधर वित्त विकास निगम में सहायक प्रबंधक का पद कई सालों से खाली चल रहा है। संबिदा कर्मी के काम करने से वसूली बेहद प्रभावित हो रही है। शासन के इस मामले को जिलाधिकारी ने गंभीरता से लेते हुये सीडीओ को कार्यवाही कर वसूली बढ़ाने के आदेश दिये है।

हालांकि शासन ने वसूली न होने से ऋण की व्यवस्था धीरे धीरे समाप्त करती जा रही है। समाज कल्याण अधिकारी का कहना है कि इस मामले में प्रयास किया जा रहा है। अपार आईडी में लापरवाही करने वाले खंड शिक्षा अधिकारियों के खिलाफ कार्यवाही के आदेश एडी बेसिक द्वारा दिए गए हैं।

## 152 दिनों से नहर कालोनी में धरना दे रहे ठगी पीड़ित, नहीं हो रही सुनवाई

**फतेहपुर।** बड्स एक्ट 2019 को लागू करके ठगी पीड़ितों का जमा धन वापस कराए जाने की मांग को लेकर 152 दिनों से लगातार ठगी पीड़ित जमाकर्ता परिवार का धरना नहर कालोनी प्रांगण में चल रहा है। इसके बावजूद अभी तक कोई सुनवाई नहीं हुई। जिस पर गुरूवार को ठगी पीड़ितों ने धरना स्थल पर जमकर नारेबाजी करते हुए आंदोलन को आगे भी जारी रखने का ऐलान किया। धरना दे रहे ठगी पीड़ितों की अगुवई कर रहे संगठन के राष्ट्रीय संयोजक मदन लाल आजाद ने कहा कि 152 दिनों से ठगी पीड़ित नहर कालोनी प्रांगण में अपनी आवाज बुलंद कर रहे हैं लेकिन उनकी कोई सुनने वाला नही है। उन्होने कहा कि ठग कंपनीज ने जिले के लोगों को लूटने का काम किया। उन्होने कहा कि ठगी पीड़ित चुप बैठने वाले नहीं है, जब तक उनका बकाया भुगतान नहीं हो जाता तब तक यह आंदोलन जारी रहेगा। राष्ट्रीय संयोजक के नेतृत्व में ठगी पीड़ितों ने जिलाधिकारी को ज्ञापन सौंपकर निवेशकों को उनकी डूबी हुई रकम ब्याज मुआवजा क्षतिपूर्ति के साथ बड्स एक्ट 2019 एवं यूपीपीआईडी एक्ट 2016 के तहत अविलंब वापस कराने के लिए सक्षम अधिकारियों को आवेदन लेने और उन आवेदनों पर विधिसम्मत कार्रवाई करने के आदेश दिए जाएं।

# जिलाधिकारी की अध्यक्षता में हुई सड़क सुरक्षा समिति की बैठक

संवाददाता। बांदा

**जनवरी** जिलाधिकारी श्रीमती जे0 रीभा की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में सड़क सुरक्षा समिति की बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में जिलाधिकारी ने सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाने के लिए पुलिस, परिवहन विभाग द्वारा विद्यालयों में रोड सेफ्टी क्लब का गठन कर बच्चों को सड़क सुरक्षा की जागरूकता के साथ यातायात प्रबन्धन का प्रशिक्षण भी दिलाये जाने के निर्देश दिये। उन्होंने परिवहन विभाग द्वारा समस्त व्यवसायिक वाहनों विशेषकर टैऊक्टर की ट्रालियों में अभियान चलाकर रिफलेक्टर टेप लगाये जाने के निर्देश सम्बन्धित विभागों के अधिकारियों को दिये। उन्होंने शहर के प्रमुख चैराहों कालूकुआं चैराहा, महाराणा प्रताप चैराहा, आदि चैराहों पर टैऊफिक लाइट लगाये जाने के सम्बन्ध में प्रस्ताव तैयार कर शीघ्र प्रस्तुत करने के निर्देश लोक निर्माण विभाग, आरटीओ एवं पुलिस विभाग के अधिकारियों को दिये।

उन्होंने मार्गवार हुई दुर्घटनाओं की समीक्षा करते हुए सड़क मार्ग में होने वाली दुर्घटनाओं की सूचना प्राप्त होने पर तत्काल सहायता उपलब्ध कराने के निर्देश दिये। उन्होंने कोतवाली नगर बॉदा नरैनी मार्ग में अधिक सड़क दुर्घटनायें होने पर सड़क सुरक्षा हेतु आवश्यक उपाय किये जाने के निर्देश सम्बन्धित विभागों के अधिकारियों को दिये। उन्होंने ओवरलोड वाहनों पर नियंत्रण हेतु परिवहन विभाग द्वारा प्रवर्तन की कार्यवाही किये जाने के निर्देश दिये। उन्होंने ओवरलोड वाहनों के विरूद्ध कडी कार्यवाही किये जाने हेतु पुलिस एवं परिवहन विभाग के अधिकारियों को निर्देशित किया।

उन्होंने अधिक संख्या में संचालित हो रहे ई रिक्शा द्वारा जाम की समस्या के निदान हेतु शहर के मुख्य चैराहों को जोडकर ई-रिक्सा के लिए एकल दिशा मार्ग बनाये जाने के निर्देश परिवहन व पुलिस विभाग के अधिकारियों को दिये। उन्होंने जनपद के समस्त कार्यालयों के अधिकारियों/कर्मचारियों को हेलमेट पहनने तथा चार पहिया वाहन के संचालन मे सीटबेल्ट लगाये जाने के निर्देश दिये तथा पेट्रोल पम्पों पर हेलमेट के स्टाल क्रय हेतु लगाये जाने के निर्देश दिये।

## शहादत दिवस पर कांग्रेसियों ने बापू को किया याद

**फतेहपुर।** राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की 77वीं शहादत दिवस पर जिला व शहर कांग्रेस कमेटी के पदाधिकारियों ने कचेहरी पहुंच कर उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें याद किया। तत्पश्चात बापू के बताए गए रास्ते पर चलने का संकल्प दोहराया। कार्यक्रम के दौरान निवर्तमान जिलाध्यक्ष बीरेंद्र सिंह चौहान ने गांधी जी को सही मायने में ईश्वर का अवतार बताते हुए कहा कि उन्होंने अपने कर्मो के बल पर ही सकल विश्व में अपनी छाप छोड़ी और शांति के बल पर बड़े से बड़े युद्ध को जीतने की प्रेरणा दी। निवर्तमान शहर अध्यक्ष मो0 आरिफ गुड्डा ने कहा कि आज हमारा भारत सत्यमेव जयते शब्द को चरितार्थ करते हुए विश्व में अग्रणी भूमिका निभा रहा है।

## क्विक न्यूज

### दो सड़क दुर्घटनाओं में एक अधेड़ और एक बालिका की मौत

**संडीला, हरदोई।** अलग-अलग हुई दो सड़क दुर्घटनाओं में एक बालिका समेत दो लोगों की मौत हो गयी। प्राप्त जानकारी के अनुसार कोतवाली संडीला के अंतर्गत शुक्लाहार निवासी 50 वर्षीय परमेश्वर पुत्र रामकुमार देर शाम साइकिल से दूध बेचने जा रहे थे। बेनीगंज संडीला मार्ग पर बहादुरपुर बरगद तिराहे के पास एक तेज रफ्तार कार ने उनकी साइकिल को टक्कर मार दी जिससे वे गंभीर रूप से घायल हो गए। इनकी इलाज के दौरान दुखद मौत हो गयी। दूसरी दुर्घटना नया गांव करीम नगर मार्ग पर हुई। बताया जाता है कि नया गांव से जा रहा एक ई-रिक्शा एक बच्चे को बचाने के लिए अनियंत्रित हो गया और सड़क के किनारे खड़ी हुई संदीप पाल की पुत्री आस्था पर जाकर पलट गया। इसके नीचे वह बालिका दब गयी। ग्रामीणों ने रिक्शा सीधा करके बालिका को उसके नीचे से निकाला। उसे पहले सीएचसी लाया गया जहां से उसे ट्रॉमा सेंटर भेजा गया। रास्ते में ही आस्था की मौत हो गयी।

### अमर जवान चौक की पुर्नस्थापना न होने से नाराज़गी

**संडीला, हरदोई।** लखनऊ हरदोई रोड पर स्थापित अमर जवान चौक की पुर्नस्थापना की मांग करते हुए जिलाधिकारी को प्रार्थना पत्र भेजे गए हैं। लखनऊ हरदोई रोड पर संडीला चौराहे पर 22 जून 2018 को अमर जवान चौक की स्थापना की गयी थी। इस शुभारंभ तत्कालीन जिलाधिकारी पुल्कित खरे, नपाप के चेयरमैन मो0 रईस अंसारी तथा तत्कालीन पुलिस अधीक्षक विपिन मिश्रा की उपस्थिति में हुई थी। लगभग 6 महीना पूर्व जब नैशनल हाई वे निर्माण प्रारंभ हुआ तो इस चौक को यह आश्वासन देकर हटा दिया गया कि हाई वे निर्माण होते ही यहां पर अमर जवान चौक की स्थापना की जाएगी लेकिन हाई वे निर्माण पूरा होने के बाद भी अभी तक इस चौक की पुर्ननिर्माण के लिए कोई कार्रवाई नहीं की गयी। बताते चलें कि विभिन्न राष्ट्रीय पर्वों पर नगर के प्रबुद्ध लोग तथा स्थानीय नेतागण इस स्थान पर भारत के वीर जवानों को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए आया करते थे। इसकी स्थापना न होने से लोगों में व्यापक नाराज़गी है।

### राजस्व विभाग की कार्यवाही से खाली हुई सरकारी जमीन

**खागा, फतेहपुर।** थाना सुल्तानपुर घोष के अंतर्गत आने वाले राजस्व ग्राम सराएं ऐरायां में सरकारी भूमि पर कब्जा मुक्त कराने हेतु उपजिलाधिकारी एवं तहसीलदार के निर्देशन एवं नायब तहसीलदार के कुशल पर्यवेक्षण में हल्का लेखपाल के साथ ही अन्य राजस्व कर्मियों की उपस्थिति में कब्जे की नियत से बांधी गई तार को जेसीबी से हटवाया है। बताते चलें कि राजस्व ग्राम सराए ऐरायां में गाटा संख्या 186 (रकबा 0.4690 हेक्टेयर) जोकि बंजर भूमि में दर्ज है जिस पर गांव के कुछ लोगों द्वारा कब्जा करने की नियत से तार बांधकर अवैध कब्जा किया गया था जिसकी सूचना पर उच्च अधिकारियों के निर्देशन एवं नायब तहसीलदार विजय प्रकाश त्रिपाठी के कुशल पर्यवेक्षण में राजस्व निरीक्षक कोतला दया सागर, क्षेत्रीय लेखपाल अनामिका सिंह एवं हल्का लेखपाल अतुल कुमार द्वारा अवैध कब्जा हटवाया गया।

### विजय-आशीष के साथ ताइक्वांडो टीम लखनऊ रवाना

**फतेहपुर।** राजधानी लखनऊ के स्टेडियम में आयोजित दो दिवसीय ताइक्वांडो चैंपियनशिप में भाग लेने के लिए जिले से ताइक्वांडो खिलाड़ियों की टीम विजय आशीष के साथ लखनऊ रवाना हो गई। प्रतियोगिता में विजय पताखा फहराकर वापस लौटने पर टीम का फिर स्वागत किया जाएगा। ताइक्वांडो एसोसिएशन ऑफफतेहपुर के चेयरमैन किशन मेहरोत्रा ने टीम के खिलाड़ियों को तिलक लगाकर विजय आशीष के साथ लखनऊ के लिए रवाना किया। उन्होने बताया कि लखनऊ स्थित स्टेडियम में तीस व इक्तीस जनवरी को ताइक्वांडो चैंपियनशिप का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें जिले से ग्यारह खिलाड़ी प्रतिभाग कर रहे हैं। उन्होने बताया कि बचपन स्कूल कॉलक्टरगंज से कर्णिका सिंह, दित्य पांडेय, अंजलि मिश्रा, तनुज बाजपेई, आशु मौर्य, आरव अग्रहरि, वत्सल श्रीवास्तव, सानिध्य कुमार, साक्षी चौधरी, मदर सुहाग पब्लिक स्कूल से दीक्षा सिंह, अनुज साहू, आदर्श वर्मा, कोच भारत वर्मा और शिव कुमार शामिल हैं।

### एमपी से अपहरण कर लाई युवती बरामद

**सुमेरपुर।** मध्य प्रदेश पुलिस स्थानीय पुलिस के साथ मिलकर कस्बे में नवीन गल्ला मंडी के समीप छापा मारकर युवक के साथ युवती को गिरफ्तार कर साथ ले गई है। गुरुवार को सुबह मध्य प्रदेश के मुरैना जनपद की पुलिस थाने में दाखिल हुई और स्थानीय पुलिस को साथ लेकर नवीन गल्ला मंडी के समीप पेट्रोल पंप के पीछे बनी बस्ती में छापा मारकर एक मकान से एक युवक युवती को गिरफ्तार किया। युवक के खिलाफयुवती के अपहरण का मुकदमा मुरैना जनपद के किसी थाने में दर्ज हुआ है। मध्य प्रदेश पुलिस युवक की लोकेशन कस्बे में मिलने के उपरांत यहां पहुंची थी और दोनों को दबोच कर साथ ले गई है।

# गांव में हुई पीडीए जनचौपाल में भाजपा पर जमकर बोला गया हमला

संवाददाता। राठ, हमीरपुर

**विधानसभा** क्षेत्र और विकास खंड राठ के सरगांव में पीडीए जनचौपाल कार्यक्रम में सपानेता राजपूत चंद्रवती वर्मा ने कहा कि भाजपा सरकार धर्म जाति की घिनौनी राजनीति करके मानवता में जहर घोलने का काम कर रही है जो देश हित में नहीं है ऐसी सरकार को उखाड़ फेंकने का काम करना है। पीडीए जनचौपाल के माध्यम से गांव हम लोगो को गांव तक समाजवादी पार्टी की सोच और आम जनता के साथ हो रहे भाजपा द्वारा अन्याय और अत्याचार की तस्वीर से अवगत कराने का उद्देश्य है । उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार ने नये नये तमाम कानून बना दिये जिससे हर आदमी परेशान है। उन्होंने कहा कि इनकी हर योजना केवल धन कमाने और आम जनता का खून चूसना है। उन्होंने गांव में लगने पानी वाली टंकियों बिजली मीटरों पर बोलते हुए कहा कि आज तक गांव में टंकी से पानी नहीं पहुंचा बिजली नहीं मिल रही है लेकिन हजारों के बिल का बोझ गांव की जनता पर डाल दिया। भाजपा रोजी रोजगार की बात नहीं करेगी केवल जाति धर्म की बात करके अपना उल्लू सीधा करते है। उन्होंने कहा कि जब भाजपाई पिछड़ा के घर जायेंगे तो अगड़ा और दलित की बुराई करेंगे और जब दलित के घर जायेंगे तो पिछड़ा और अगड़ा की बुराई करेंगें।

उन्होंने कहा कि हमें ऐसी धोखेबाज पार्टी को हटाने के लिए आगामी विधानसभा चुनाव 2027 में सपा प्रत्याशी को जिताकर एक मजबूत सपा की सरकार बनाने का काम करेंगे। भाजपा सरकार में मंहगाई चर्म सीमा पर है जिससे किसानों का भारी नुकसान हो रहा है।इस मौके पर प्रताप सिंह सोमवंशी गोकुल राजपूत शैलेंद्र राजपूत जगदीश मिश्रा पुष्पेंद्र अहिरवार नीरज मुखिया लखन यादव बलवान पाल सियाराम पाल राजू यादव दुलीचंद अनुरागी सियाराम आचार्य अरविन्द राजपूत पुष्पेंद्र चौधरी रामस्वरूप सहित सैकड़ों ग्रामीणों की उपस्थिति रही।

## कुष्ठ उन्मूलन के तहत मना कुष्ठ निवारण दिवस

**लखीमपुर, खीरी।** राष्ट्रीय कुष्ठ उन्मूलन कार्यक्रम के अन्तर्गत 30 जनवरी को कुष्ठ निवारण दिवस मनाया गया। जिसके अन्तर्गत जिलाधिकारी की अध्यक्षता में मुख्य चिकित्सा अधिकारी द्वारा कुष्ठ निवारण दिवस के अवसर पर जिला अधिकारी के संदेश पढ़ा गया। साथ ही यह भी बताया कि कुष्ठ रोग एक दीर्घ कालिक संक्रामक रोग है जो कि माइकोबैक्टीरियम लेप्री नामक जीवणु से होता है। इसको हेन्सन रोग के नाम से भी जाना जाता है, जो मुख्यत: हाथो, पैरो की परिधीय तंत्रिका, त्वचा को प्रभावित करता है। इस बार की थीम आइए मिलकर जागरूकता फैलाए भ्रांतियों को दूर भगायें, कुष्ठ प्रभावित कोई पीछे छूट न जाये। आयोजित किया जायेगा। जिसमें सभी अधिकारी एवं कर्मचारी की उपस्थिति में कुष्ठ रोग से जुडे कलंक एवं भेदभाव की समस्या को दूर करने के उदेश्य से एवं जागरूकता बढाने के लिये स्पर्श कुष्ठ जागरूकता अभियान 30 जनवरी से 13 फरबरी 2025 तक आयोजित किया जाएगा।

# शहीद दिवस पर आयोजित हुई गोष्ठी, बापू को किया नमन

**गुरसहायगंज, कन्नौज।** रविवार को नगर के गोमती देवी आदर्श इण्टर कालेज परिसर में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की पुण्यतिथि पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें प्रबन्धक/उ.प्र. कांग्रेस कमेटी पूर्व प्रदेश सचिव विजय मिश्र सहित कांग्रेसियों ने महात्मा गांधी के चित्र पर पुष्पांजलि व माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित की। गुरुवार को प्रबन्धक/उ.प्र. कांग्रेस कमेटी पूर्व प्रदेश सचिव विजय मिश्र ने छात्र-छात्राओं को संबोधित करते हुये बताया कि महात्मा गांधी जिन्हें नेता जी सुभाष चन्द्र बोस नें राष्ट्रपिता की उपाधि से संबोधित किया था। तभी से पूरा राष्ट्र उन्हे राष्ट्रपिता या बापू के नाम से पुकारनें लगे। रवीन्द्र नाथ टैगोर नें गांधी जी को महात्मा उपाधि प्रदान की थी। स्वाधीनता आन्दोलन में महात्मा गांधी ने अग्रणी भूमिका निभाते हुये सभी धर्मो को एक धागे में पिरोकर देश को आजादी दिलाने का कार्य किया था। उनके बलिदान और त्याग को व्यर्थ नहीं जाने दिया जायेगा। 30 जनवरी 1948 को नाथूराम गोडसे नामक व्यक्ति ने गोली मारकर हत्या कर दी थी वह उस समय बिडला मंदिर में पूजा करने जा रहे थे। इसलिये 30 जनवरी को इतिहास में काले दिन के रुप मे मनाया जाता है।

# सीडीपीओ के निर्देशन में 50 आंगनबाड़ी केंन्द्रों पर हुआ ड्राई राशन का वितरण

**निघासन-खीरी।** सीडीपीओ पूजा त्रिपाठी के निर्देशन में स्थानीय विकास क्षेत्र के 50 आंगनबाड़ी केंद्रों पर माह अक्टूबर 2024 हेतु प्राप्त ड्राई राशन का वितरण किया गया। जानकारी के अनुसार ग्राम पंचायत भैरमपुर के भैरमपुर प्रथम , द्वितीय एवं तृतीय , ग्राम पंचायत भेड़ौरा के मसुरहा , नया ताल , पुराना ताल , ग्राम पंचायत गंगानगर के गंगानगर , रामनगर , ग्राम पंचायत मूडाबुजुर्ग के पचपेड़ी , विछपरी एवं महाराज नगर , ग्राम पंचायत ग्राम पंचायत ढखेरवा खालसा के घनश्याम पुरवा रंगई पुरवा पसियन पुरवा एवं मुन्ना पुरवा , ग्राम पंचायत खैरी गढ़ के खैरीगढ़ , अवध नगर , कुंदन नगर , रहीम पुरवा , एवं महेंद्र नगर ग्राम पंचायत सिंगहा कला के सिंगहा कला प्रथम द्वितीय एवं तृतीय , ग्राम पंचायत हरसिंहपुर के रघु नगर हरसिंहपुर एवं जुम्मन पुरवा , ग्राम पंचायत शीतलपुर , ग्राम पंचायत लुधौरी के चूरा टांडा , जगनपुरवा एवं पुरैना ग्राम पंचायत हरद्वाही के चितिहा , मथुरा पुरवा एवं पकरिया पुरवा ग्राम पंचायत सिसवारी , ग्राम पंचायत बल्लीपुर के बल्लीपुर प्रथम द्वितीय , तृतीय ,चतुर्थ एवं पंचम सहित लगभग 50 आंगनबाड़ी केंद्रों पर लाभार्थियों को राशन वितरित किया गया । इस समाचार के लिखे जाने तक राशन वितरण संबंधी कोई शिकायत प्राप्त नहीं हुई ।

# सड़क सुरक्षा समिति की बैठक में डीएम ने कसे सिस्टम के पेंच

संवाददाता। फतेहपुर

**जिला** स्तरीय सड़क सुरक्षा समिति की बैठक कलेक्ट्रेट महात्मा गाँधी सभागार में जिलाधिकारी रविन्द्र सिंह की अध्यक्षता में संपन्न हुई। उन्होंने सड़क सुरक्षा से सम्बंधित पिछली बैठक मे दिये गए निर्देश के अनुपालन आख्या की समीक्षा करते हुए विस्तृत चर्चा की। उन्होंने एआरटीओ एवं पुलिस विभाग को निर्देश दिए कि सर्विस रोड एवं हाईवे पर वाहनों को किसी भी दशा में न खड़े होने दे और हाईवे पर वाहन खड़ा पाए जाने पर नियमानुसार कार्यवाही की जाय। उन्होंने टीएसआई से कहा लखनऊ बाईपास में ट्रक सड़क के किनारे खड़े रहते है, को स्थान चिन्हित करते हुए सड़क से बाहर खड़ा कराए इसका कड़ाई से अनुपालन सुनिश्चित किया जाय। बांदा बहराइच मार्ग (एनएच-232) में फतेहपुर से यमुना नदी तक साइनेज, रिफ्लेक्टर एवं ब्रेकर की, कस्बे एवं जहां आवश्यकता है, वहां लगाए/बनाए जाय ताकि दुर्घटनाएं न हो सके साथ ही सड़क के किनारे पटरी भी सही कराये जाने तथा जहां पटरी पर अतिक्रमण है को हटवाने व सोल्डर ठीक कराने के निर्देश एनएचआई रायबरेली को दिए।

उन्होंने क्षेत्राधिकारी यातायात को निर्देश दिए कि राष्ट्रीय राजमार्गदृ2, एनएचदृ232 में ऐसे स्थान जहां वर्ष में 02 एक्सीडेंट (मृत्यु) हुए है, कि रिपोर्ट से अवगत कराए। साथ ही पेट्रोल पंप से 01 किमी पहले साइन बोर्ड (पेट्रोल पंप) लगवाने एवं अनुपालन आख्या से अवगत कराने हेतु जिला पूर्ति अधिकारी को निर्देशित किया गया। उन्होंने जिला विद्यालय निरीक्षक, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी एआरटीओ को निर्देशित किया कि सड़क सुरक्षा जागरूकता कार्यक्रम कराते रहे। उन्होंने कहा कि वाहन चालको द्वारा यातायात के नियमों का उलंघन बारदृबार करते हुए पाए जाने पर ड्राइविंग लाईसेंस नियमानुसार निरस्त करते हुए कार्यवाही करें, साथ ही विभिन्न मध्यमो से प्रचारदृप्रसार भी कराया जाय। उन्होंने कहा कि पुलिस विभाग, परिवहन विभाग संवेदनशीलता के साथ प्रवर्तन की कार्यवाही निरंतर करें। वाहन चालको को यातायात के नियमों का पालन करने, दोपहिया वाहन चालको को हेलमेट, चार पहिया वाहन चालको को सीट बेल्ट लगाने के लिए जागरूक किया जाय। यातायात नियमों, रेट्रो रिफ्लेक्टिव टेप के बारे में जागरूकता शिविर की रिपोर्ट परिवहन विभाग द्वारा प्रस्तुत नहीं करने पर कड़ी नाराजगी व्यक्त की।

इस अवसर अपर जिलाधिकारी (वित्त/राजस्व) अविनाश त्रिपाठी, मुख्य चिकित्सा अधीक्षक, अधिशासी अभियंता लोक निर्माण विभाग, एआरटीओ प्रवर्तन, जिला विद्यालय निरीक्षक, एन0एचआई0 रायबरेली, कानपुर के पदाधिकारी, टीएसआई यातायात, अधिशाषी अधिकारी नगर पालिका परिषद सदर, समिति के सदस्य अशोक तपस्वी सहित संबंधित उपस्थित रहे।

## भाजपा नेता ने पटुका पहना किया कथा व्यास का सम्मान

**गुरसहायगंज, कन्नौज।** क्षेत्र के ग्राम लाडपुर में आयोजित श्रीमद् भागवत कथा के सात दिवसीय अनुष्ठान के भव्य समापन पर पहुंचे पूर्व भाजपा नगर अध्यक्ष दीपू शर्मा ने कथा व्यास को पटुका पहनाकर सम्मानित किया। इस दौरान उन्होनें धर्म प्रेमियों को आशीर्वाद प्राप्त करने का संदेश दिया। इस दौरान उन्होंने कहा कि श्रीमद्ध भावगत कथा धार्मिक चेतना और भक्ति की भावना को बढाती है। श्रीमद् भागवत कथा के समापन दिवस पर पूर्व भाजपा नगर अध्यक्ष दीपू शर्मा सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लिया और भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं का श्रवण किया। कथा के दौरान कथा व्यास ने भक्ति, धर्म और सत्कर्मों की महत्ता पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि श्रीमद् भागवत कथा केवल एक ग्रंथ नहीं, बल्कि जीवन को सद्मार्ग पर ले जाने का एक दिव्य माध्यम है। कथा समापन के पश्चात आयोजित भण्डारा कार्यक्रम में सैकड़ों श्रद्धालुओं ने प्रसाद ग्रहण किया।

# चार ठगी पीड़ितों की धनराशि बैंक खाते में कराई गई वापस

**फतेहपुर।** एनसीआरपी पोर्टल एवं साइबर ठगी पीड़ितों के दिए गए शिकायती प्रार्थना पत्र की जांच के अनुक्रम में साइबर क्राइम पुलिस थाने की टीम ने सार्थक प्रयास करते हुए माह जनवरी में चार पीड़ितो के कुल 258722 रूपये की धनराशि बैंक खाते में पुन: वापस कराई। बताते चलें कि 11 दिसंबर 2024 को राजेश सिंह लोधी ने साइबर क्राइम थाना में उपस्थित होकर प्रार्थना पत्र प्रस्तुत कर बताया कि अज्ञात व्यक्तियों ने पंजाब नेशनल बैंक खाते से नौ लाख रूपये से अधिक की धनराशि आनलाइन माध्यम से ट्रांसफर करा लिए। जिसकी जानकारी उन्हे मैसेज आने पर हुई। तत्काल अभियोग पंजीकृत करते हुए आवेदक से ट्रांसफर किये गये रूपयो का विवरण प्राप्त करते हुये संल्पित खातो का फ्रीज कराया गया। न्यायालय से आदेश प्राप्त कर ठगी गई धनराशि में से 158535 रूपए आवेदक के खाते में सकुशल वापस करा दी गई। शेष अन्य रूपयो को रिकवर करने के संबंध में भी सार्थक कार्यवाही प्रचलित है।

इसी तरह 17 नवंबर 2024 को राहुल कुमार ने प्रार्थना पत्र प्रस्तुत कर बताया कि उनका मोबाइल कही गुम हो गया। जिसके उपरान्त उनके खाते से 50000 रूपये की धनराशि आनलाइन माध्यम से ट्रांसफर कर ली गई। साइबर क्राइम पुलिस थाना टीम ने त्वरित कार्यवाही करते हुये आवेदक से ट्रांसफर किये गये रूपयो का विवरण प्राप्त करते हुए संल्पित खाते को फ्रीज कराया। ठगी गई सम्पूर्ण धनराशि आवेदक के खाते में सकुशल वापस करा दी गई। वहीं 30 सितंबर 2024 को विजयपाल ने प्रार्थना पत्र प्रस्तुत कर बताया कि अज्ञात व्यक्तियो ने उन्हे काल कर गंदी वीडियो देखने व पुलिस में शिकायत दर्ज होने की बात बताकर 57 हजार रूपये की धनराशि आनलाइन माध्यम से ट्रांसफर करा लिया। साइबर क्राइम पुलिस टीम ने त्वरित कार्यवाही करते हुये अभियोग पंजीकृत कर घटना में संलिप्त एक अभियुक्त को गिरफ्तार कर जेल भेजा।

## बलात्कार के आरोप में कांग्रेस सांसद राकेश राठौर गिरफ्तार

सीतापुर (भाषा)। सीतापुर से कांग्रेस के सांसद राकेश राठौर को बलात्कार के आरोप में बृहस्पतिवार को उनके आवास से गिरफ्तार कर लिया गया। पुलिस सूत्रों ने यहां बताया कि उच्च न्यायालय द्वारा इलाहाबाद उच्च न्यायालय से अग्रिम जमानत याचिका खारिज होने के बाद अपने आवास पर संवाददाता सम्मेलन कर रहे थे। इसी दौरान कोतवाली नगर पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। पुलिस के मुताबिक, सांसद राठौर को न्यायिक प्रक्रिया के तहत गिरफ्तार किया गया है और आगे की कानूनी कार्रवाई की जा रही है। कांग्रेस सांसद राकेश राठौर के खिलाफ इसी महीने 15 जनवरी को एक महिला से शादी का झांसा देकर बलात्कार करने के आरोप में प्राथमिकी दर्ज की गई है। महिला ने अपनी शिकायत में आरोप लगाया है कि राठौर ने शादी का झांसा देकर उसके साथ कई बार बलात्कार किया है। सूत्रों के मुताबिक, महिला ने शिकायत में कहा है कि राठौर पिछले चार साल से उससे शादी करने और उसे राजनीतिक करियर बनाने का झांसा देकर उससे बलात्कार कर रहे थे। इस मामले में स्थानीय अदालत से जमानत याचिका खारिज होने के बाद सांसद राठौर ने इलाहाबाद उच्च न्यायालय का रुख किया था मगर वहां से भी उन्हें राहत नहीं मिली। उसके बाद इस मामले में उनकी गिरफ्तारी का रास्ता साफ हो गया था।

# रेल प्रशासन ने मौनी अमावस्या के दिन 364 आउटवर्ड गाड़ियों का किया परिचालन

### यात्रियों की सुविधा हेतु पिछले 42 घंटे में 335 मेला स्पेशल गाड़ियों का संचालन, महाकुंभ मौनी अमावस्या स्नान पर्व पर रेल प्रशासन की चिकित्सा टीम ने 9285 श्रद्धालुओं को दिया प्राथमिक उपचार

**महाकुंभ नगर।** महाकुंभ में आने वाले श्रद्धालुओं को रेलवे सुविधाओं का सुखद अनुभव देने के लिए रेलवे प्रशासन सिविल प्रशासन के साथ मिलकर कार्य कर रहा है। रेल प्रशासन द्वारा मौनी अमावस्या के दिन संगम में स्नान कर घर वापसी करने वाले श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए प्रयागराज के विभिन्न स्टेशनों से 364 आउटवर्ड गाड़ियों का परिचालन किया गया। इस अवधि में रेलवे द्वारा 77 इंवर्ड गाड़ियों का परिचालन भी किया गया। आउटवर्ड गाड़ियों में 142 नियमित और 222 महाकुंभ मेला विशेष गाड़ियां शामिल रहीं। इसी क्रम में 29 जनवरी एवं आज दिनांक 30 जनवरी को 18 बजे तक को महाकुंभ में मौनी अमावस्या के महापर्व के अवसर पर महाकुंभ में आए श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए प्रयागराज के सभी स्टेशनों से रिकार्ड 335 ट्रेन का परिचालन किया गया। 29 जनवरी को 222 विशेष गाड़ियों का परिचालन किया गया। इसमें प्रयागराज जंक्शन से 104 प्रयागराज छिवकी से 23 नैनी से 17 सूबेदारगंज से 13 प्रयाग से 23 फाफामऊ से 5 प्रयागराज रामबाग से 9 एवं झूंसी से 28 गाड़ियों का परिचालन किया गया। इसी क्रम में आज प्रयागराज के सभी स्टेशनों से रिकार्ड 113 विशेष गाड़ियों का परिचालन किया गया। इसमें प्रयागराज जंक्शन से 57 प्रयागराज छिवकी से 03 नैनी से 06 सूबेदारगंज से 05 प्रयाग से 11 फाफामऊ से 5 प्रयागराज रामबाग से 7 एवं झूंसी से 19 सहित यात्रियों की सुविधा हेतु पिछले 24 और 18 घंटे में 335 मेला स्पेशल गाड़ियों का परिचालन किया गया।

मेला की पूर्ण अवधि में रेलवे द्वारा लगभग 13450 गाड़ियों के परिचालन की योजना बनाई गई है। जिसमें 10028 नियमित गाड़ियां और 3400 से अधिक विशेष गाड़ियों का परिचालन शामिल है। अब तक 2000 से अधिक विशेष गाड़ियों का परिचालन किया जा चुका है। रेलवे ने स्पष्ट किया है कि सारी गाड़ियों का परिचालन योजनानुसार किया जा रहा है। पूर्व दी गई सूचना के आलोक में कुछ गाड़ियों को मार्ग परिवर्तित करके चलाया जा रहा है। जबकि कुछ गाड़ियों का टर्मिनल स्टेशन प्रयागराज की जगह सूबेदारगंज किया गया है। इसी क्रम में उत्तर मध्य रेलवे के चिकित्सा विभाग ने महाकुंभ के दौरान उत्कृष्ट सेवाएं प्रदान करते हुए मौनी अमावस्या स्नान के दिन 9285 श्रद्धालुओं सहित 11 जनवरी 2025 से 29 जनवरी 2025 तक 70000 श्रद्धालुओं को चिकित्सा सेवा प्रदान की। इस दौरान विभिन्न स्टेशनों पर बनाए गए आब्जर्वेशन रूम में भी गंभीर स्थिति में लाये गए श्रद्धालुओं का भी इलाज किया गया एवं स्थिति सामान्य होने के उपरांत अग्रिम इलाज हेतु रेलवे अस्पताल एवं शहर के अन्य अस्पतालों में भर्ती कराया गया। यात्रियों की सुविधा हेतु प्रयागराज स्टेशन से सभी दिशाओं के लिए आवश्यकतानुसार गाड़ियों का लगातार संचालन किया जा रहा है। महाप्रबंधक उपेन्द्र चन्द्र जोशी वॉर रूम से तथा मंडल रेल प्रबंधक हिमांशु बडोनी कंट्रोल रूम से लगातार स्थिति की मोनिटरिंग कर रहे हैं। श्रद्धालुओं की संख्या जैसे ही बढ़नी शुरू हुई उत्तर मध्य रेलवे ने खुसरोबाग में स्थित होल्डिंग पॉइंट को ओपरेट कर दिया।

## महाकुंभ के बीच प्रयागराज के लिए किराया हुआ स्थिर, उड़ानें बढ़ाईं : इंडिगो

**नई दिल्ली।** एयरलाइन कंपनी इंडिगो ने बृहस्पतिवार को कहा कि प्रयागराज के लिए उड़ानों का किराया स्थिर हो गया है और उसने महाकुंभ के लिए इस मार्ग पर उड़ानों की संख्या बढ़ाकर 900 कर दी है। यात्रियों की बढ़ती मांग के चलते प्रयागराज की उड़ानों पर किराए में बढ़ोतरी को लेकर लगातार चिंता बनी हुई है और सरकार ने एयरलाइन कंपनियों से टिकट की कीमतें स्थिर रखने के साथ-साथ इस मार्ग पर और अधिक उड़ानें संचालित करने को कहा है। महाकुंभ 13 जनवरी से शुरू हुआ है और 26 फरवरी को समाप्त होगा। पहले से सक्रिय की गई अतिरिक्त क्षमता के अलावा, इंडिगो ने कहा कि वह अपने नेटवर्क के अन्य हिस्सों से क्षमता का पुनः आवंटन करने पर भी काम कर रही है, ताकि यात्रियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए अधिक उड़ानें जोड़ी जा सकें। इंडिगो ने बयान में कहा, एयरलाइन ने किराए को स्थिर रखना भी सुनिश्चित किया है और अपने सभी ग्राहकों को सर्वोत्तम संभव यात्रा अनुभव प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। बुधवार को सूत्रों ने बताया था कि इंडिगो ने प्रयागराज की उड़ानों के किराए में 30-50 प्रतिशत तक की कमी की है। एयरलाइन के अनुसार, उसने महाकुंभ अवधि के दौरान प्रयागराज हवाई अड्डे से उड़ानों की संख्या और सीट क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि की है। बयान के अनुसार, इस विशेष अवधि के लिए, एयरलाइन अब प्रयागराज सोके लिए 1,65,000 से अधिक सीटों का संचालन करेगी, जो हवाई अड्डे की इसकी सामान्य क्षमता से दोगुनी से भी अधिक है। कंपनी ने बयान में कहा, इस अवधि के दौरान, इंडिगो प्रयागराज को भारत में 10 स्थानों से जोड़ेगी। इनमें दिल्ली, मुंबई, बेंगलुरु, हैदराबाद, लखनऊ, रायपुर और भुवनेश्वर से मौजूदा संपर्क के अलावा अहमदाबाद, चेन्नई और जयपुर से सीधे संपर्क भी शामिल होंगे। इसके अलावा, इंडिगो ने कहा कि उसने प्रयागराज सोके लिए मौजूदा मार्गों पर बड़े विमान ए321 के परिचालन और फेरे बढ़ाकर क्षमता में वृद्धि की है। इंडिगो ने कहा, कुल मिलाकर, एयरलाइन प्रयागराज सोके लिए लगभग 900 उड़ानें संचालित करेगी, जो कि 490 नियमित सेवाओं की तुलना का लगभग दोगुना है। प्रयागराज की उड़ानों के लिए अत्यधिक किराया वसूले जाने केबीच नागर विमानन मंत्रालय ने बुधवार को एयरलाइन कंपनियों से उचित टिकट कीमतें बनाए रखने को कहा था। साथ ही, उपभोक्ता मामलों के मंत्री प्रल्हाद जोशी ने विमानन नियामक नागर विमानन महानिदेशालय (डीजीसीए) से कीमतों को कम करने के लिए कदम उठाने का आग्रह किया था।

## महाप्रसाद से महाकुंभ में मिट रही सैकड़ों श्रद्धालुओं की भूख

**महाकुंभ नगर।** महाकुंभ में इन दिनों पूरे शहर को रोशनी से जगमगा दिया गया है। वहीं शहर में आगंतुकों की भीड़ से जहां शहर में हर जगह भीड़ और ट्रैफिक जाम की स्थिति देखी जा रही हैए तो वहीं इन कठिनाइयों के बीच श्रद्धालुओं की इच्छा मेला स्थल में पहुच कर पवित्र गंगा और संगम में श्रद्धा की डुबकी लगाकर अपने आराध्य को अपना तनमन समर्पित करने की है। इस बीच इन श्रध्दालुओं की पेट की भूख और प्यास के साथ थकान को मिटाने अदाणी समूह ने बीड़ा उठाया है। अदाणी समूह ने विश्व के सबसे बड़े और सनातम धर्म के प्रचारक इस्कॉन के संयुक्त तत्वाधान में निःशुल्क भोजन प्रसाद वितरण का आयोजन किया है। जिसमें हर दिन सुबह से रात तक निर्बाध लाखों श्रद्धालुओं को स्वादिष्ठ और सात्विक भोजनप्रसाद परोसा जा रहा है। अदाणी और इस्कान समूह की इस जुगल बंदी ने पूरे मेलाक्षेत्र में घूमकर घूमकर अब तक करोड़ों आगंतुकों को स्वादिष्ठ भोजन महाप्रसाद परोसा है।

## महाकुंभ में श्रद्धालुओं की सुरक्षा की प्रतिबद्धता

**प्रयागराज।** केस कंस्ट्रक्शन इक्विपमेंट ने महाकुंभ में भाग लेने वाले लाखों श्रद्धालुओं की सुरक्षा के लिए प्रोजेक्ट मिलाप लॉन्च किया है। यह एक अभूतपूर्व पहल है जिसका उद्देश्य महकुंभ मेले में भाग लेने वाले लाखों श्रद्धालुओं की सुरक्षा सुनिश्चित करना है। इस पहल को एमरे करज़ली, शलभ चतुर्वेदी और पुनीत विद्यार्थी की उपस्थिति में आधिकारिक तौर पर हरी झंडी दिखाई गई। सीएनएच की सीएसआर हैड कविता साह ने कहा कि परियोजना मिलाप सामाजिक जिम्मेदारी और सामुदायिक कल्याण के प्रति हमारी निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाता है। इस प्रोजेक्ट के माध्यम सेए हमारा लक्ष्य महाकुंभ मेले में भाग लेने वाले लाखों तीर्थयात्रियों के लिए एक सुरक्षित अनुभव सुनिश्चित करना है।

# फडणवीस ने राउत के गठबंधन संबंधी दावे को खारिज किया

**मुंबई (भाषा)।** महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेन्द्र फडणवीस ने बृहस्पतिवार को शिवसेना (उबाठा) नेता संजय राउत के इस दावे को खारिज कर दिया कि सत्तारूढ़ भाजपा के कई नेता उद्धव ठाकरे नीत पार्टी के साथ गठबंधन करना चाहते हैं। दिल्ली में पत्रकारों द्वारा पूछे गए एक सवाल पर फडणवीस ने कहा कि सामान्य बैठकों को राजनीतिक रूप से नहीं देखा जाना चाहिए। राउत ने भाजपा नेता चंद्रकांत पाटिल और शिवसेना प्रमुख उद्धव ठाकरे के करीबी सहयोगी मिलिंद नार्वेकर के बीच यहां हुई बातचीत के बाद टिप्पणी की।



शिवसेना (उद्धव बालासाहेब ठाकरे) नेता राउत ने बृहस्पतिवार को दावा किया कि सत्तारूढ़ भाजपा के कई नेता उद्धव ठाकरे के नेतृत्व वाली पार्टी के साथ गठबंधन करना चाहते हैं। राउत ने कहा कि हालांकि शिवसेना (उबाठा) के भीतर ऐसी कोई चर्चा नहीं हुई है, लेकिन पार्टी के कुछ सदस्य भी ऐसी ही भावनाएं रख सकते हैं। उनकी यह टिप्पणी बुधवार रात विधायक पराग अलवानी की बेटी के विवाह के मौके पर आयोजित प्रीतिभोज में ठाकरे के सहयोगी मिलिंद नार्वेकर एवं भाजपा के मंत्री चंद्रकांत पाटिल के बीच कुछ हंसी-मजाक वाली बातचीत के बाद आई है। प्रीतिभोज में ठाकरे भी मौजूद थे।

भाजपा नेता अलवानी मुंबई के उपनगरीय क्षेत्र विले पार्ले से तीन बार विधायक रह चुके हैं। भाजपा के एक पदाधिकारी ने बताया कि ठाकरे के अलवानी के साथ अच्छे संबंध हैं। समारोह में शामिल लोगों ने बताया कि नार्वेकर ने पाटिल से मजाक में कहा, "यह अच्छा है कि पत्रकार यहां नहीं हैं... अन्यथा, वे कहेंगे कि गठबंधन की बातचीत चल रही है।

पाटिल ने चुटकी लेते हुए कहा, "यह एक स्वर्णिम क्षण होगा। राउत ने कहा, पाटिल भाजपा की पुरानी पीढ़ी से हैं जो शिवसेना-भाजपा संबंधों के महत्व को समझते हैं। यह 25 वर्षों तक अच्छी तरह से काम करता रहा। राउत के दावों को खारिज करते हुए फडणवीस ने दिल्ली में संवाददाताओं से कहा, "किसी को भी इतना भोला नहीं होना चाहिए... लोग प्रीतिभोज में मिलें और गठबंधन बन जाए या दल करीब आ जाएं। इस कार्यक्रम में सत्तारूढ़ महायुति के नेता भी शामिल हुए (जिसमें भाजपा, एकनाथ शिंदे की शिवसेना और अजित पवार की पार्टी राकांपा शामिल है)। फिल्म निर्माता मधुर भंडारकर, शिवाजी साटम और सचिन खेडेकर सहित मनोरंजन उद्योग के लोग भी समारोह में शामिल हुए। इससे पहले राउत ने कहा कि भाजपा में कई लोग पाटिल की स्वर्णिम क्षण वाली भावनाओं को साझा करते हैं। उन्होंने कहा, मुझे संदेह है कि एकनाथ शिंदे की शिवसेना कितने समय तक भाजपा के साथ रहेगी। हम इंतजार करो और देखो की स्थिति में हैं।यह पूछे जाने पर कि क्या शिवसेना (उबाठा) के नेता भी भाजपा के साथ गठबंधन की ऐसी भावना रखते हैं, राउत ने कहा, "हो सकता है। हम भाजपा के कुछ नेताओं की वजह से एमवीए के साथ गए। आपने हमारी पार्टी को विभाजित कर दिया और एकनाथ शिंदे को वह दे दिया जिसकी हम मांग कर रहे थे। उन्होंने कहा, हमने पहले भी कई बार इस तरह की चर्चा की है। हालांकि शिवसेना (उबाठा) में अभी तक ऐसी कोई बातचीत नहीं हुई है।

## हिंदू महासभा ने मनाया महात्मा गांधी की हत्या का जश्न, गोडसे को दिया सम्मान

**मेरठ।** (भाषा) अखिल भारत हिंदू महासभा ने बृहस्पतिवार को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की पुण्यतिथि पर उनकी हत्या का जश्न मनाया और उनके हत्यारे नाथूराम गोडसे को सम्मान देकर विवाद खड़ा कर दिया। हिंदू महासभा से कथित तौर पर जुड़े गोडसे ने दिल्ली के बिड़ला हाउस में 30 जनवरी 1948 को प्रार्थना सभा के दौरान गांधी की गोली मारकर हत्या कर दी थी। उसे 1949 में अंबाला जेल में फांसी दे दी गई थी। अखिल भारत हिंदू महासभा के सदस्य अमर शहीद नाथूराम गोडसे नाना आप्टे धाम में एकत्र हुए और गोडसे के कार्यों को याद किया। महासभा के वरिष्ठ नेता और नाना आप्टे धाम के संस्थापक पंडित अशोक शर्मा ने कार्यक्रम का नेतृत्व किया। समारोह में हवन और पूजा आदि की गई तथा हनुमान चालीसा का पाठ किया गया।

## एससी एसटी मामले में इंफोसिस के सह-संस्थापक गोपालकृष्णन के खिलाफ जांच, सुनवाई पर रोक

**बेंगलुरु (एपी)।** कर्नाटक उच्च न्यायालय ने इंफोसिस के सह-संस्थापक सेनापति क्रिस गोपालकृष्णन और 16 अन्य के खिलाफ अनुसूचित जाति अनुसूचित जनजाति (एससी एसटी) अत्याचार निवारण अधिनियम के तहत दर्ज मामले की जांच और सुनवाई पर रोक लगा दी है। न्यायमूर्ति एसआर कृष्ण कुमार ने आरोपियों की ओर से दायर याचिका पर सुनवाई के दौरान बुधवार को यह आदेश पारित किया। उन्होंने कहा, तथ्यों के ज्ञापन के साथ विधिवत दाखिल याचिका में बताए गए कारणों को स्वीकार किया जाता है। तदनुसार, अनुलग्नक-सीसी की मूलाप्रमाणित प्रति पेश करने से फिलहाल छूट दी जाती है। न्यायमूर्ति कुमार ने फैसले में कहा, इस बीच, याचिकाकर्ताओं के खिलाफ सदाशिवनगर पुलिस थाने में दर्ज अपराध संख्या 17।2025 में आगे की सभी कार्वाईजांच और बेंगलुरु में एलएक्सएक्स अतिरिक्त सिटी सिविल एवं सत्र न्यायाधीश तथा विशेष न्यायाधीश की अदालत में दायर पीसीआर संख्या ।।2025 में आगे की सभी कार्यवाही पर सुनवाई की अगली तारीख तक रोक लगाई जाती है। भारतीय विज्ञान संस्थान (आईआईएससी) के सतत प्रौद्योगिकी केंद्र में संकाय सदस्य रहे सन्ना दुर्गाप्पा की शिकायत पर 2010 से 2020 के बीच घटी विभिन्न घटनाओं को लेकर गोपालकृष्णन और 16 संकाय सदस्यों के खिलाफ अनुसूचित जातिअनुसूचित जनजाति अत्याचार निवारण अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया गया था। दुर्गाप्पा ने दावा किया था कि 2014 में उन्हें हनी ट्रैप मामले में झूठा फंसाया गया और बाद में नौकरी से बर्खास्त कर दिया गया। उन्होंने आरोप लगाया कि उन्हें जातिसूचक गालियां और धमकियां दी गईं, क्योंकि वह आदिवासी बोवी समुदाय से आते हैं। गोपालकृष्णन ने अपने खिलाफ दायर मामले की जांच एवं सुनवाई पर लगी रोक पर कहा, मैंने हमेशा निष्पक्षता, न्याय और हर किसी के साथ सम्मानजनक व्यवहार करने में विश्वास किया है, चाहे उनकी पृष्ठभूमि जो भी हो। मुझे गहरा दुख है कि हाशिए पर रहने वाले समुदायों की रक्षा के लिए बनाए गए कानून का इस्तेमाल मेरे खिलाफ झूठे आरोप लगाने के लिए किया गया। उन्होंने कहा कि वह 2022 से परिषद के अध्यक्ष के रूप में आईआईएससी से जुड़े हुए हैं, जबकि कथित घटनाएं 2014 की हैं। गोपालकृष्णन ने कहा कि आईआईएससी के पास कार्यकारी प्रबंधन के दायरे में निष्पक्ष और पारदर्शी जांच के लिए स्पष्ट नीतियां हैं। उन्होंने कहा, माननीय कर्नाटक उच्च न्यायालय ने कल मेरे और अन्य लोगों के खिलाफ एससीाएसटी (अत्याचार निवारण) अधिनियम के तहत दर्ज मामले में आगे की सभी जांच और कार्यवाही पर रोक लगा दी। चूंकि, मामला अदालत में विचाराधीन है, इसलिए मैं आगे कोई टिप्पणी नहीं करूंगा।

## वक्फ अधिनियम में संशोधन से मुसलमान और हाशिए पर चले जाएंगे : पारा

श्रीनगर। पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) नेता वहीद पारा ने बृहस्पतिवार को कहा कि वक्फ अधिनियम में संशोधन देश के मुसलमानों पर हमला है, जो अल्पसंख्यक समुदाय को और हाशिए पर धकेल सकता है। जम्मू-कश्मीर के पुलवामा से विधायक पारा ने एक्स पर एक पोस्ट में आरोप लगाया कि भारत में मुसलमान पहले से ही सबसे हाशिए पर पड़े समुदायों में से हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि मुसलमानों को सड़कों पर पीट-पीटकर मार दिया जाता है, उनके घरों और व्यवसायों को ध्वस्त कर दिया जाता है और उनके नेताओं को जेल भेज दिया जाता है। पारा ने कहा, अब, वक्फ अधिनियम में भाजपा के नए संशोधन इस निरंतर हमले में एक और कदम का संकेत देते हैं, इस बार मुस्लिम धार्मिक एवं धर्मार्थ संस्थानों की नींव को निशाना बनाया गया है। सुधार की परिभाषा के तहत, ए बदलाव वक्फ संपत्तियों पर नियंत्रण हासिल करने का प्रयास है, जिससे मुसलमानों को हाशिए पर धकेला जा सके और उनकी संपत्तियों पर सरकार की पकड़ मजबूत हो सके।

# कला-विज्ञान के बीच की दूरी पाटने की जरूरत : नोबेल विजेता वेंकी रामकृष्णन

**जयपुर।** (भाषा) नोबेल पुरस्कार विजेता वेंकी रामकृष्णन ने बृहस्पतिवार को यहां जयपुर साहित्य उत्सव के उद्घाटन के अवसर पर कहा कि एआई (आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस) जैसी तकनीकें केवल तकनीकी विशेषज्ञता की ही मांग नहीं करती हैं बल्कि ए मानवीय इतिहास और मूल्यों की समझ को भी जरूरी बनाती हैं जिसके बिना किसी भी प्रस्तावित समाधान के खोखला या नुकसानदायक होने का भी खतरा है।

गुलाबी नगरी के क्लार्क आमेर होटल में आयोजित साहित्य के सबसे बड़े उत्सवों में से एक जयपुर साहित्योत्सव (जेएलएफ) के 18वें संस्करण में वेंकी रामकृष्णन ने कला और विज्ञान के बीच भेद को पाटने की जरूरत को रेखांकित किया।

जेएलएफ में हर उम्र, हर नस्ल और वर्ग के श्रोताओं के विशाल सागर के समक्ष भारत की कला, संगीत, साहित्य, परंपरा और विज्ञान की विविध धाराओं की प्रस्तुतियां दी जाएंगी। इसी के उद्घाटन सत्र में रामकृष्णन ने अपने अध्यक्षीय भाषण में महत्तर समानुभूति के विचार को आगे बढ़ाया। अंग्रेजी उपन्यासकार सी पी स्नो के महत्वपूर्ण निबंध दी टू कल्चर्स का हवाला देते हुए उन्होंने कहा कि विज्ञान और गणित अस्पष्ट प्रतीत होते हैं और कुछ लोगों के लिए तो ए लगभग चमत्कारिक हैं।

रामकृष्णन ने कहा, हम ऐसे युग में जी रहे हैं जिसमें कृत्रिम बुद्धिमत्ता से लेकर जीन एडिटिंग



और जलवायु विज्ञान तक पर तकनीकी प्रगति हावी है। इनमें से कई नवाचारों में मानव अस्तित्व को गहन तरीके से नया रूप देने की क्षमता है। लेकिन जैसा कि स्नो ने 1959 में चेताया था, आम जनता में अक्सर मूलभूत वैज्ञानिक साक्षरता तक का अभाव होता है।

उन्होंने कहा कि यहां तक कि वैज्ञानिक भी अपनी संकीर्ण विशेषज्ञताओं के बाहर इन प्रगति को मुश्किल ही समझ पाते हैं। रामकृष्णन ने कहा कि ऐसे समय में जब रोजगार, खाद्य सुरक्षा, भविष्य की महामारियों के लिए तैयारी और तेजी से परिष्कृत होते हथियारों जैसे मुद्दे केंद्र में हैं, एआई और जेनेटिक इंजीनियरिंग जैसी प्रौद्योगिकियां जबरदस्त संभावनाओं के साथ-साथ जबरदस्त जोखिम भी लेकर आई हैं। उन्होंने कहा, इन सब के लिए तकनीकी विशेषज्ञता से कहीं अधिक की जरूरत है। ए मानव इतिहास, संस्कृति और मूल्यों की समझ तथा समानुभूति की मांग करते हैं। इस व्यापक संदर्भ के बिना हम जो समाधान पेश करते हैं उनके उथला, अल्पकालिक और यहां तक कि नुकसानदायक होने का खतरा है। रामकृष्णन के अनुसार, हमें मानविकी, साहित्य, दर्शन और इतिहास की आवश्यकता है ताकि वैज्ञानिक आविष्कारों के नैतिक और सामाजिक निहितार्थों से निपटने के लिए ढांचा एक प्रदान किया जा सके।उनका नजरिया कहता है कि समय से पहले लोगों को विशेषज्ञ बनाने से ज्यादा एक व्यापक पाठ्यक्रम जिसमें विज्ञान और मानविकी दोनों शामिल हों, को पेश किए जाने की जरूरत है ताकि व्यापक शिक्षित आबादी तैयार की जा सके। स्नो का निबंध बौद्धिक अलगाव के खतरे में झांकता है और एक ऐसी संस्कृति के पोषण की तात्कालिकता को रेखांकित करता है जहां ज्ञान, उत्सुकता और रचनात्मकता अलग अलग क्षेत्रों तक सीमित न रहें। सत्तर वर्षीय रामकृष्णन ने कहा, इन दोनों के बीच के अंतर को पाटने की हमारी क्षमता पर भविष्य निर्भर करता है। इस मायने में जेएलएफ एक शानदार पुल है लेकिन हमें अपनी शिक्षा व्यवस्था समेत ऐसे बहुत से पुलों की जरूरत है। इसलिए मुझे कहना चाहिए कि आइए, इस विभाजन को पाटने के लिए बातचीत शुरू करें। इस साल जेएलएफ में नोबेल पुरस्कार विजेता, बुकर पुरस्कार विजेता, पत्रकार, नीति निर्माता और प्रशंसित लेखकों जैसे 300 से अधिक दिग्गज शामिल होंगे। प्रतिभागियों में अभिजीत बनर्जी, एस्तेर डफ्लो, अमोल पालेकर, इरा मुखोटी, गीतांजलि श्री, डेविड हरे, मानव कौल, जावेद अख्तर, राहुल बोस, युवान एवेस, शाहू पटोले और कल्लोल भट्टाचार्य शामिल हैं। इस बार जयपुर बुकमार्क (जेबीएम) प्रकाशन सम्मेलन अपने 12वें वर्ष का जश्न मनाएगा, जिसमें अनुवाद, कहानी कहने के नवाचारों और प्रकाशन के भविष्य को आकार देने में एआई की भूमिका पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा।

## पेज 1 का शेष

### ईसी..

इस सब पर कोई कार्रवाई नहीं की जा रही है। पंजाब के सीएम ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, एक तरह से दिल्ली पुलिस और चुनाव आयोग भाजपा के इशारे पर पंजाबियों को बदनाम कर रहे हैं, जो बहुत निंदनीय है। दिल्ली की उनकी समकक्ष और कालकाजी की उम्मीदवार आतिशी ने आरोप लगाया कि भाजपा के लोग खुलेआम पैसे, जूते, चप्पल और चादरें बांट रहे हैं, लेकिन पुलिस यह नहीं देख पा रही है और छापे के लिए एक निर्वाचित मुख्यमंत्री के आवास पर पहुंच गई। दिल्ली पुलिस भगवंत मान के दिल्ली स्थित घर पर छापा मारने पहुंच गई है। भाजपा के लोग दिनदहाड़े पैसे, जूते और चादरें बांट रहे हैं, जो दिखाई नहीं देता। इसके बजाय वे एक निर्वाचित मुख्यमंत्री के आवास पर छापा मारने जाते हैं। वाह भाजपा! दिल्ली के लोग 5 तारीख को अपना जवाब देंगे! इसके अलावा, नई दिल्ली के मुख्य चुनाव अधिकारी (सीईओ) ने स्पष्ट किया कि यह कार्रवाई सी विजिल ऐप पर की गई शिकायत के जवाब में की जा रही है। हालांकि, उन्होंने कहा कि सुरक्षाकर्मी अधिकारियों को परिसर में प्रवेश की अनुमति नहीं दे रहे हैं। सीईओ नई दिल्ली ने कहा, यह कपूरथला हाउस, नई दिल्ली में नकदी के कथित वितरण के संबंध में सी विजिल शिकायत आईडी 1282744 के जवाब में की गई कार्रवाई को स्पष्ट करने के लिए है, जो एसी-40, नई दिल्ली के अधिकार क्षेत्र में आता है। शिकायत सी विजिल ऐप के माध्यम से प्राप्त हुई थी, एक ऐसा प्लेटफ़ॉर्म जहाँ कोई भी नागरिक आदर्श आचार संहिता के कथित उल्लंघन की रिपोर्ट कर सकता है।एक्स पर एक पोस्ट में कहा गया, मानक प्रोटोकॉल के अनुसार, पास में तैनात नई दिल्ली एसी की फ्लाइंग स्क्वायड टीम (एफएसटी) को नियंत्रण कक्ष द्वारा शिकायत की जांच करने और निर्धारित 100 मिनट की समय सीमा के भीतर उचित कार्रवाई करके इसे बंद करने का काम सौंपा गया था। इसमें कहा गया है कि एफएसटी तुरंत कपूरथला हाउस में कथित उल्लंघन के स्थान पर पहुंच गई। ट्वीट में लिखा, हालांकि, सुरक्षा कर्मियों द्वारा टीम को शिकायत की पुष्टि करने के लिए परिसर में प्रवेश करने की अनुमति नहीं दी जा रही है। इस बीच, भाजपा के वरिष्ठ नेता और केंद्रीय मंत्री रवनीत सिंह बिट्टू ने चुनाव आयोग से यहां कपूरथला हाउस आने-जाने वाले पंजाब के सभी विधायकों, मंत्रियों और मुख्यमंत्री के आधिकारिक वाहनों की जांच करने का आग्रह किया। उन्होंने आरोप लगाया कि दिल्ली चुनाव के दौरान वितरण के लिए इन वाहनों में पंजाब से नकदी ले जाई जा रही थी। उन्होंने दावा किया, विधायक और मंत्री अपने आधिकारिक वाहनों का इस्तेमाल पंजाब से नकदी ले जाने और इसे दिल्ली में पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान के आधिकारिक आवास कपूरथला हाउस में डंप करने के लिए कर रहे हैं। बिट्टू ने कहा, मुख्यमंत्री का काफिला विभिन्न विधानसभा क्षेत्रों में जा रहा है और पंजाब से लूटी गई नकदी बांटी जा रही है। चुनाव आयोग को इसके खिलाफ तुरंत कार्रवाई करनी चाहिए।

### आम आदमी...

जवाब मांगे हैं, ऐसा न करने पर वह उनसे आगे कोई संदर्भ लिए बिना उचित निर्णय लेगा। आयोग ने पांच सवाल पूछे, जिसमें पूछा गया, 'हरियाणा सरकार ने यमुना में किस तरह का जहर मिलाया है? जहर की मात्रा, प्रकृति और पता लगाने के तरीके, यह कहां मिला, डीजेबी के किन इंजीनियरों ने इसका पता लगाया और कैसे और कहां।' चुनाव आयोग ने केजरीवाल को एक प्रमुख सार्वजनिक व्यक्ति और पूर्व मुख्यमंत्री के रूप में इस तरह के बयानों के 'भयानक परिणामों' की याद दिलाई, जो हरियाणा और दिल्ली में पहचाने जाने वाले समूहों के बीच संभावित रूप से 'स्थायी निशान' छोड़ सकते हैं। आयोग ने अपने पत्र में कहा, आपके संदर्भित बयान पर आपके जवाब पर वापस आते हुए, आयोग ने प्रथम दृष्टया पाया है कि यमुना नदी के जहर के बारे में आपके आरोप विभिन्न समूहों के बीच वैमनस्य और दुश्मनी को बढ़ावा देते हैं और सबसे गंभीर व्याख्या के आधार पर भी कुल मिलाकर सार्वजनिक अव्यवस्था और अशांति को बढ़ावा देते हैं। चुनाव आयोग ने दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री को यह भी चेतावनी दी कि उनके बयान हरियाणा और दिल्ली के निवासियों के बीच संबंधों को नुकसान पहुंचा सकते हैं, जिससे स्थायी विभाजन हो सकता है। चुनाव आयोग ने लिखा है, एक प्रमुख सार्वजनिक व्यक्ति और एक पूर्व मुख्यमंत्री के रूप में, आयोग को आपको उन भयंकर परिणामों की याद दिलाने की आवश्यकता नहीं है जो आपके ऐसे बयानों और कार्यों के कारण हो सकते हैं और दो राज्यों के निवासियों के सुस्पष्ट समूहों और/या हरियाणा राज्य और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली में एक साथ रहने वाले लोगों के बीच स्थायी निशान छोड़ सकते हैं। चुनाव आयोग के पत्र में उल्लेख किया गया है कि एक अभियान के दौरान केजरीवाल ने आरोप लगाया था कि हरियाणा दिल्ली में 'नरसंहार' करने के लिए यमुना नदी को 'जहर' दे रहा है, जिसे कथित तौर पर दिल्ली जल बोर्ड के इंजीनियरों ने पकड़ा और रोका। आयोग ने बताया कि अपने बयान के तथ्यात्मक और कानूनी पेचीदगी को स्पष्ट करने के बजाय, केजरीवाल ने नदी में उच्च अमोनिया सामग्री का संदर्भ देकर इसे सही ठहराना चुना, एक मामला जिसे अलग से संबोधित किया जा रहा है। हालांकि, चुनाव आयोग ने स्वीकार किया कि वह इस तर्क से सहमत है कि पर्याप्त और स्वच्छ पानी की उपलब्धता एक शासन संबंधी मुद्दा है और इस बात पर जोर दिया कि सभी संबंधित सरकारों को इसे सभी के लिए सुरक्षित करने के लिए काम करना चाहिए। आयोग ने कहा, आयोग को इस स्थिति पर किसी के विवाद का कोई कारण नहीं मिलता है, और कहा कि यह मामले को सरकारों और एजेंसियों की क्षमता और विवेक पर छोड़ देगा, चुनाव अवधि के दौरान जल-बंटवारे या प्रदूषण के मुद्दों पर हस्तक्षेप करने से परहेज करेगा, जो लंबे समय से और भविष्य के निहितार्थों के साथ हैं, जहां सुप्रीम कोर्ट और राष्ट्रीय हरित न्यायाधिकरण (एनजीटी) के निर्देश शामिल हैं।

### चैट जीपीटी...

मंत्री ने कहा, एल्गोरिदमिक दक्षता बहुत मायने रखती है, यह आज दुनिया की तुलना में बहुत कम लागत और कम समय में एक मॉडल तैयार कर सकती है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि आने वाले कुछ महीनों में भारत के पास 'विश्व स्तरीय आधारभूत मॉडल' होगा। इंडिया एआई मिशन के तहत सरकार ने भारत के एआई पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करने के लिए 10,372 करोड़ रुपये के परिव्यय को मंजूरी दी थी - इसका एक प्रमुख स्तंभ एआई कंप्यूटिंग इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए 10,000 जीपीयू को सक्षम करना था। 18,693 जीपीयू बड़ी कम्प्यूट शक्ति प्रदान करेंगे, यह देखते हुए कि डीपसीक को 2,000 जीपीयू पर और चैटयूजीपीटी संस्करण 4 को 25,000 जीपीयू पर प्रशिक्षित किया गया था। भारत एआई मिशन के तहत अनुप्रयोगों पर, भारत का ध्यान स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा, कृषि, रसद, मौसम पूर्वानुमान और अन्य जैसे क्षेत्रों में जनसंख्या-स्तरीय समस्याओं को हल करने के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की शक्ति का उपयोग करने पर रहा है। एआई सुरक्षा के लिए स्वीकृत परियोजनाओं में मशीन अनलर्निंग (आईआईटी जोधपुर), सिंथेटिक डेटा जेनरेशन (आईआईटी रुड़की), एआई पूर्वाग्रह शमन रणनीति, व्याख्यात्मक एआई फ्रेमवर्क (डिफेंस इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड टेक्नोलॉजी पुणे), गोपनीयता बढ़ाने की रणनीति (आईआईटी दिल्ली, ट्रिपलआई दिल्ली, टीईसी) एथिकल सर्टिफिकेशन फ्रेमवर्क, एआई एल्गोरिथम ऑडिटिंग टूल और एआई गवर्नेंस टेस्टिंग फ्रेमवर्क शामिल हैं।

### कोहली...

महात्मा गांधी की पुण्यतिथि पर उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित करने राजघाट गए थे। डीडीसीए सचिव अशोक शर्मा ने पीटीआई से कहा , मैं 30 साल से अधिक समय से दिल्ली क्रिकेट से जुड़ा हूं लेकिन रणजी ट्रॉफी मैच में ऐसा नजारा नहीं देखा। इससे साबित होता है कि कोहली की लोकप्रियता का कोई सानी नहीं। उन्होंने कहा , यह इसलिए भी और चुनौतीपूर्ण हो गया क्योंकि दर्शक उसी समय स्टेडियम में आ रहे थे जब बाहर प्रधानमंत्री मोदी की वीआईपी मूवमेंट थी। कड़े प्रोटोकॉल और पुलिस के निर्देशों के बाद हमें जनता के लिए दूसरा स्टैंड खोलना पड़ा। दिल्ली पुलिस ने भी स्टेडियम के भीतर कुछ अफरातफरी के बाद बयान जारी करके बताया कि कोई अप्रिय घटना नहीं हुई है। पुलिस ने बयान में कहा , अतिरिक्त दरवाजे तुरंत खेल दिए गए। किसी को कोई चोट नहीं लगी है और स्थिति नियंत्रण में है। आखिरी बार किसी घरेलू मैच में इस तरह की भीड़ तब देखी गई थी जब सचिन तेंदुलकर ने 2013 में हरियाणा के लाहली में मुंबई के लिए आखिरी प्रथम श्रेणी मैच खेला था।

# दक्षिणी राज्यों का जनसंख्या वृद्धि पर जोर देना अच्छा विचार नहीं: सुब्बाराव

**भाषा।** हैदराबाद

**केंद्र** द्वारा राज्यों को दिए जाने वाले कोष में असमानताओं को दूर करने के लिए कुछ दक्षिणी राज्यों के जनसंख्या वृद्धि का आह्वान करने के बीच आरबीआई के पूर्व गवर्नर डी सुब्बाराव ने बृहस्पतिवार को कहा कि आबादी बढ़ाना कोई समाधान नहीं है। यहां तीसरे बीपीआर विट्ठल स्मारक व्याख्यान सत्र को संबोधित करते हुए सुब्बाराव ने कहा कि भाजपा, जो पहले मुफ्त की सुविधाओं को रेवड़ी संस्कृति कहती थी, अब दिल्ली विधानसभा चुनाव प्रचार में योजनाएं पेश करने में आम आदमी पार्टी (आप) के साथ प्रतिस्पर्धा कर रही है। उन्होंने हालांकि कहा कि एक गरीब देश में जहां लाखों लोग दैनिक जीवन के लिए संघर्ष करते हैं, सरकार के लिए लोगों की मदद करना अनिवार्य है। कुछ राज्यों द्वारा महिलाओं को सरकारी बसों में मुफ्त यात्रा की पेशकश के बारे में भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के पूर्व प्रमुख ने कहा कि इस बात का कोई सबूत नहीं है कि यह उनकी मदद करने का सबसे बेहतर तरीका है।

सुब्बाराव ने कहा, मैंने 50 साल तक सरकारी नौकरी की है। जब मैं पहली बार सेवा में आया, तो हमारी सबसे बड़ी प्राथमिकता जनसंख्या नियंत्रण, परिवार नियोजन थी और हमारा मानना था कि जनसंख्या वृद्धि सभी विकास को बाधित कर रही है। लेकिन मैंने कभी नहीं सोचा था कि हम एक ऐसा दिन देखेंगे जब राजनीतिक नेता कहेंगे कि हमें अपनी जनसंख्या बढ़ानी चाहिए। उन्होंने कहा, इसका स्पष्ट संदेश यह है कि कुछ राज्य जिन्होंने जनसंख्या नियंत्रण में अच्छा काम किया है, वे केंद्रीय सहायता से वंचित हो रहे हैं। लेकिन मेरा मानना है कि जनसंख्या बढ़ाना इसका समाधान नहीं है, क्योंकि भारत एक देश है। हमारे यहां अभी भी समग्र स्तर पर जनसंख्या की समस्या है। केरल सरकार ने हाल में केंद्रीय करों में अपने हिस्से को वर्तमान 41 प्रतिशत से बढ़ाकर 50 प्रतिशत करने और विभाज्य पूल में राज्यों के लिए प्रति व्यक्ति आधारित हिस्से को 45 प्रतिशत से घटाकर 30 प्रतिशत करने की मांग की। विभाज्य पूल सकल कर राजस्व का वह हिस्सा है जिसे केंद्र और राज्यों के बीच वितरित किया जाता है। जनसंख्या अनुपात के आधार पर आवंटन को बिना किसी पक्षपात के शीघ्र वितरित किए जाने का अनुरोध करते हुए, तेलंगाना सरकार ने हाल में बजट पूर्व बैठक में कहा था कि केंद्र प्रायोजित योजनाओं के संबंध में उसे कम धनराशि दी गई है। आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन. चंद्रबाबू नायडू और उनके तमिलनाडु समकक्ष एम के स्टालिन ने हाल के दिनों में अधिक बच्चे पैदा करने की वकालत की थी। सुब्बाराव ने कहा कि केंद्र सरकार को राजनीतिक दलों द्वारा स्वीकार्य सीमा से अधिक मुफ्त में दी जाने वाली सुविधाओं पर नियंत्रण के लिए एक तंत्र की आवश्यकता है।

उन्होंने कहा, मुफ्त की सुविधाओं को लेकर सबसे बड़ी निराशा यह है कि तीन साल पहले प्रधानमंत्री ने बयान दिया था कि मुफ्तखोरी पर लगाम लगनी चाहिए। इसके दो महीने बाद उत्तर प्रदेश चुनाव में, भाजपा मुफ्त की सुविधाएं उपलब्ध कराने में लगी रही। और आज, वे (भाजपा) मुफ्त में सब कुछ देने के मामले में आम आदमी पार्टी से मुकाबला कर रहे हैं। सुब्बाराव ने कहा कि केंद्र और राज्यों के बीच बेहतर सहयोग भी विकसित भारत के लिए महत्वपूर्ण है।

# केरल: कविता पर शराब इकाई को मंजूरी दिलाने का आरोप बीआरएस नेता ने किया खंडन

**मलप्पुरमाहैदराबाद।** (भाषा) कांग्रेस नेता वी. डी. सतीशन ने बृहस्पतिवार को आरोप लगाया कि तेलंगाना के पूर्व मुख्यमंत्री के. चंद्रशेखर राव की बेटी और दिल्ली आबकारी नीति कथित घोटाले में आरोपी बीआरएस नेता के. कविता ने पलक्कड़ में शराब बनाने वाली इकाई को मंजूरी दिलाने के सिलसिले में केरल का दौरा किया था हालांकि पूर्व सांसद ने इन आरोपों का खंडन किया है। कविता ने सतीशन के रोपों को निराधार और अपमानजनक करार दिया और कहा कि अगर कांग्रेस नेता ने अपना झूठा बयान वापस नहीं लिया तो वह कानूनी कदम उठाएंगी। केरल विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष सतीशन ने आरोप लगाया, वह (कविता) ओएसिस कमर्शियल प्राइवेट लिमिटेड कंपनी के लिए केरल आई थीं। मीडिया को संबोधित करते हुए सतीशन ने राज्य में कविता के ठहरने की जांच कराए जाने की मांग की।उन्होंने आरोप लगाया, शराब निर्माण इकाई के आवंटन की आड़ में कई रहस्यमय सौदे हुए थे। उन्होंने दोहराया कि यह निर्णय संबंधित सरकारी विभागों से परामर्श किए बिना लिया गया। सतीशन ने कहा कि मुख्यमंत्री पिनराई विजयन और आबकारी मंत्री एम बी राजेश ने एकतरफा तरीके से ओएसिस कमर्शियल प्राइवेट लिमिटेड कंपनी को शराब निर्माण संयंत्र स्थापित करने की अनुमति देने का निर्णय लिया था।कविता ने आरोपों पर जवाब देते हुए कहा कि उन पर लगाए गए आरोप कांग्रेस द्वारा सस्ती राजनीतिक सुर्खियां बटोरने के लिए हताश और बेवजह प्रयास के अलावा और कुछ नहीं हैं। बीआरएस नेता ने कहा कि उनकी प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचाने के उद्देश्य से सतीशन के मनगढ़ंत दावों को वह स्पष्ट रूप से खारिज करती हैं। उन्होंने हैदराबाद में पीटीआई-भाषा से कहा, मैं यह स्पष्ट कर दूं कि अगर सतीशन अपने झूठे बयानों को तत्काल और बिना शर्त वापस नहीं लेते हैं, तो मैं इस दुर्भावनापूर्ण अपमान के लिए उन्हें जवाबदेह ठहराने व अपनी ईमानदारी की रक्षा की खातिर कठोर कानूनी कार्वाई करने के लिए बाध्य होऊंगी। इससे पहले बुधवार को विपक्षी गठबंधन यूडीएफ ने अपने दावों के समर्थन में कैबिनेट नोट जारी किया था।

# फ्रांस के साथ राफेल-एम, स्कार्पीन समझौते पर जल्द मुहर लगाएगा भारत

**नई दिल्ली।** (भाषा) भारत अपनी नौसेना की शक्ति बढ़ाने के लिए फ्रांस से राफेल लड़ाकू जेट के 26 नौसैनिक संस्करण और तीन स्कॉर्पीन पनडुब्बी की खरीद पर अगले कुछ हफ्ते में मुहर लगा सकता है। मामले से वाकिफ लोगों ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी। हालांकि, फिलहाल यह स्पष्ट नहीं है कि राफेल-एम और स्कॉर्पीन की खरीद संबंधी घोषणा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की आगामी पेरिस यात्रा के दौरान की जाएगी या नहीं। मोदी कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) पर आधारित दो दिवसीय शिखर सम्मेलन में हिस्सा लेने के लिए 10-11 फरवरी को पेरिस की यात्रा करेंगे। शिखर सम्मेलन से इतर उनके फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों से द्विपक्षीय वार्ता करने की संभावना है। मामले से वाकिफ लोगों ने बताया कि दोनों समझौते अंतिम चरण में हैं और सुरक्षा मामलों पर कैबिनेट समिति (सीसीएस) को इन पर विचार करना होगा। जुलाई 2023 में रक्षा मंत्रालय ने फ्रांस से 22 राफेल (एम) जेट की खरीद को मंजूरी दी थी, मुख्य रूप से स्वदेशी रूप से निर्मित विमान वाहक आईएनएस विक्रांत पर तैनाती के लिए। मंत्रालय ने फ्रांस से तीन स्कॉर्पीन पनडुब्बी की खरीद को भी स्वीकृति दे दी थी। भारतीय नौसेना के प्रोजेक्ट-75 के तहत फ्रांस के नौसेना समूह के सहयोग से मझगांव डॉक लिमिटेड (एमडीएल) भारत में छह स्कॉर्पीन पनडुब्बी का निर्माण पहले ही कर चुका है। राफेल-एम जेट के साथ-साथ हथियार प्रणालियों और कलपुर्जों सहित संबंधित सहायक उपकरणों की खरीद एक अंतर-सरकारी समझौते (आईजीए) पर आधारित होगी। भारतीय वायुसेना ने फ्रांस से 36 राफेल लड़ाकू विमान उड़ने लायक स्थिति में खरीदे थे। वायुसेना का मानना है कि उसे राफेल जेट के कम से कम दो और बेड़े की खरीद करनी चाहिए।

# हत्या मामले में 12 साल से अधिक जेल में बिताने वाले व्यक्ति को शीर्ष अदालत ने बरी कर दिया

**नई दिल्ली।** उच्चतम न्यायालय ने बुधवार को केरल में हत्या के एक मामले में 12 साल से अधिक समय तक जेल में बंद एक व्यक्ति को बरी कर दिया। न्यायमूर्ति अभय एस. ओका और उज्जल भुइयां की पीठ ने दो प्रत्यक्षदर्शी गवाहों के बयान पर संदेह जताते हुए कहा कि आरोपी के खिलाफ अपराध साबित नहीं हुआ। शीर्ष अदालत ने यह फैसला विनोभाई की उस अपील पर सुनाया, जिसमें उन्होंने केरल उच्च न्यायालय के सितंबर 2016 के उस फैसले को चुनौती दी थी। फैसले में व्यक्ति की दोषसिद्धि और उम्रकैद की सजा को बरकरार रखा गया था। न्यायालय ने कहा, "अभियुक्त 12 साल से अधिक समय तक जेल में रहा है। यदि किसी अन्य मामले में उसकी आवश्यकता नहीं है तो उसे तुरंत रिहा किया जाए"। विनोभाई को निचली अदालत ने हत्या का दोषी ठहराते हुए आजीवन कारावास की सजा सुनाई थी। उन पर 31 दिसंबर 2010 को रामकृष्णन की चाकू से प्रहार कर हत्या करने का आरोप था। अभियोजन पक्ष ने दावा किया था कि विनोभाई और रामकृष्णन के बीच पुरानी दुश्मनी थी। मृतक कथित रूप से विनोभाई के बड़े भाई की हत्या में शामिल था। पीठ ने दो गवाहों के बयान पर संदेह जताते हुए कहा कि "दोनों प्रत्यक्षदर्शियों का यह बयान विरोधाभासी है"। न्यायालय ने यह भी कहा कि दोनों गवाहों ने घटना के तुरंत बाद पुलिस को सूचना नहीं दी थी। शीर्ष अदालत ने यह भी उल्लेख किया कि एक गवाह ने रामकृष्णन को माकपा समर्थक बताया था, जबकि विनोभाई भाजपा कार्यकर्ता था। शीर्ष अदालत ने उच्च अदालत के सितंबर 2016 के फैसले और निचली अदालत के अक्टूबर 2012 के आदेश को रद्द कर दिया।

# मीडिया कंपनी के खिलाफ धोखाधड़ी मामले में 100 करोड़ की संपत्ति बैंकों को लौटाई गई

नई दिल्ली। (भाषा) वित्तीय जांच एजेंसी प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने बैंकों के एक गठजोड़ को 100 करोड़ रुपए की संपत्ति लौटा दी है। दिल्ली की एक मीडिया कंपनी ने कथित तौर पर बैंकों के गठजोड़ के साथ धोखाधड़ी की थी। ए संपत्तियां पिक्सियन मीडिया लिमिटेड के परिसमापक (बैंकों की ओर से) को वापस कर दी गईं।जांच एजेंसी ने बृहस्पतिवार को बयान में कहा कि धन शोधन रोधक अधिनियम (पीएमएलए) के तहत जांच के दौरान लगभग 156 करोड़ रुपए की संपत्ति जब्त की गई थी। इनमें वाणिज्यिक और आवासीय संपत्तियां और बैंक जमा शामिल हैं। प्रवर्तन निदेशालय ने यह मामला केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) द्वारा पिक्सियन मीडिया प्राइवेट लिमिटेड, पर्ल विजन प्राइवेट लिमिटेड, महुआ मीडिया प्राइवेट लिमिटेड, सेंचुरी कम्युनिकेशन लिमिटेड, पिक्सियन विजन प्राइवेट लिमिटेड और पर्ल स्टूडियोज प्राइवेट लिमिटेड के खिलाफ दर्ज मुकदमे (एफआईआर) के आधार पर दायर किया था। ए मुकदमा प्रबोध कुमार तिवारी उर्फ पीके तिवारी से संबंधित हैं, जिनपर बैंकों से 657.11 करोड़ रुपए की धोखाधड़ी करने का आरोप है।एजेंसी ने बताया कि सीबीआई की एफआईआर पंजाब नेशनल बैंक, इंडियन ओवरसीज बैंक, ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स, भारतीय स्टेट बैंक और बैंक ऑफ इंडिया सहित अन्य बैंकों की लिखित शिकायतों के आधार पर दर्ज की गई थी। एजेंसी ने कहा कि ऋणदाता बैंकों ने दिवाला और ऋणशोधन अक्षमता संहिता (आईबीसी) के तहत कॉरपोरेट दिवाला समाधान प्रक्रिया शुरू की थी और अगस्त, 2019 में राष्ट्रीय कंपनी विधि न्यायाधिकरण (एनसीएलटी) द्वारा एक परिसमापक नियुक्त किया गया था।

# रूस की समूह वीजा-मुक्त यात्रा के लिए भारत के साथ बातचीत

**मुंबई।** (भाषा) रूस समूह वीजा-मुक्त व्यवस्था के लिए भारत सरकार के साथ बातचीत कर रहा है। इसके तहत समूह में यात्रा करने वाले पर्यटकों की एक निश्चित संख्या को बिना वीजा के रूस में प्रवेश करने की अनुमति दी जाएगी। मॉस्को सिटी टूरिज्म कमेटी के चेयरमैन एवगेनी कोजलोव ने बुधवार शाम को एक कार्यक्रम के दौरान पीटीआई-भाषा को बताया, पर्यटकों के एक समूह में रूस की यात्रा करने पर, यात्रा को वीजा मुक्त बनाने के लिए दस्तावेज में एक विशेष संख्या का उल्लेख किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, चीनी दस्तावेज में समूह में 10-20 लोग होने चाहिए। हम इस सुविधा का लाभ उठाने के लिए भारतीय विदेश मंत्रालय के साथ बातचीत कर रहे हैं, ताकि एक समूह में शामिल लोगों की संख्या पर अंतिम समझौता किया जा सके। उन्होंने आगे कहा कि भारत एक महत्वपूर्ण देश है और चीन के बाद दूर के देशों में स्रोत बाजार के मामले में दूसरे स्थान पर है।

# पटना में पुलिस ने प्रदर्शनकारियों को खदेड़ा

## बीपीएससी परीक्षा विवाद

**पटना।** (भाषा) बिहार लोक सेवा आयोग (बीपीएससी) की एकीकृत 70वीं संयुक्त (प्रा.) परीक्षा 2024 में कथित तौर पर अनियमितताओं को लेकर इस इम्तिहान को रद्द किए जाने की मांग कर रहे प्रदर्शनकारियों ने बृहस्पतिवार को आयोग के कार्यालय के सामने प्रदर्शन करने की कोशिश की, लेकिन पुलिस ने उन्हें खदेड़ दिया। पुलिस ने कहा कि जहां आयोग का कार्यालय स्थित है वह प्रतिबंधित क्षेत्र है और वहां किसी भी तरह के प्रदर्शन की अनुमति नहीं है। पटना के जिलाधिकारी चंद्रशेखर सिंह ने स्पष्ट किया कि प्रदर्शनकारियों पर कोई लाठीचार्ज नहीं किया गया है, लेकिन उन पर पुलिस मुख्यालय, राजभवन और मुख्यमंत्री आवास जैसे महत्वपूर्ण स्थानों के करीब स्थित क्षेत्र में सड़क यातायात को बाधित करने के लिए मामला दर्ज किया जाएगा। जिलाधिकारी ने पीटीआई-भाषा को बताया, "हमने उन लोगों की पहचान कर ली है जिनके उकसाने पर अभ्यर्थी आयोग के कार्यालय के पास इकट्ठा हुए और बेली रोड पर यातायात की आवाजाही को बाधित किया। सभी प्रदर्शनकारियों को सुरक्षाकर्मियों ने हटा दिया है। पुलिस बीपीएससी अभ्यर्थियों को भड़काने के लिए पटना के दो शिक्षकों के खिलाफ भी प्राथमिकी दर्ज कर रही है"। उन्होंने बताया कि पता चला है कि अधिकतर प्रदर्शनकारी राजधानी के बाहर से लाए गए थे और कुछ दूसरे राज्यों से भी आए थे। बीपीएससी अभ्यर्थी बृहस्पतिवार को बड़ी संख्या में आयोग कार्यालय के पास एकत्र हुए और 13 दिसंबर को राज्य भर में आयोजित एकीकृत 70वीं संयुक्त (प्रा.) परीक्षा 2024 को रद्द करने की मांग की। इस मांग को आयोग ने खारिज कर चुका है। मौके पर पहुंचे पुलिसकर्मियों ने उन्हें वहां से हटा दिया। जिलाधिकारी ने कहा, "वे बीपीएससी कार्यालय की ओर बढ़ना चाहते थे, लेकिन पुलिस और प्रशासन के अधिकारियों ने उन्हें ऐसा करने की अनुमति नहीं दी। सुरक्षाकर्मियों के बार-बार अनुरोध के बावजूद उन्होंने सड़क खाली करने से इनकार कर दिया। यह प्रतिबंधित क्षेत्र है और यहां विरोध प्रदर्शन की अनुमति नहीं है"। रिपोर्ट के मुताबिक, प्रदर्शन के दौरान दो-तीन छात्र घायल भी हुए हैं। पटना उच्च न्यायालय 13 दिसंबर को हुई परीक्षा रद्द करने की मांग वाली याचिका पर शुक्रवार को सुनवाई करने वाला है।

# एसपीओ मानदेय में वृद्धि को लेकर भ्रामक पोस्ट के लिए उमर के सोशल मीडिया सलाहकार को बर्खास्त किया गया

**श्रीनगर।** (भाषा) सत्तारूढ़ नेशनल कॉन्फ्रेंस (नेकां) ने बृहस्पतिवार को कहा कि उसने पार्टी उपाध्यक्ष उमर अब्दुल्ला के सोशल मीडिया सलाहकार को जम्मू-कश्मीर पुलिस में विशेष पुलिस अधिकारियों (एसपीओ) के मानदेय में बढ़ोतरी का श्रेय लेने का दावा करने संबंधी गलत पोस्ट करने के लिए बर्खास्त कर दिया है। नेकां ने एक्स पर अपने आधिकारिक हैंडल पर एक पोस्ट में कहा, एसपीओ के मानदेय से संबंधित हाल की एक पोस्ट पार्टी और मुख्यमंत्री से जुड़े विभिन्न हैंडल से साझा की गई थी। इस पोस्ट को प्रकाशित नहीं किया जाना चाहिए था और साझा की जा रही जानकारी को सत्यापित करने के किसी भी प्रयास के बिना पोस्ट किया गया था। हालांकि हम मानदेय में वृद्धि की पुरजोर वकालत करते रहे हैं और ऐसा करने के लिए हरसंभव प्रयास कर रहे हैं, लेकिन अब तक ऐसा नहीं हुआ है। इससे पहले पार्टी के आधिकारिक हैंडल पर एक पोस्ट में दावा किया गया था कि उमर अब्दुल्ला सरकार ने एसपीओ का मानदेय बढ़ा दिया है। बाद में इस पोस्ट को हटा दिया गया था। पार्टी ने कहा, जिम्मेदार व्यक्ति के खिलाफ कार्वाई की गई है और उन्हें पार्टी के उपाध्यक्ष के सोशल मीडिया सलाहकार के पद से हटा दिया गया है। पीपुल्स कॉन्फ्रेंस के अध्यक्ष सज्जाद गनी लोन समेत विभिन्न वर्गों की आलोचना के मद्देनजर नेशनल कॉन्फ्रेंस ने यह कदम उठाया है। लोन ने कहा, क्या यह सच है? एसपीओ के वेतन का वित्तपोषण गृह मंत्रालय द्वारा एसआरई (सुरक्षा संबंधी व्यय) के माध्यम से किया जाता है। फिर भी, यदि उमर सरकार ने उनके वेतन में वृद्धि करने का कोई तरीका बनाया है - तो उस पर कुछ स्पष्टीकरण दिया जाना चाहिए। वस्तुत: यह गृह मंत्रालय का क्षेत्राधिकार है।

# फडणवीस ने मुंडे को हटाने की मांग पर कहा, अजित पवार का निर्णय अंतिम होगा

**मुंबई।** (भाषा) महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने बीड सरपंच हत्या मामले में बृहस्पतिवार को गेंद उपमुख्यमंत्री अजित पवार के पाले में डालते हुए कहा कि वह ही राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) नेता और सरकार में मंत्री धनंजय मुंडे पर फैसला लेंगे। दिल्ली में एक रैली से इतर फडणवीस ने यह टिप्पणी की। इससे कुछ घंटे पहले खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री मुंडे ने उनसे मुलाकात की थी।फडणवीस ने राष्ट्रीय राजधानी में संवाददाताओं से कहा, सुबह मंत्रिमंडल की बैठक के दौरान धनंजय मुंडे और मेरी मुलाकात हुई। वह हमारी सरकार में मंत्री हैं और हमारी मुलाकात के बारे में कुछ भी गुप्त नहीं है। वह मुझसे और मैं उनसे कभी भी मिल सकता हूं। मुख्यमंत्री ने कहा, अजित पवार ने उनके इस्तीफे (की मांग) के बारे में बयान दिया है। अजित पवार जो भी रुख अपनाएंगे, वह अंतिम होगा। दिसंबर में बीड जिले के मासाजोग गांव के सरपंच संतोष देशमुख की हत्या से संबंधित जबरन वसूली के मामले में वाल्मिक कराड की गिरफ्तारी के बाद से मुंडे आलोचनाओं का सामना कर रहे हैं।मुंडे उसी जिले से विधायक हैं।इससे पहले दिन में राकांपा (शरदचंद्र पवार) की सांसद सुप्रिया सुले ने देशमुख हत्याकांड की जांच को लेकर भाजपा नीत सरकार की आलोचना करते हुए कहा कि कथित हत्यारों में से एक घटित अपराध के 50 दिन बाद भी फरार है। हत्या के सिलसिले में सात लोगों को गिरफ्तार किया गया है, जबकि आरोपी कृष्णा अंधाले अब भी फरार है।सुले ने कहा, इस मुद्दे पर बहुत से लोग बोल रहे हैं और हमारी सामूहिक मांग है कि बीड में सीआईडी द्वारा जांच किए जा रहे मामलों को देखते हुए नैतिक आधार पर (धनंजय मुंडे के इस्तीफे की मांग का) निर्णय लिया जाना चाहिए।

# जरांगे ने अनशन समाप्त किया, दावा किया कि सरकार कई मांगें मानने को तैयार

**जालना।** (भाषा) मराठा कार्यकर्ता मनोज जरांगे ने पांच दिनों के विरोध प्रदर्शन के बाद बृहस्पतिवार को अपना अनिश्चितकालीन अनशन समाप्त कर दिया और दावा किया कि सरकारी प्रतिनिधियों ने उन्हें आश्वासन दिया है कि उनकी कई मांगें स्वीकार की जाएंगी। जरांगे ने चेतावनी दी कि यदि मांगें पूरी नहीं की गईं तो मराठा समुदाय के सदस्य मुंबई तक मार्च करेंगे। सरकारी नौकरियों और शिक्षा में मराठा समुदाय के लिए आरक्षण की मांग कर रहे कार्यकर्ता ने महाराष्ट्र के जालना जिले के अंतरवाली सरती गांव में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के विधायक सुरेश धास एवं जिला अधिकारी डॉ. श्रीकृष्ण पंचाल की मौजूदगी में भूख हड़ताल समाप्त की। जरांगे ने संवाददाताओं से कहा कि सरकार के प्रतिनिधियों ने उनसे वादा किया है कि शिंदे समिति को फिर से सक्रिय करने सहित उनकी कई मांगें पूरी की जाएंगी। उन्होंने कहा, सरकार ने आश्वासन दिया है कि मराठा प्रदर्शनकारियों के खिलाफ सभी मामले वापस ले लिए जाएंगे, जबकि समुदाय के सदस्यों के लिए कुनबी प्रमाणपत्र जारी करने के लिए अलग से अनुभाग स्थापित किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि मराठों के लिए आर्थिक रूप से पिछड़े वर्ग के प्रावधानों को भी लागू किया जाएगा, जबकि आरक्षण आंदोलन के दौरान जान गंवाने वाले समुदाय के सदस्यों को मुआवजा दिया जाएगा। हालांकि, जरांगे ने कहा कि सरकार ने मसौदा अधिसूचना को लागू करने के लिए और समय मांगा है जो कुनबी को मराठा समुदाय के सदस्यों के सगे सोयारे (रक्त संबंधी) के रूप में मान्यता देता है ताकि उन्हें ओबीसी (अन्य पिछड़ा वर्ग) श्रेणी के तहत आरक्षण दिया जा सके। मराठों को ओबीसी प्रमाण पत्र जारी करने की पद्धति निर्धारित करने और उनके सदस्यों को कुनबी समुदाय का हिस्सा साबित करने के लिए पर्याप्त साक्ष्य जुटाने के उद्देश्य से सात सितंबर, 2023 को शिंदे समिति का गठन किया गया था।

# पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना के तहत अक्टूबर तक 20 लाख घरों में होगी सौर प्रणाली

नई दिल्ली। केंद्रीय बिजली और नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा राज्यमंत्री श्रीपाद एसो नाइक ने बृहस्पतिवार को कहा कि पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना के तहत छतों पर लगाए जा रहे सौर संयंत्रों की संख्या अक्टूबर 2025 तक 20 लाख के आंकड़े पर पहुंचने की उम्मीद है। उन्होंने यहां उद्योग मंडल पीएचडी चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (पीएचडीसीसीआई) के डिस्कॉम सम्मेलन में कहा कि मार्च तक छतों पर लगभग 10 लाख सौर संयंत्र स्थापित होने की उम्मीद है। उन्होंने कहा कि पीएम सूर्य घर: मुफ्त बिजली योजना छतों पर सौर प्रणाली लगाने की दुनिया की सबसे बड़ी पहल है। इस योजना के तहत मार्च, 2027 तक एक करोड़ घरों की छतों पर सौर ऊर्जा प्रणाली स्थापित करने का लक्ष्य रखा गया है। नाइक ने कहा कि योजना के तहत मार्च तक सौर प्रणाली की संख्या 10 लाख का आंकड़ा पार कर जाने और अक्टूबर तक यह संख्या दोगुनी होकर 20 लाख हो जाने की उम्मीद है।

# अर्थव्यवस्था सुस्ती में है, सरकार कुछ नहीं कर रही

**नई दिल्ली।** (भाषा) कांग्रेस के वरिष्ठ नेता पी चिदंबरम ने बृहस्पतिवार को दावा किया कि देश की अर्थव्यवस्था सुस्ती में है, लेकिन सरकार स्थिति को संभालने के लिए कुछ नहीं कर रही है। चिदंबरम ने यहां संवाददाताओं से बातचीत में यह भी कहा कि वर्तमान समय में रोजगार सृजन नहीं हो रहा है, बेरोजारी उच्चतम स्तर पर है, मंहगाई बढ़ रही है तथा व्यापक स्तर पर आर्थिक असमानता है।पूर्व वित्त मंत्री ने कांग्रेस की ओर से तैयार अर्थव्यवस्था की वास्तविक स्थिति 2025 शीर्षक वाली रिपोर्ट जारी की। सरकार द्वारा आर्थिक समीक्षा पेश किए जाने से एक दिन पहले कांग्रेस ने यह रिपोर्ट जारी की है। चिदंबरम ने कहा कि इस रिपोर्ट में कई ऐसे तथ्यों का उल्लेख है जिनको सरकार ने दबा दिया है। उन्होंने कहा कि सरकार अर्थव्यवस्था की जो स्थिति बताती है वह वास्तविकता से दूर है। चिदंबरम ने दावा किया, अर्थव्यवस्था सुस्ती में है, इससे इनकार नहीं किया जा सकता। पिछले साल की आर्थिक वृद्धि की तुलना में इस साल दो प्रतिशत तक की गिरावट आ सकती है। उन्होंने कहा कि नए रोजगारों का सृजन नहीं हो रहा है तथा पिछले चार पांच साल से वेतन में बढ़ोतरी भी नहीं हो रही है। पूर्व वित्त मंत्री का कहना था कि खाद्य, शिक्षा एवं स्वास्थ्य क्षेत्र से जुड़ी मुद्रास्फीति दोहरे अंक में है। उन्होंने दावा किया, अर्थव्यवस्था वास्तव में चुनौतियों का सामना कर रही है। युवाओं और स्नातकों के बीच उच्च बेरोजगारी दर चिंताजनक है, जो क्रमश: लगभग 40 प्रतिशत और 30 प्रतिशत है। उनके मुताबिक, इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि देश में व्यापक असमानता है तथा अमीर एवं गरीब के बीच खाई बढ़ती जा रही है। चिदंबरम ने आरोप लगाया कि इस खाई को पाटने के लिए सरकार ने कुछ नहीं किया। यह पूछे जाने पर कि क्या अर्थव्यवस्था मंदी की तरफ जा रही है तो पूर्व वित्त मंत्री ने कहा, यदि भारत में कोई सरकार न हो तो भी अर्थव्यवस्था मंदी में नहीं जाएगी। हम 4-5 प्रतिशत की दर से विकास करना जारी रखेंगे क्योंकि यहां किसान, श्रमिक और छोटे उद्योग हैं जो खाद्यान्न और अन्य चीजें पैदा करते हैं, सेवाएं देते हैं। उनका कहना था कि असली सवाल यह है कि सरकार 4-5 प्रतिशत से अधिक कितनी वृद्धि कर सकती है। चिदंबरम ने कहा, इस सरकार की नीतियों ने विकास दर में लगभग 1.5-2 प्रतिशत जोड़ा, लेकिन यह पर्याप्त नहीं है। पार्टी के वरिष्ठ नेता राजीव गौड़ा ने कटाक्ष करते हुए कहा कि देश में जॉब लॉस ग्रोथ हो रही है।

# चीनी उद्योग में जीडीपी में अपनी हिस्सेदारी बढ़ाकर तीन प्रतिशत करने की क्षमता: गडकरी

**नई दिल्ली।** (भाषा) केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने बृहस्पतिवार को कहा कि चीनी उद्योग में सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में अपनी हिस्सेदारी बढ़ाकर तीन प्रतिशत करने की क्षमता है। फिलहाल जीडीपी में इसकी हिस्सेदारी 1.0 से 1.15 प्रतिशत है। उन्होंने गन्ने का प्रति एकड़ उत्पादन बढ़ाने की जरूरत भी बताई। भारतीय कृषि क्षेत्र लगभग 42.3 प्रतिशत आबादी को आजीविका प्रदान करता है और मौजूदा कीमतों पर देश की जीडीपी में इसकी हिस्सेदारी 18.2 प्रतिशत है। उन्होंने कहा, भारतीय चीनी उद्योग देश की जीडीपी में तीन प्रतिशत योगदान देने की क्षमता रखता है। गडकरी ने कहा कि सरकार ने देश में वैकल्पिक ईंधन के उत्पादन को प्रोत्साहित करने के लिए बहुत कुछ किया है। सरकार अब एथनॉल के निर्यात को बढ़ावा देने के लिए कदम उठा रही है। केंद्रीय मंत्रिमंडल ने बुधवार को आपूर्ति वर्ष 2024-25 के लिए सी श्रेणी के शीरे से प्राप्त एथनॉल की कीमत (एक्स-मिल) 1.69 रुपए बढ़ाकर 57.97 रुपए प्रति लीटर करने को मंजूरी दी। जबकि अन्य कच्चे माल के लिए दरों को अपरिवर्तित रखा। चीनी उद्योग के उप-उत्पादों से एथनॉल उत्पादन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से यह मूल्यवृद्धि ऐसे समय में की गई है, जब देश 2025-26 तक पेट्रोल में 20 प्रतिशत एथनॉल मिश्रण के अपने लक्ष्य को पूरा करने के लिए प्रयास कर रहा है। मंत्री ने कहा कि चीनी के निर्यात को नियंत्रित करने की सरकार की नीति फायदेमंद और नुकसानदायक दोनों है, ऐसे में चीनी उद्योग को नए नजरिए से फिर से देखने की जरूरत है। बेबाक टिप्पणी के लिए जाने जाने वाले गडकरी ने कहा, देश में सत्ता में कोई भी पार्टी हो, भारतीय नीति निर्माताओं की मानसिकता शहरी केंद्रित है। वे केवल चार उत्पादों... चीनी, तेल, गेहूं और चावल... में मुद्रास्फीति के बारे में चिंतित हैं। उन्होंने कहा, कुछ फसलों की हमारी एमएसपी (न्यूनतम समर्थन मूल्य) दरें बाजार मूल्य से अधिक हैं, फिर भी हम अपनी फसल का प्रतिरूप नहीं बदल रहे हैं।

# डोनाल्ड ट्रंप ने अप्रवासी हिरासत कानून पर किए हस्ताक्षर




भाषा। वाशिंगटन

**अमेरिका** के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अवैध अप्रवासियों की सुनवाई-पूर्व हिरासत की अनुमति देने वाले अपने पहले कानून पर हस्ताक्षर कर दिए हैं। यह कानून चोरी, सेंधमारी जैसे अपराधों में आरोपित अवैध अप्रवासियों को सुनवाई से पहले हिरासत में रखने का अधिकार देता है। लेकेन राइली एक्ट को पहले अमेरिकी संसद के दोनों सदन हाउस और सीनेट में द्विदलीय समर्थन मिला था। ट्रंप ने 20 जनवरी को कार्यभार संभालने के बाद पहले विधेयक के तौर पर इस पर हस्ताक्षर किए हैं। ट्रंप ने कहा, इस कानून के तहत, गृह सुरक्षा विभाग को उन सभी अवैध अप्रवासियों को हिरासत में लेने का अधिकार होगा जो चोरी, सेंधमारी, डकैती, पुलिस अधिकारी पर हमला, हत्या या गंभीर चोट से जुड़े अपराधों के लिए गिरफ्तार किए गए हैं।

यह कानून जॉर्जिया की 22 वर्षीय नर्सिंग छात्रा लेकेन राइली के नाम पर रखा गया है। छात्रा की वेनेजुएला के एक अवैध अप्रवासी ने हत्या कर दी थी। ट्रंप ने इसे ऐतिहासिक कानून करार दिया। डेमोक्रेटिक पार्टी से सांसद डिक डर्बिन ने इस कानून की आलोचना करते हुए कहा कि यह संघीय सरकार की शक्तियों को कमजोर करता है और संविधान द्वारा निर्धारित आप्रवासन नीतियों के खिलाफ है। सीनेट में यह विधेयक 35 के मुकाबले 64 वोट से पारित हुआ, जबकि हाउस में इसे 156 के मुकाबले 263 मतों से मंजूरी मिली।

## जन्मजात नागरिकता पर पाबंदी लगाने संबंधी विधेयक सीनेट में पेश

**वाशिंगटन।** अमेरिका में रिपब्लिकन पार्टी के कुछ सांसदों के एक समूह ने अवैध आप्रवासियों और अस्थायी वीजा पर देश में रहने वाले गैर-आप्रवासियों के बच्चों को जन्मजात नागरिकता दिए जाने पर रोक लगाने से संबंधित एक विधेयक संसद के उच्च सदन सीनेट में पेश किया है। जन्मजात नागरिकता अधिनियम 2025 नामक विधेयक प्रस्तुत करने वाले सीनेट सदस्यों लिंडसे ग्राहम, टेड क्रूज और केटी ब्रिट के अनुसार, मुख्य रूप से जन्मजात नागरिकता मिलने के कारण अवैध आप्रवासी अमेरिका आते हैं और यह राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा है। अमेरिका दुनिया के उन 33 देशों में से एक है जहां जन्मजात नागरिकता पर कोई प्रतिबंध नहीं है। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अपने कार्यकाल के पहले दिन इस संबंध में एक कार्यकारी आदेश पर हस्ताक्षर किए थे, जिसे वाशिंगटन राज्य के एक संघीय न्यायाधीश ने अवरुद्ध कर दिया था। आव्रजन अध्ययन केंद्र का अनुमान है कि 2023 में अवैध आप्रवासियों से 2,25,000 से 2,50,000 बच्चे पैदा होंगे, जो अमेरिका में जन्म लेने वालों का लगभग सात प्रतिशत है। ग्राहम ने कहा कि अमेरिका में जन्मजात नागरिकता नीति में बदलाव करने में बहुत देर हो चुकी है और इसका कई तरीकों से दुरुपयोग किया जा रहा है। ग्राहम ने कहा, मैं जन्मजात नागरिकता से संबंधित राष्ट्रपति ट्रंप के कार्यकारी आदेश की भी सराहना करता हूं। अब समय आ गया है कि अमेरिका भी बाकी दुनिया के साथ मिलकर इस प्रथा को हमेशा के लिए प्रतिबंधित कर दे। ब्रिट ने कहा, अमेरिकी नागरिकता के वादे के कारण अवैध प्रवास को बढ़ावा नहीं मिलना चाहिए, लेकिन बहुत लंबे समय से यही होता आ रहा है।

## अमेरिकी राष्ट्रपति ने ग्वांतानामो बे में 30,000 लोगों की क्षमता वाला प्रवासी हिरासत केंद्र बनाने का आदेश दिया

**वाशिंगटन।** अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने उच्च प्राथमिकता वाले अपराधी विदेशियों को हिरासत में रखने के लिए ग्वांतानामो बे में 30,000 लोगों की क्षमता वाला केंद्र स्थापित करने के संबंध में एक ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। ग्वांतानामो बे हिरासत केंद्र का इस्तेमाल अब तक आतंकवादियों को रखने के लिए किया जाता रहा है, लेकिन अब इसमें आपराधिक रिकॉर्ड वाले अवैध प्रवासियों को भी रखा जाएगा। इस समझौते पर बुधवार को हस्ताक्षर किए गए। ट्रंप ने रक्षा विभाग और गृह सुरक्षा विभाग को यह केंद्र तैयार करने का निर्देश दिया। ज्ञापन के अनुसार, ट्रंप ने उच्च प्राथमिकता वाले अपराधी विदेशियों को समायोजित करने और संबंधित प्रवर्तन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए नौसेना स्टेशन ग्वांतानामो बे में प्रवासी संचालन केंद्र के विस्तार का आदेश दिया। ट्रंप ने अमेरिका के राष्ट्रपति के आधिकारिक आवास एवं कार्यालय व्हाइट हाउस के एक कार्यक्रम में कहा, अधिकतर लोगों को इसके बारे में पता भी नहीं है। हमारे पास ग्वांतानामो में 30,000 बिस्तर हैं, जहां हम अमेरिकी लोगों को खतरा पहुंचाने वाले सबसे खतरनाक अपराधी अवैध विदेशियों को हिरासत में रख सकते हैं। उन्होंने कहा, उनमें से कुछ इतने खतरनाक हैं कि हमें इस बात का भरोसा नहीं है कि उनके देश उन्हें हिरासत में रख पाएंगे। हम नहीं चाहते कि वे वापस आएं इसलिए हम उन्हें ग्वांतानामो भेज रहे हैं।

# अमेरिका की राष्ट्रीय खुफिया निदेशक पद के लिए ट्रंप की पसंद तुलसी गबार्ड की होगी परीक्षा

**वाशिंगटन।** राष्ट्रीय खुफिया निदेशक पद के लिए राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की पसंद तुलसी गबार्ड को रूस के बारे में अतीत में की गईं अपनी टिप्पणियों और सीरिया के अपदस्थ हो चुके राष्ट्रपति बशर अल-असद से 2017 में हुई मुलाकात को लेकर बृहस्पतिवार को सांसदों के कड़े सवालों का सामना करना पड़ सकता है। गबार्ड की नियुक्ति की पुष्टि के लिए अमेरिकी संसद के उच्च सदन सीनेट की खुफिया मामलों की समिति उनसे पूछताछ करेगी। इस पूछताछ से तय होगा कि वह पद के लिए योग्य हैं या नहीं। हवाई से डेमोक्रेटिक पार्टी की सांसद रहीं गबार्ड नेशनल गार्ड में लेफ्टिनेंट कर्नल हैं और दो बार मध्य एशिया में तैनात रह चुकी हैं। वर्ष 2020 में उन्होंने राष्ट्रपति चुनाव लड़ने के लिए अपनी दावेदारी पेश की थी। उन्हें खुफिया मामलों का कामकाज देखने का कोई औपचारिक अनुभव नहीं है और न ही वह किसी सरकारी एजेंसी या विभाग की प्रमुख रही हैं। गबार्ड के अतीत के बयान उनकी नियुक्ति की पुष्टि में आड़े आ सकते हैं। गबार्ड यूक्रेन पर रूस के आक्रमण को जायज ठहराने संबंधी रूसी दुष्प्रचार का कई बार समर्थन कर चुकी हैं और यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की को भ्रष्ट तानाशाह बताकर उनकी आलोचना कर चुकी हैं।

रिपब्लिकन पार्टी के सांसदों ने उन पर रूसी दुष्प्रचार को बढ़ावा देने का आरोप लगाया है। रूस का सरकारी मीडिया भी एक बार गबार्ड की तारीफ चुका है। साल 2017 में उन्होंने सीरिया जाकर तत्कालीन राष्ट्रपति बशर अल-असद से मुलाकात करके विवाद खड़ा कर दिया था। असद को एक क्रूर गृहयुद्ध के बाद हाल ही में राष्ट्रपति पद छोड़कर देश से जाना पड़ा था। सीरिया यात्रा के बाद गबार्ड पर तानाशाह (असद) को वैधता देने का आरोप लगा। हालांकि गबार्ड ने कहा था कि उन्हें इस बात पर संदेह है कि असद ने गृहयुद्ध के रासायनिक हथियारों का इस्तेमाल किया था। इस बयान को लेकर उन्हें और आलोचना का सामना करना पड़ा।

# अंतरराष्ट्रीय न्यायालय में मुकदमों की गति अत्यधिक धीमी, पुतिन के खिलाफ गिरफ्तारी वारंट लंबित

**हेग (नीदरलैंड)।** अंतरराष्ट्रीय अपराध न्यायालय (आईसीसी) द्वारा कांगो के सैन्य कमांडर थॉमस लुबांगा को बाल सैनिकों की भर्ती के लिए 2012 में 14 साल जेल की सजा सुनाए जाने के बाद से इसने विभिन्न मामलों में केवल 11 लोगों को दोषी करार दिया है और तीन फैसले लंबित हैं। आईसीसी ने दर्जनों गिरफ्तारी वारंट जारी किए हैं, जिनमें इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू और रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के नाम शामिल हैं। लेकिन अंतरराष्ट्रीय न्यायालय के समक्ष कई चुनौतियां हैं।

इंटरनेशनल फेडरेशन फॉर ह्यूमन राइट्स के डान्य चैकेल ने कहा, मुकदमों की सुनवाई नहीं हो पाने से न्यायालय की प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचा है। आईसीसी का काम अंतरराष्ट्रीय अपराधों के जिम्मेदार लोगों के खिलाफ जांच करना और उनपर मुकदमा चलाना है। मौजूदा अभियोजक एवं ब्रिटिश वकील करीम खान ने 24 गिरफ्तारी वारंट के लिए अनुरोध किया है। लेकिन कई संदिग्ध (पुतिन जैसे) अदालत के कठघरे से शायद दूर रहेंगे। न तो रूस, ना ही इजराइल अंतरराष्ट्रीय न्यायालय के सदस्य हैं तथा वे इसके अधिकार क्षेत्र को भी स्वीकार नहीं करते। न्यायालय के 125 सदस्य देशों में से कई देश, राजनीतिक कारणों से संदिग्धों को गिरफ्तार करने के लिए तैयार नहीं हैं। मंगोलिया ने पिछले साल पुतिन की राजकीय यात्रा के दौरान उनका भव्य स्वागत किया था और उनकी गिरफ्तारी के वारंट को नजरअंदाज कर दिया था।

दक्षिण अफ्रीका और केन्या ने सूडान के पूर्व राष्ट्रपति उमर अल-बशीर को गिरफ्तार करने से इनकार कर दिया था। उमर (81) को 2019 में तख्तापलट के जरिए सत्ता से बेदखल कर दिया गया था, लेकिन सूडान के अधिकारियों ने उन्हें आईसीसी को सौंपने से इनकार कर दिया। इटली का दावा है कि लीबिया के सरदार ओसामा अंजीम के लिए आईसीसी वारंट में प्रक्रियागत त्रुटियां थीं। रोम की अपीलीय अदालत के आदेश के तहत उसे इस महीने रिहा कर दिया गया।

इतालवी प्रधानमंत्री जियोर्जिया मेलोनी ने संवाददाताओं से कहा, यह सरकार का फैसला नहीं था। लेकिन इटली, जो आईसीसी का संस्थापक सदस्य है, के पास वारंट को निष्पादित न करने के अपने कारण हो सकते हैं। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अपने दूसरे कार्यकाल के पहले दिन ही न्यायालय के कर्मचारियों को प्रतिबंधित करने वाले अपने पिछले कार्यकाल के शासकीय आदेश को बहाल कर दिया। एक और अधिक नुकसानदेह कानून, जो न्यायालय को एक संस्था के रूप में प्रतिबंधित करेगा, कांग्रेस (अमेरिकी संसद) के एक सदन से पारित हो चुका है।

## मेटा ट्रंप के साथ मुकदमा निपटाने के लिए दो करोड़ 50 लाख अमेरिकी डॉलर का भुगतान करने पर सहमत

**वाशिंगटन।** प्रौद्योगिकी क्षेत्र की कंपनी मेटा ने उसके खिलाफ अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा दर्ज कराए गए मुकदमे के निपटारे के लिए दो करोड़ 50 लाख अमेरिकी डॉलर का भुगतान करने पर सहमति व्यक्त की है। मेटा ने छह जनवरी, 2021 को कैपिटल (अमेरिकी संसद भवन) पर हमले के बाद डोनाल्ड ट्रंप के खातों को निलंबित कर दिया था जिसके बाद यह मुकदमा दर्ज कराया गया था। मेटा ने ऐसे समय में मुकदमे के निपटारे के लिए भुगतान करने पर सहमति जताई है जब कंपनी और इसके मुख्य कार्यकारी अधिकारी मार्क जुकरबर्ग तथा अन्य बड़ी प्रौद्योगिकी कंपनियां नए ट्रंप प्रशासन के साथ तालमेल स्थापित करने की कोशिश कर रही हैं। अधिकारियों ने अपनी पहचान गोपनीय रखे जाने की शर्त पर इस समझौते के बारे में बुधवार को जानकारी दी।

# पूर्व राष्ट्रपति जैकब जुमा की बेटी आतंकवाद के आरोप में गिरफ्तार

भाषा। जोहानिसबर्ग

**दक्षिण अफ्रीका** के पूर्व राष्ट्रपति जैकब जुमा की बेटी को आतंकवाद के आरोप में गिरफ्तार किया गया है और उन्हें बृहस्पतिवार को अदालत में पेश किए जाने की उम्मीद है। जुमा की बेटी डुडुजिले जुमा-संबुदला संसद सदस्य भी हैं और उनपर जुलाई 2021 में दंगों के दौरान हिंसा भड़काने का आरोप है। जुलाई 2021 में हुए दंगों में 350 से ज्यादा लोग मारे गए थे। पुलिस ने बताया कि डुडुजिले ने बृहस्पतिवार को पुलिस के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया। वह आतंकवाद एवं संबंधित गतिविधियों से जुड़े अधिनियम तथा हिंसा भड़काने के आरोपों का सामना कर रही हैं। पुलिस प्रवक्ता ब्रिगेडियर थांडी म्बांबो ने बताया, यह गिरफ्तारी डरबन पुलिस की अपराध शाखा द्वारा गंभीर संगठित अपराध की गई सावधानीपूर्वक जांच का परिणाम है, जो 2021 में देश में हुई हिंसा के बाद शुरू की गई थी।

डुडुजिले के राजनीतिक दल ने इस बात की पुष्टि की है कि उन्हें बृहस्पतिवार को अदालत में पेश किया जाएगा। डुडुजिले के खिलाफ मामला एक्स (पूर्व में ट्विटर) पर एक किए गए एक पोस्ट पर आधारित है। डुडुजिले ने उनके पिता को जेल भेजे जाने के बाद यह पोस्ट किया था और उसमें प्रदर्शनकारियों से देशव्यापी प्रदर्शन के दौरान कथित तौर पर अधिक नुकसान पहुंचाने की अपील की थी। भ्रष्टाचार की जांच के मामले में गवाही देने के लिए अदालत के आदेश की अवहेलना करने को लेकर पूर्व राष्ट्रपति जुमा को जेल ले जाया गया था, जिसके बाद, गुस्साई भीड़ ने दुकानों में लूटपाट और आगजनी की तथा संपत्ति को नुकसान पहुंचाया था। मामले में 5,000 से अधिक लोगों को गिरफ्तार किया गया था।

## क्विक न्यूज

### पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वा प्रांत से छह लोगों का अपहरण

**पेशावर।** पाकिस्तान के अशांत खैबर पख्तूनख्वा प्रांत में अज्ञात बंदूकधारियों ने दो अलग-अलग घटनाओं में छह लोगों का अपहरण कर लिया। अपहृत में एक अर्धसैनिक बल का एक जवान भी शामिल है। पहली घटना में हथियारबंद लोग दो वाहनों में आए और हवा में गोलियां चलाते हुए जबरन पांच नागरिकों को अपने साथ ले गए। अपहृत लोग उत्तरी वजीरिस्तान के शिवा तहसील के मीर अली सब-डिवीजन के अतर्गत आने वाले हसन खेल गांव में बिजली के खंभे ठीक कर रहे थे। एक अन्य घटना में, अर्धसैनिक बल का एक जवान बाजार से लौटते समय अगवा कर लिया गया। पुलिस ने इलाके में व्यापक तलाशी अभियान शुरू कर दिया है। अब तक किसी भी संगठन ने अपहरण की जिम्मेदारी नही ली है। इस क्षेत्र में प्रतिबंधित तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान (टीटीपी) सक्रिय है, जिसे पहले भी ऐसे अपहरणों के लिए जिम्मेदार ठहराया गया है। टीटीपी की स्थापना 2007 में कई आतंकवादी संगठनों के गठबंधन के रूप में हुई थी और इसे अल-कायदा का करीबी माना जाता है। इस संगठन को पाकिस्तान में कई घातक हमलों के लिए जिम्मेदार माना जाता है।

### निर्धारित समय से अधिक ठहरे 7,000 से ज्यादा भारतीय

**वाशिंगटन।** अमेरिकी सांसदो को एक विशेषज्ञ ने बताया है कि 2023 में भारत के 7,000 से अधिक छात्र और आगंतुक अमेरिका में निर्धारित समय से अधिक अवधि तक ठहरे। देश की आव्रजन नीतियो में कई सुधारों का सुझाव दिया, जिनमें एच-1बी वीजा से संबंधित सुधार भी शामिल हैं। सेंटर फॉर इमिग्रेशन स्टडीज की जेसिका एम. वॉन ने अमेरिकी संसद के निचले सदन प्रतिनिधि सभा की न्यायपालिका संबंधी समिति को बताया कि निर्धारित समय से अधिक ठहरने वालों में सबसे अधिक संख्या एफ और एम श्रेणी के वीजा धारकों की रही। एफ-1 के तहत वीजा में किसी व्यक्ति को किसी मान्यता प्राप्त कॉलेज, विश्वविद्यालय, सेमिनरी, कंजर्वेटरी, अकादमिक हाई स्कूल, प्राथमिक विद्यालय या अन्य शैक्षणिक संस्थान या भाषा प्रशिक्षण कार्यक्रम में पूर्णकालिक छात्र के रूप में अमेरिका में रहने की अनुमति मिलती है। एम-1 वीजा भाषा प्रशिक्षण के अलावा व्यावसायिक या अन्य गैर-शैक्षणिक कार्यक्रमों में अध्ययनरत छात्रों को मिलता है। चार देशों ब्राजील, चीन, कोलंबिया और भारत के दो-दो हजार से अधिक नागरिक 2023 में छात्रा एक्सचेंज वीजा की अवधि से अधिक समय तक ठहरे। इन देशों में भारतीयों की संख्या सबसे अधिक (7,000) है। उन्होंने कहा कि वीजा जारी करने की नीतियो में समायोजन की आवश्यकता है और आंतरिक प्रवर्तन को मजबूत किया जाना चाहिए। इसके अलावा, संसद को कई महत्वपूर्ण तरीकों से कानून में संशोधन करना चाहिए।

### रूस ने ड्रोन से यूक्रेन की इमारत को निशाना बनाया, चार की मौत

**कीव।** रूस ने बुधवार की रात ड्रोन से उत्तर-पूर्वी यूक्रेन में एक इमारत को निशाना बनाया जिससे चार लोगों की मौत हो गई और नौ अन्य घायल हो गए। सुमी शहर के क्षेत्रीय प्रशासन ने बताया कि रात करीब एक बजे शाहिद ड्रोन से नगर की एक इमारत को निशाना बनाया गया। इस हमले में घायल हुए लोगों में एक बच्चा भी शामिल है। जेलेंस्की ने इसे एक भयानक त्रासदी और रूस द्वारा किया गया भयावह अपराध करार दिया। अगले महीने रूस-यूक्रेन युद्ध के तीन साल पूरे हो जाएंगे और अभी तक इसके समाप्त होने के कोई संकेत नही दिख रहे है। संयुक्त राष्ट्र के मुताबिक इस युद्ध में यूक्रेन के 10,000 से अधिक आम नागरिक मारे गए हैं। यूक्रेन की वायुसेना के मुताबिक रूस ने रात में 80 से अधिक ड्रोन हमले किए जिनमें से अधिकतर को नाकाम कर दिया गया। यूक्रेन के दक्षिणी ओडेसा क्षेत्र के प्रमुख ओलेह किपर ने सोशल मीडिया मंच टेलीग्राम पर दावा किया कि रूसी ड्रोनों ने एक अस्पताल और दो रिहायशी इमारतो को क्षतिग्रस्त कर दिया, लेकिन इन हमलों में कोई हताहत नही हुआ। मध्य यूक्रेन के पोल्तावा क्षेत्र में, शाहिद ड्रोन द्वारा एक ढांचे को नष्ट कर दिए जाने के बाद आपातकालीन सेवाओं ने चार लोगों को मलबे के नीचे से निकाला।

### पारदर्शिता, अच्छे अधिकारियों को सशक्त बनाना हैं एफबीआई की प्राथमिकताएं: काश पटेल

**वाशिंगटन।** संघीय जांच ब्यूरो (एफबीआई) के निदेशक पद के लिए अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा नामित काश पटेल ने कहा है कि जांच एजेंसी के संदर्भ में उनके दो लक्ष्य है- पारदर्शिता लाना और अच्छे पुलिसकर्मियों को पद पर बनाए रखना। यदि एफबीआई निदेशक के तौर पर पटेल (44) के नाम पर मुहर लग जाती है तो वह इस पद पर आसीन होने वाले पहले भारतीय-अमेरिकी होंगे। इस पद पर उनकी नियुक्ति की पुष्टि के लिए वह बृहस्पतिवार को सीनेट न्यायपालिका समिति के समक्ष उपस्थित होंगे। पटेल ने प्रतिष्ठित वॉल स्ट्रीट जर्नल में बुधवार को एक लेख में लिखा, मेरा मानना है कि एफबीआई में जनता का विश्वास फिर से बनाने के लिए दो बुनियादी कदम आवश्यक है। सबसे पहली प्राथमिकता यह है कि अच्छे पुलिसकर्मियो को पुलिसकर्मी ही रहने दे। नेतृत्व का मतलब है कि अपराधियों को पकड़ने और हमारे नागरिकों की सुरक्षा करने के मिशन में एजेंटों का समर्थन करना। अगर मेरी नियुक्ति हो जाती है, तो मै मुख्यालय में संचालन को सुव्यवस्थित करने पर ध्यान केंद्रित करूंगा और पूरे देश मे फील्ड एजेंट की मौजूदगी को मजबूत करूंगा।

## ताइवान में आया 5.6 तीव्रता का भूकंप

**ताइपे।** ताइवान में बृहस्पतिवार सुबह 5.6 तीव्रता का भूकंप आया और इसके बाद भूकंप के कम से कम 12 अन्य मामूली झटके महसूस किए गए। केंद्रीय मौसम एजेंसी और अमेरिकी भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण के अनुसार, ताइवान में भूकंप के कई झटके महसूस किए गए लेकिन सबसे जोरदार 5.6 तीव्रता का भूकंप पूर्वाह्न 10 बजकर 11 मिनट पर चियाई काउंटी के दापू कस्बे में 10 किमी की गहराई पर आया। इस भूकंप का केंद्र राजधानी ताइपे से लगभग 250 किमी (155 मील) दक्षिण में था। इस भूकंप के कारण ताइपे में इमारतें हिल गईं। इसके कुछ ही देर बाद दापू में भूकंप के कम से कम 12 मामूली झटके आए। जान-माल का नुकसान होने की फिलहाल कोई सूचना नहीं मिली है। ये 21 जनवरी को दापू में आए 6.4 तीव्रता के भूकंप के बाद के झटके थे। दापू में 21 जनवरी को आए भूकंप में 15 लोगों को मामूली चोटें आईं थीं और इमारतों एवं एक राजमार्ग पुल को नुकसान पहुंचा था।

# हमास ने इजराइल के आठ और बंधकों को छोड़ा

### ● 110 फलस्तीनी कैदियों की रिहाई पर सस्पेंस बरकरार

**खान यूनिस (गाजा पट्टी)।** गाजा पट्टी में संघर्ष-विराम समझौते के तहत चरमपंथी समूह हमास ने बृहस्पतिवार को इजराइल के आठ और बंधकों को छोड़ दिया। हालांकि, बंधकों के बदले 110 फलस्तीनी कैदियों की रिहाई की इजराइल की योजना को लेकर अनिश्चितता बनी हुई है। दरअसल, इजराइली बंधकों को रेड क्रॉस के हवाले किए जाने के दौरान दिखे अराजक दृश्यों को लेकर तेल अवीव ने कड़ा विरोध जताया और 110 फलस्तीनी कैदियों की रिहाई पर रोक लगाने की घोषणा की। इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने स्पष्ट किया कि हमास जब तक बंधकों की सुरक्षित रिहाई का आश्वासन नहीं देता, तब तक फलस्तीनी कैदियों को आजाद नहीं किया जाएगा।



इजराइली हमलों से बर्बाद दिख रहा गाजा

बाद में नेतन्याहू ने कहा कि मध्यस्थों ने उन्हें भरोसा दिलाया है कि गाजा पट्टी से बंधकों की सुरक्षित निकासी सुनिश्चित की जाएगी। हालांकि, उन्होंने फलस्तीनी कैदियों की संभावित रिहाई के बारे में कुछ नहीं कहा। इस बीच, इजराइली मीडिया ने खबर दी कि फलस्तीनी कैदियों को रिहा किया जाएगा। हमास ने बृहस्पतिवार सुबह इजराइल की महिला सैनिक अगम बर्जर (20) को उत्तरी गाजा के जबालिया शरणार्थी शिविर में भीड़ के सामने परेड कराने के बाद रेड क्रॉस को सौंप दिया। इजराइल सरकार ने बाद में पुष्टि की कि बर्जर उसके बलों के पास पहुंच गई हैं। बर्जर इजराइल की उन पांच महिला सैनिकों में शामिल थीं, जिन्हें हमास ने इजराइल में सात अक्टूबर 2023 को किए गए भीषण हमले के दौरान अगवा कर लिया था। चरमपंथी समूह ने चार अन्य महिला सैनिकों को शनिवार को रिहा कर दिया था। बर्जर के बाद हमास ने बृहस्पतिवार दोपहर सात अन्य बंधकों को रेड क्रॉस के हवाले कर दिया, जिनमें दो इजराइली और पांच थाई नागरिक शामिल थे। इजराइली सेना ने बाद में पुष्टि की कि रेड क्रॉस ने सातों बंधकों को गाजा पट्टी में उसके बलों को सौंप दिया है। हालांकि, दक्षिणी गाजा के खान यूनिस शहर में मारे गए हमास नेता याह्या सिनवार के नष्ट हुए घर के सामने इन सात बंधकों को रेड क्रॉस के हवाले किए जाने के दौरान बेहद अराजक दृश्य देखने को मिला। मौके पर हजारों की संख्या में जुटे फलस्तीनियों ने बंधकों को घेर लिया और उनके खिलाफ आपत्तिजनक नारे लगाए। इस दौरान, हथियारबंद हमास चरमपंथियों को बंधकों को रेड क्रॉस के वाहनों की तरफ ले जाते समय भीड़ में शामिल लोगों को पीछे धकेलते देखा गया। अराजकता के कारण बंधकों को रेड क्रॉस के हवाले करने और गाजा से उनकी निकासी की प्रक्रिया में देरी हुई। बाद में रेड क्रॉस ने बंधकों को गाजा पट्टी में इजराइली बलों के पास पहुंचा दिया।

## उत्तर पश्चिमी पाकिस्तान में आतंकवादियों के साथ मुठभेड़ में मेजर समेत दो सुरक्षाकर्मी मारे गए

**पेशावर।** पाकिस्तान सेना ने बताया कि अफगानिस्तान की सीमा से सटे देश के उत्तर-पश्चिम इलाके में आतंकवादियों के साथ मुठभेड़ में मेजर समेत दो सुरक्षाकर्मी मारे गए। सेना की मीडिया शाखा इंटर-सर्विसेज पब्लिक रिलेशंस (आईएसपीआर) ने बताया कि यह मुठभेड़ 29 जनवरी की रात को सुरक्षा बलों द्वारा खुफिया जानकारी के आधार पर शुरू किए गए अभियान के दौरान हुई। अभियान के दौरान पाकिस्तानी सैनिकों ने छह आतंकवादियों को मार गिराया। मुठभेड़ में मारे गए सुरक्षाकर्मियों की पहचान रावलपिंडी के 29 वर्षीय मेजर हमजा इसरार और नसीराबाद के 26 वर्षीय सिपाही मुहम्मद नईम के रूप में हुई है। इसरार इस अभियान में सैनिकों की टुकड़ी की अगुवाई कर रहे थे। सेना ने बताया कि मुठभेड़ के बाद सुरक्षा बलों ने बचे हुए आतंकवादियों को खत्म करने के लिए इलाके में तलाशी अभियान शुरू किया।

# अमेरिकी कांग्रेस की विदेश समिति भारत नीति की समीक्षा करेगी

भाषा। वाशिंगटन

**अमेरिकी** कांग्रेस की विदेश मामलों संबंधी शक्तिशाली समिति भारत के प्रति अमेरिका की विदेश नीति और द्विपक्षीय सहयोग के लगातार विस्तार की समीक्षा करेगी और इसमें रक्षा क्षेत्र पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। सदन की विदेश मामलों संबंधी समिति की प्राथमिकताओं की सूची में भारत को 11वें स्थान पर रखा गया है। कमेटी ने कहा कि वह, भारत के प्रति अमेरिकी नीति और साझा लोकतांत्रिक मूल्यों पर आधारित द्विपक्षीय सहयोग के विस्तार की समीक्षा करेगी। साथ ही दक्षिण और मध्य एशिया में अमेरिका के विरोधियों के प्रभाव को रोकने पर ध्यान दिया जाएगा।

समिति ने कहा, हम विशेष रुप से अमेरिका-भारत रक्षा संबंधों पर ध्यान केंद्रित करेंगे, जिसमें सुरक्षा और तकनीकी सहयोग, रक्षा क्षमताओं का विस्तार, आतंकवाद-रोधी प्रयास और अन्य रणनीतिक साझेदारियों को बढ़ावा देने के अवसर शामिल होंगे। इसके अलावा, समिति अमेरिका-भारत आर्थिक संबंधों को मजबूत करने के प्रयासों की भी समीक्षा करेगी। इसमें तकनीक, दूरसंचार और फार्मास्यूटिकल उद्योग में द्विपक्षीय सहयोग से जुड़ी चर्चाएं भी शामिल रहेंगी।

समिति भारत की क्वाड में भागीदारी को मजबूत करने के प्रयासों और भारत की तेजी से बढ़ती ऊर्जा आवश्यकताओं के प्रभावों की समीक्षा करेगी। समिति की शीर्ष प्राथमिकता चीन से उत्पन्न खतरों की समीक्षा करना है। समिति चीन द्वारा हस्ताक्षरित अंतरराष्ट्रीय समझौतों और संधियों के उल्लंघन की भी समीक्षा करेगी। इसमें चीन द्वारा उइगर मुस्लिमों के खिलाफ नरसंहार, मानवाधिकारों के उल्लंघन, बुनियादी कानून के तहत हांगकांग के प्रति अपने दायित्वों का उल्लंघन, विश्व व्यापार संगठन की शर्तों का उल्लंघन, साइबर सुरक्षा समझौतों का उल्लंघन, अवैध परमाणु प्रसार और अन्य द्विपक्षीय व अंतरराष्ट्रीय समझौतों के उल्लंघन शामिल हैं।

चीन के बाद, समिति की दूसरी प्रमुख प्राथमिकता हिंद. प्रशांत क्षेत्र में व्यापार समझौतों पर चर्चा और अमेरिकी विदेश विभाग की भागीदारी की समीक्षा करना है। समिति के शीर्ष दस मुद्दों में ताइवान, यूरोप, रूस और यूक्रेन के खिलाफ उसका युद्ध, पश्चिम एशिया औ2353ी उत्तरी अफ्रीका, इज़राइल, ईरान, अफ्रीका और अफगानिस्तान शामिल हैं।

# स्वीडन में कुरान जलाने के कई मामलों में शामिल इराकी व्यक्ति की हत्या

**स्टॉकहोम।** स्वीडन में कुरान जलाने के कई मामलों में शामिल रहे इराकी मूल के व्यक्ति की मौत हो गई है। स्टॉकहोम में एक न्यायाधीश ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी। स्वीडिश मीडिया के मुताबिक उक्त व्यक्ति की स्टॉकहोम के नजदीकी शहर में हुई गोलीबारी में मौत हुई। सलवान मोमिका (38) ने 2023 में स्वीडन में इस्लाम की पवित्र किताब को जलाने और अपवित्र करने की कई घटनाओं को अंजाम दिया था। कुरान को जलाने का वीडियो प्रसारित होने के बाद कई मुस्लिम देशों में आक्रोश और आलोचना देखने को मिला और कई जगहों पर दंगे और अशांति की घटनाएं सामने आईं।

स्टॉकहोम जिला अदालत ने कहा कि मोमिक नामक एक आरोपी के मुकदमे में बृहस्पतिवार को आने वाला फैसला स्थगित कर दिया गया है क्योंकि एक आरोपी की मृत्यु हो गई है। न्यायाधीश गोरान लुंडाहल ने पुष्टि की कि मृतक मोमिक ही है। उन्होंने कहा कि उन्हें इस बारे में कोई जानकारी नहीं है कि मोमिक की मौत कब और कैसे हुई। उन्हें स्टॉकहोम के पास सोडरटालजे में बुधवार रात गोलीबारी की सूचना मिली थी, जिसमें एक व्यक्ति गोली लगने से घायल हो गया था, बाद में उसकी मौत हो गई और हत्या की प्रारंभिक जांच शुरू कर दी गई है।

प्रसारक एसवीटी ने सूत्रों के हवाले से बताया कि पीड़िता मोमिक ही था। इसने कहा कि मोमिक 2018 में इराक से स्वीडन आया था और उसे 2021 में तीन साल का निवास परमिट दिया गया था। अभियोजक रासमस ओमान ने स्वीडिश समाचार एजेंसी टीटी को बताया कि इस मामले में कई लोगों को गिरफ्तार किया गया है। इस बारे में विस्तार से कुछ नहीं बताया। मोमिक ने दलील दी थी कि उसका विरोध मुस्लिमों के प्रति नहीं है बल्कि इस्लाम से है। उसने तर्क दिया कि वह स्वीडन की जनता को कुरान के संदेशों से बचाना चाहते हैं।

# मर्केल ने धुर दक्षिणपंथी समर्थन वाले प्रवासन वोट को लेकर अपनी पार्टी के नेता की आलोचना की

भाषा। बर्लिन

**जर्मनी** की पूर्व चांसलर एंजेला मर्केल ने बृहस्पतिवार को देश के मध्य-दक्षिणपंथी नेता के रूप में अपने उत्तराधिकारी फ्रेडरिक मर्ज की सार्वजनिक रूप से आलोचना की, जो अगले महीने जर्मनी में होने वाले चुनाव में सबसे आगे हैं। मर्ज ने नए कठोर प्रवासन नियमों के लिए संसद में प्रस्ताव रखा था, जिसे एक धुर दक्षिणपंथी पार्टी की मदद से पारित किया गया था।

जर्मनी की मध्य-वाम सत्तारूढ़ दलों ने इस बात पर संदेह जताया है कि क्या रूढ़िवादी नेता मर्ज पर अब भी भरोसा किया जा सकता है कि वह बुधवार के घटनाक्रमों के बाद धुर-दक्षिणपंथी अल्टरनेटिव फॉर जर्मनी या एएफडी को सत्ता में नहीं लाएंगे। पिछले सप्ताह, एक शरणार्थी द्वारा चाकू से जानलेवा हमले के बाद अनियमित प्रवासन को कम करने के लिए अपने मध्य-दक्षिणपंथी यूनियन गठबंधन की प्रतिबद्धता को रेखांकित करने के लिए दृढ़ संकल्पित मर्ज ने प्रवासियों को वापस भेजने के लिए एक गैर-बाध्यकारी प्रस्ताव रखा, जो दक्षिणपंथी पार्टी के समर्थन के कारण तीन मतों के अंतर से पारित हुआ।

सर्वेक्षणों से पता चलता है कि मर्ज की मुख्यधारा की मध्य-दक्षिणपंथी यूनियन लगभग 30 प्रतिशत समर्थन के साथ आगे चल रही है, जबकि अल्टरनेटिव फॉर जर्मनी लगभग 20 प्रतिशत समर्थन के साथ दूसरे स्थान पर है, तथा चांसलर ओलाफ शोल्ज की वामपंथी सोशल डेमोक्रेट्स और उनके गठबंधन सहयोगी ग्रीन्स और भी पीछे हैं। मर्ज की क्रिश्चियन डेमोक्रेटिक यूनियन (सीडीयू) की पूर्व नेता मर्केल ने एक बयान में उल्लेख किया कि मर्ज ने नवंबर में कहा था कि 23 फरवरी के चुनाव से पहले एएफडी के समर्थन से कोई भी प्रस्ताव पारित नहीं किया जाना चाहिए।

मर्केल ने कहा कि वह इस रुख का समर्थन करती हैं, लेकिन मुझे लगता है कि इस प्रस्ताव के प्रति प्रतिबद्धता महसूस न करना और 29 जनवरी को जर्मन संसद में मतदान में एएफडी के समर्थन (वोट) से बहुमत प्राप्त करना गलत था। वर्ष 2021 में मर्केल के चांसलर पद से हटने के बाद मर्ज ने सीडीयू की कमान संभाली थी। मर्केल की तुलना में अधिक रूढ़िवादी व्यक्ति होने के कारण उन्होंने प्रवासन पर अधिक कड़ा रुख अपनाया है।

# सैमसन की कमजोरी और फिनिशिंग भारत की चिंता का सबब

**चौथा टी20**

**भाषा।** पुणे

**तेज** रफ्तार के सामने संजू सैमसन की कमजोरी और रिंकू सिंह का खराब फॉर्म और फिटनेस इंग्लैंड के खिलाफ शुक्रवार को चौथे टी20 मैच से पहले भारतीय टीम प्रबंधन की चिंता का सबब होगा। राजकोट में तीसरा मैच हारने के बाद भारतीय टीम के पास मुंबई में दो फरवरी को होने वाले आखिरी मैच से पहले श्रृंखला जीतने का एक और मौका है। सूर्यकुमार यादव की टीम ने कोलकाता और चेन्नई में पहले दो मैच जीते थे। केरल के विकेटकीपर बल्लेबाज सैमसन ने टी20 सत्र की शुरूआत बांग्लादेश और दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ तीन शतक के साथ की। मौजूदा श्रृंखला में उनका स्कोर 26, 5 और तीन रहा है जो चिंता की बात है। वह 145 किमी की रफ्तार से अधिक वाली गेंदों का सामना नहीं कर पा रहे।

बांग्लादेश के खिलाफ उन्होंने तसकीन अहमद, तंजीम हसन शाकिब की गेंदें खेलीं थी जबकि दक्षिण अफ्रीका के एंडिले साइमलेन और लुथो सिपाम्ला की गेंदों का उन्होंने सामना किया। ए बहुत खतरनाक तेज गेंदबाज नहीं हैं और सैमसन ने उन्हें बखूबी खेला। वहीं इंग्लैंड के जोफ्रा आर्चर और मार्क वुड 145 से 155 किमी की रफ्तार से गेंद डालते हैं जिनकी गति सैमसन के लिए परेशानी का कारण बन गई है। तीनों मैचों में वह फिल साल्ट को कैच देकर पवेलियन लौट गए। सैमसन मुख्य कोच गौतम गंभीर के पसंदीदा खिलाड़ियों में से है और समझा जा रहा है कि अगले साल होने वाले टी20 विश्व कप को देखते हुए वह उन पर भरोसा बनाए रखेंगे। लेकिन उन्हें तकनीकी कमियों से पार पाना होगा।

रिंकू सिंह की कमर की तकलीफ के कारण सातवें नंबर पर ध्रुव जुरेल को उतारा गया लेकिन वह इस प्रारूप में फिट नहीं हो पा रहे। रिंकू पहले मैच में खेले थे और फिर उन्हें अगले दो मैचों में आराम दिया गया लेकिन सहायक कोच रेयान टेन डोयशे ने मैच पूर्व संध्या पर आयोजित प्रेस कांफ्रेंस में शुक्रवार के मुकाबले के लिए उन्हें फिट घोषित कर दिया। वैसे रिंकू भी अपनी सर्वश्रेष्ठ फॉर्म में नहीं हैं। गंभीर जब कोलकाता नाइट राइडर्स के मेंटोर बने तब रिंकू को 2024 आईपीएल में कुल 70 गेंद खेलने को मिली और वह टी20 विश्व कप टीम में जगह नहीं बना सके। अपनी गेंदबाजी के दम पर शिवम दुबे को टीम में जगह मिली थी।


फाइल फोटो कप्तान सूर्यकुमार यादव

भारतीय मध्यक्रम भी इंग्लैंड के स्पिनर आदिल रशीद को नहीं खेल पा रहा है और ऐसे में देखना है कि क्या दुबे को मौका मिलता है। तीसरा विकल्प रमनदीप सिंह है जो फिनिशर होने के साथ दुबे से बेहतर तेज गेंदबाज है। लेकिन बेहतरीन तेज गेंदबाजों के सामने उनकी भी परख नहीं हुई है। मोहम्मद शमी काफी समय बाद टीम में लौटे हैं और राजकोट में उन्होंने अच्छी वापसी की। देखना यह है कि जसप्रीत बुमराह की गैर मौजूदगी में क्या भारत के सर्वश्रेष्ठ टी20 गेंदबाज अर्शदीप सिंह को जगह मिलती है तो पावरप्ले में सफलता दिला सकते हैं।

**भारतः** सूर्यकुमार यादव (कप्तान), संजू सैमसन, अभिषेक शर्मा, तिलक वर्मा, हार्दिक पंड्या, रमनदीप सिंह, शिवम दुबे, अक्षर पटेल, हर्षित राणा, अर्शदीप सिंह, मोहम्मद शमी, वरुण चक्रवर्ती, रवि बिश्नोई, वाशिंगटन सुंदर, ध्रुव जुरेल।

**इंग्लैंडः** जोस बटलर (कप्तान), रेहान अहमद, जोफ्रा आर्चर, गस एटकिंसन, जैकब बेथेल, हैरी ब्रूक, ब्रायडन कार्स, बेन डकेट, जेमी ओवरटन, जेमी स्मिथ, लियाम लिविंगस्टोन, आदिल राशिद, साकिब महमूद, फिलिप साल्ट, मार्क वुड।

***मैच भारतीय समयानुसार शाम सात बजे से शुरू होगा।***

# मुक्केबाज मनोज कुमार ने संन्यास लिया, अब कोचिंग देंगे

**भाषा।** नई दिल्ली



**राष्ट्रमंडल** खेलों के स्वर्ण पदक विजेता मुक्केबाज मनोज कुमार ने बृहस्पतिवार को संन्यास लेने की घोषणा की और अब कोच के तौर पर नई पारी की शुरूआत करेंगे। लाइट वेल्टरवेट (64 किग्रा) में प्रतिस्पर्धा करने वाले 39 वर्षीय मुक्केबाज ने 2010 दिल्ली में अपना पहला और राष्ट्रमंडल खेलों का एकमात्र स्वर्ण पदक जीता था। वह एशियाई चैंपियनशिप में दो बार के कांस्य पदक विजेता भी हैं। राष्ट्रमंडल खेलों में दूसरा और अंतिम कांस्य पदक उन्होंने 2018 गोल्ड कोस्ट खेलों में जीता था। दो बार के ओलंपियन मनोज 2012 लंदन और 2016 रियो दि जिनेरियो दोनों में प्री क्वार्टरफाइनल तक पहुंचे थे।

हरियाणा के कैथल के इस मुक्केबाज ने कहा, अब मैं 40 साल का हो गया हूं तो यह सोच समझकर लिया गया फैसला है क्योंकि अंतरराष्ट्रीय नियमों के अनुसार एमेच्योर प्रतियोगिताओं में हिस्सा नहीं ले सकता। मैं संतुष्ट हूं क्योंकि देश का प्रतिनिधित्व करते हुए मैंने अपना सर्वश्रेष्ठ दिया। मनोज ने अपना मुक्केबाजी करियर 1997 में जूनियर स्तर पर शुरू किया था और 2021 में पटियाला में राष्ट्रीय खेल संस्थान से कोचिंग डिप्लोमा हासिल किया था। चोटों और चयन मुद्दे पर राष्ट्रीय महासंघ के साथ विवाद के कारण उनका करियर गोल्ड कोस्ट राष्ट्रमंडल खेलों के बाद थम गया और वह इसके बाद किसी अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंट में नहीं खेले। अब वह कुरूक्षेत्र में अपने बड़े भाई और कोच राजेश कुमार के साथ बनाई गई मुक्केबाजी अकादमी में कोचिंग देंगे।

# महिला टी-20 अंडर-19 विश्व कप सेमीफाइनल में भारत भारी

**कुआलालंपुर।** भारतीय टीम अंडर 19 महिला टी20 विश्व कप के सेमीफाइनल में शुक्रवार को इंग्लैंड के खिलाफ उतरेगी तो टूर्नामेंट का अपना अपराजेय अभियान जारी रखना उसका लक्ष्य होगा। पहले मैच में मेजबान मलेशिया को दस विकेट से हराने के बाद भारत ने श्रीलंका को 60 रन से और बांग्लादेश को आठ विकेट से हराया। वहीं सुपर सिक्स चरण में स्कॉटलैंड को 150 रन से मात दी। निक्की प्रसाद की कप्तानी वाली टीम के लिए स्कॉटलैंड के खिलाफ जी तृषा ने 59 गेंद में 110 रन बनाए जिसमें 13 चौके और चार छक्के शामिल थे। वहीं उनकी सलामी जोड़ीदार जी कमलिनी ने 42 गेंद में 51 रन की पारी खेली।

तृषा टूर्नामेंट में पांच मैचों में 76.66 की औसत से 230 रन बना चुकी है। इंग्लैंड की बल्लेबाज डेविना पेरिन 131 रन बनाकर दूसरे स्थान पर है। भारत ने स्कॉटलैंड को सिर्फ 58 रन पर आउट कर दिया था। आयुषी शुक्ला ने आठ रन देकर चार, वैष्णवी शर्मा ने पांच रन देकर तीन और तृषा ने छह रन देकर तीन विकेट लिए। वैष्णवी अब तक 12 और आयुषी दस विकेट ले चुकी हैं।

**टीमें : भारतः** निक्की प्रसाद (कप्तान), सानिया शाल्के, जी तृषा, जी कमलिनी, भाविका अहिरे, ईश्वरी अवासरे, मिथिला विनोद, जोशिता वीजे, सोनम यादव, पारूनिका सिसोदिया, केसरी धृति, आयुषी शुक्ला, अनंदिता किशोर, एमडी शबनम, वैष्णवी एस।

**इंग्लैंडः** एबी नोरग्रोव (कप्तान), फीबी ब्रेट, ओलिविया ब्रिसडेन, टिली कोर्टीन कोलमैन, ट्रूडी जॉनसन, कैटी जोंस, चार्लोस लैम्बार्ट, इव ओनील, डेविना पेरिन, जेमिमा स्पेंस, चार्लोट स्टब्स, अमृता सुरेनकुमार, पृषा थानावाला, एरिन थॉमस, ग्रेस थाम्पसन।

***मैच का समय : दोपहर 12 बजे से।***

# गुजरात ने हिमाचल को 215 रन पर आउट किया

**भाषा।** अहमदाबाद

**गुजरात** के कप्तान चिंतन गजा और स्पिनर विशाल जायसवाल ने मिलकर सात विकेट लेकर गुरुवार को यहां रणजी ट्रॉफी ग्रुप बी मैच के पहले दिन हिमाचल प्रदेश को 215 रन पर आउट करने में अहम भूमिका निभाई। दोनों टीमें ग्रुप से क्वार्टर फाइनल में जगह बनाने की दौड़ में शामिल हैं। गुजरात ने मैच के पहले दिन शानदार गेंदबाजी करते हुए हिमाचल की पहली पारी को केवल 66.3 ओवर में ही समेट दिया। मध्यम गति के गेंदबाज गजा ने 31 रन देकर चार विकेट लिए। उन्होंने हिमाचल के कप्तान ऋषि धवन (40) का महत्वपूर्ण विकेट लेने से पहले दोनों सलामी बल्लेबाजों को आउट किया। बाएं हाथ के स्पिनर जायसवाल ने आठ ओवरों में 23 रन देकर तीन विकेट लेकर अपने कप्तान का अच्छा साथ दिया।

हिमाचल के अधिकतर बल्लेबाज अच्छी शुरुआत को बड़े स्कोर में बदलने में नाकाम रहे। अंकित कलसी (53) और धवन ही कुछ संघर्ष कर पाए। हिमाचल ने गेंद से पलटवार किया और गुजरात के सलामी बल्लेबाजों को जल्द ही पवेलियन भेज दिया। स्पिनर मयंक डागर और मुकुल नेगी ने सलामी बल्लेबाजों आदित्य पटेल (19) और आर्या देसाई (8) को आउट किया। पहले दिन का खेल समाप्त होने के समय गुजरात ने दो विकेट पर 44 रन बनाए थे और अभी वह हिमाचल से 171 रन पीछे है।

नागपुर में खेले जा रहे मैच में हैदराबाद ने विदर्भ को 190 रन पर आउट कर दिया। विदर्भ की तरफ से ऑलराउंडर हर्ष दुबे ने 65 रन बनाए। हैदराबाद की तरफ से तेज गेंदबाज रक्षण रेड्डी और बाएं हाथ के स्पिनर अनिकेथ रेड्डी ने तीन-तीन विकेट लिए। हैदराबाद ने पहले दिन का खेल समाप्त होने तक अपनी पहली पारी में दो विकेट पर 90 रन बनाए हैं। सलामी बल्लेबाज तन्मय अग्रवाल 53 रन बनाकर खेल रहे हैं। विजयनगरम में खेले जा रहे मैच में राजस्थान ने आंध्र के खिलाफ पहले बल्लेबाजी करते हुए अभिजीत तोमर (94) और मानव सुथार (54) के अर्धशतक की मदद से 258 रन बनाए। आंध्र की तरफ से स्पिनर त्रिपुराना विजय ने 62 रन देकर पांच विकेट लिए जो उनके करियर का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है। जवाब में आंध्र ने ठोस शुरुआत की और दिन का खेल समाप्त होने तक बिना किसी नुकसान के 49 रन बनाए। पुडुचेरी में मोहित काले के नाबाद 93 रन की मदद से पुडुचेरी ने उत्तराखंड के खिलाफ पहले दिन सात विकेट पर 246 रन बनाए। उत्तराखंड की तरफ से दीपक धपोला ने 29 रन देकर चार विकेट लिए हैं।

## लक्ष्य श्योराण और नीरू ट्रैप चैंपियन बने

**भोपाल।** हरियाणा के एशियाई खेलों के रजत पदक विजेता लक्ष्य श्योराण और स्थानीय खिलाड़ी नीरू ने गुरुवार को यहां शॉटगन स्पर्धाओं की तीसरी दिग्विजय सिंह मेमोरियल निशानेबाजी चैंपियनशिप में पुरुष और महिला ट्रैप खिताब जीते। मध्य प्रदेश राज्य अकादमी (एमपीएसए) शूटिंग रेंज में टूर्नामेंट के अंतिम दिन लक्ष्य ने 50 में से 47 का स्कोर बनाकर स्वर्ण पदक जीता जबकि मध्य प्रदेश का प्रतिनिधित्व कर रही उनकी चचेरी बहन नीरू ने 45 का स्कोर बनाकर महिला वर्ग में पहला स्थान हासिल किया। दिल्ली के फहद सुल्तान पुरुष वर्ग में 45 का स्कोर बनाकर दूसरे स्थान पर रहे। क्वालिफिकेशन में शीर्ष पर रहे राजस्थान के सुलेमान अर्श इलाही ने कांस्य पदक जीता, जबकि ओलंपियन पृथ्वीराज टोंडिमान पांचवें स्थान पर रहे। महिला वर्ग में दिल्ली की कीर्ति गुप्ता ने रजत और पंजाब की राजेश्वरी कुमारी ने कांस्य पदक जीता। जूनियर पुरुष फाइनल में हाल ही में जूनियर राष्ट्रीय चैंपियन बने राजस्थान के विनय प्रताप सिंह चंद्रावत ने अपनी अच्छी फॉर्म जारी रखते हुए 43 निशाने लगाकर स्वर्ण पदक जीता। तमिलनाडु के युगान एसएम ने रजत जबकि राजस्थान के एक अन्य निशानेबाज उद्धव सिंह राठौड़ ने कांस्य पदक हासिल किया। महिलाओं के जूनियर वर्ग में श्रेष्ठा सिसौदिया ने उत्तर प्रदेश की सबीरा हैरिस को शूट-ऑफ में हराकर स्वर्ण पदक जीता। पुरुष मास्टर्स ट्रैप फ़ाइनल तमिलनाडु के अनुभवी गोविंदराज थिरुवेंकटम ने अपने ही राज्य के अभिमन्यु प्रकाश को हराकर स्वर्ण पदक जीता।

# शार्दुल ठाकुर की हैट्रिक, रहाणे का अर्धशतक, मुंबई ने मेघालय पर बढ़त

**मुंबई।** मुंबई ने शार्दुल ठाकुर की हैट्रिक के बाद कप्तान अजिंक्य रहाणे (83 रन) और सिद्धेश लाड (89 रन) के अर्धशतकों की मदद से बृहस्पतिवार को यहां रणजी ट्रॉफी एलीट ग्रुप ए मैच के पहले दिन मेघालय पर 127 रन की बढ़त हासिल कर ली। ठाकुर को गेंदबाजों के मुफीद पिच पर पहले दिन काफी मदद मिली और उनके साथी गेंदबाजों मोहित अवस्थी (27 रन देकर तीन विकेट), सिलवेस्टर डीसूजा (14 रन देकर दो विकेट) और शम्स मुलानी (एक रन देकर एक विकेट) का भी अच्छा साथ मिला जिससे मुंबई ने मेघालय को महज 86 रन पर समेट दिया। फिर रहाणे और लाड के बीच तीसरे विकेट के लिए 170 रन की नाबाद साझेदारी से मुंबई ने स्टंप तक दो विकेट गंवाकर 213 रन बना लिए थे। मुंबई के लिए यह करो या मरो का अंतिम ग्रुप चरण मैच है। रहाणे ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का सही फैसला किया और ठाकुर ने पहले ही ओवर से मेघालय को दबाव में ला दिया। विकेट की नमी और नई गेंद का फायदा उठाते हुए भारतीय ऑलराउंडर ने सही लाइन एवं लेंथ में गेंदबाजी करते हुए रणजी ट्रॉफी के इतिहास में मुंबई के लिए पांचवीं हैट्रिक दर्ज की। ठाकुर ने पारी की चौथी गेंद पर मेघालय के सलामी बल्लेबाज निशांत चक्रवर्ती (0) को स्लिप कॉर्डन पर शम्स मुलानी के हाथों कैच कराकर मुंबई को शुरुआती सफलता दिलाई। अनिरुद्ध बी (0) भी ठाकुर के दूसरे और पारी के तीसरे ओवर की चौथी गेंद पर आउट हो गए। सुमित कुमार (0) ने ओवर की पांचवीं गेंद पर तीसरी स्लिप पर मुलानी को आसान कैच दिया और ठाकुर ने फिर से अंतिम गेंद पर बाएं हाथ के बल्लेबाज जसकीरत सचदेवा (0) का ऑफ स्टंप उखाड़ दिया। मेघालय का स्कोर दो रन पर पांच विकेट हो गया। मोहित ने चौथे ओवर की पहली गेंद पर सलामी बल्लेबाज अर्पित सुभाष (2) को आउट कर मेघालय का स्कोर दो रन पर छह विकेट कर दिया जिससे रणजी ट्रॉफी का सबसे कम स्कोर दर्ज करने का खतरा पैदा हो गया। लेकिन प्रिंगसांग संगमा (19), कप्तान आकाश कुमार (16), अनीश चरक (17) और हिमान फुकन (28) ने मुंबई के आक्रामक गेंदबाजों से निपटते हुए ऐसा नहीं होने दिया। मेघालय की टीम पहली पारी में 86 रन पर सिमट गई। मुंबई ने हालांकि आयुष म्हात्रे (05) का विकेट जल्दी खो दिया लेकिन उसके बाद सतर्कता ने मेजबान टीम को बढ़त हासिल करने में मदद की। इस दौरान लाड ने 155 गेंद पर 11 चौके और एक छक्के से 89 रन और रहाणे ने 150 गेंद पर नौ चौके और एक छक्के से 83 रन बना लिए। रहाणे ने इस सत्र का पहला अर्धशतक जड़ा और ऑन साइड पर आकर्षक स्ट्रोक्स लगाए, जो उनकी पारी का मुख्य आकर्षण रहा। इस बीच मुंबई के स्टार खिलाड़ी और भारतीय कप्तान रोहित शर्मा ने सुबह बीकेसी ग्राउंड के पास नेट्स पर तेज गेंदबाजों और थ्रोडाउन विशेषज्ञों के खिलाफ आधे घंटे का अभ्यास किया। वडोदरा में गत चैंपियन मुंबई को पांच विकेट से हराने के बाद जम्मू कश्मीर की टीम बड़ौदा के खिलाफ तीन विकेट पर 106 रन बनाकर मजबूत स्थिति में थी लेकिन पूरी टीम 246 रन पर ऑल आउट हो गई। केवल कन्हैया वधावन (71) ही अर्धशतक जड़कर योगदान कर पाए। जवाब में बड़ौदा ने स्टंप तक दो विकेट पर 29 रन बना लिए जिससे वह पहली पारी के आधार पर 217 रन से पीछे है। क्वार्टर फाइनल की दौड़ दिलचस्प हो गई है क्योंकि तीन टीमें शीर्ष दो में जगह बनाने की होड़ में हैं। ग्रुप ए की अंक तालिका में जम्मू-कश्मीर शीर्ष पर है जबकि बड़ौदा और मुंबई क्रमशः दूसरे और तीसरे स्थान पर हैं। कटक में राजेश मोहंती ने 61 गेंद में आठ चौके की मदद से 60 रन बनाए जिसके बावजूद मेजबान ओडिशा 180 रन पर ढेर हो गई। सेना ने जवाब में स्टंप तक दो विकेट पर 85 रन बना लिए जिससे वह पहली पारी के आधार पर 95 रन से पिछड़ रही है। सोलापुर में मेहमान त्रिपुरा ने महाराष्ट्र के खिलाफ स्टंप तक पांच विकेट पर 230 रन बना लिए।

## नर्मदा ने स्वर्ण पदक जीतकर राष्ट्रीय रिकॉर्ड तोड़ा, भानवाला को भी स्वर्ण

**देहरादून।** विश्व कप की पूर्व विजेता नर्मदा नितिन राजू ने बृहस्पतिवार को यहां 38वें राष्ट्रीय खेलों में महिलाओं की 10 मीटर एयर राइफल स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीतने के दौरान एशियाई खेलों की पदक विजेता रमिता जिंदल और ओलंपियन इलावेनिल वालारिवन सहित कई मजबूत निशानेबाजों को मात देते हुए राष्ट्रीय रिकॉर्ड बनाया और विश्व रिकॉर्ड की बराबरी करने से महज मामूली अंतर से चूक गईं। अन्य नतीजों में हरियाणा के 2022 विश्व चैंपियनशिप रजत पदक विजेता अनीष भानवाला ने पुरुषों की 25 मीटर रैपिड फायर पिस्टल स्पर्धा में 31 हिट से स्वर्ण पदक जीता। सेना के गुरप्रीत सिंह 28 हिट से दूसरे और पंजाब के विजयवीर सिद्धू 26 हिट से तीसरे स्थान पर रहे। तमिलनाडु का प्रतिनिधित्व कर रहीं नर्मदा ने आठ निशानेबाजों के फाइनल में 254.4 के स्कोर के साथ पोडियम में शीर्ष स्थान हासिल किया तथा महाराष्ट्र की आर्या बोरसे (252.5) और रमिता (230.4) को पछाड़ा।

# छत्तीसगढ़ ने दो स्वर्ण पदक जीते, विजय कुमार ने रिकॉर्ड की बराबरी की

**देहरादून।** छत्तीसगढ़ के भारोत्तोलक विजय कुमार ने गुरुवार को यहां 38वें राष्ट्रीय खेलों में पुरुषों के 55 किग्रा भार वर्ग के क्लीन एवं जर्क में राष्ट्रीय रिकॉर्ड की बराबरी करते हुए स्वर्ण पदक जीता। छत्तीसगढ़ की एक अन्य भारोत्तोलक ज्ञानेश्वरी यादव ने महिलाओं के 49 किग्रा में कुल 191 किग्रा (85 किग्रा106 किग्रा) वजन उठाकर स्वर्ण पदक जीता। महाराष्ट्र की सारिका शिंगारे (कुल 179 किग्रा) और हरियाणा की कोमल कोहर (179 किग्रा) ने क्रमशः रजत और कांस्य पदक जीता। विजय कुमार ने स्नैच में 105 किग्रा भार उठाने के बाद क्लीन एवं जर्क में 143 किग्रा के साथ कुल 248 किग्रा वजन उठाकर स्वर्ण पदक अपने नाम किया। क्लीन एवं जर्क में उन्होंने महाराष्ट्र के संकेत सरगर के 2022 में बनाए गए राष्ट्रीय रिकॉर्ड की बराबरी की। महाराष्ट्र के खिलाड़ियों मुकुंद अहेर (कुल 247 किग्रा) और श्रीनिवास गौड़ (244 किग्रा) ने रजत और कांस्य पदक जीता।

## महाराष्ट्र ने छह पदक जीतकर राष्ट्रीय खेलों की ट्रायथलॉन में दबदबा बनाया

**हल्द्वानी (उत्तराखंड)।** महाराष्ट्र के एथलीटों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए बृहस्पतिवार को यहां 38वें राष्ट्रीय खेलों की ट्रायथलॉन स्पर्धा में दो स्वर्ण, दो रजत और इतने ही कांस्य से छह पदक अपने नाम किए। महाराष्ट्र ने डुआथलॉन (व्यक्तिगत) स्पर्धा में एक रजत और एक कांस्य जीता जिससे उसके पदकों की संख्या में इजाफा हुआ। अन्य राज्यों में मध्य प्रदेश ने तीन पदक (एक स्वर्ण, एक रजत और एक कांस्य) जीते जबकि मणिपुर ने व्यक्तिगत ट्रॉयथलॉन में दो स्वर्ण पदक हासिल किए।

# कोहली की उपस्थिति में रेलवे के उपेंद्र यादव और दिल्ली के गेंदबाजों ने बिखेरी चमक

**नई दिल्ली।** स्टार बल्लेबाज विराट कोहली की 13 साल बाद रणजी ट्रॉफी क्रिकेट टूर्नामेंट में वापसी से विशेष बने मैच में रेलवे के उपेंद्र यादव ने 95 रन की आकर्षक पारी खेल कर दिल्ली को गुरुवार को यहां शुरू में विकेट लेने का बहुत अधिक फायदा नहीं उठाने दिया। रेलवे की टीम ने पहले बल्लेबाजी के लिए आमंत्रित किए जाने के बाद अपनी पहली पारी में 241 रन बनाए। दिल्ली ने पहले दिन का खेल समाप्त होने के समय तक अपनी पहली पारी में एक विकेट पर 41 रन बनाए थे।

नवदीप सैनी, सिद्धांत शर्मा और मनी ग्रेवाल की तेज गेंदबाजी तिकड़ी ने सुबह की परिस्थितियों का फायदा उठाते हुए पहले सत्र में रेलवे का स्कोर पांच विकेट पर 66 रन कर दिया। इसके बाद उपेंद्र और अनुभवी स्पिनर कर्ण शर्मा (50) ने छठे विकेट के लिए 104 रन की साझेदारी करके रेलवे को सम्मानजनक स्कोर तक पहुंचाया। कोहली की उपस्थिति के कारण 12000 से अधिक दर्शक स्टेडियम में पहुंचे थे। दिल्ली ने टॉस जीत कर पहले गेंदबाजी का फैसला किया और इस कारण कोहली को पहले दिन बल्लेबाजी का मौका नहीं मिला। उपेंद्र ने हालांकि दर्शकों के सामने अपनी प्रतिभा का शानदार परिचय दिया।

उपेंद्र जब सत्र में अपना तीसरा शतक पूरा करने की तरफ बढ़ रहे थे तब उन्होंने बाएं हाथ के स्पिनर सुमित माथुर की गेंद पर हवा में शॉट खेला और लॉन्ग ऑफ पर कैच दे दिया। उन्होंने अपनी पारी में 10 चौके और एक छक्का लगाया। दिल्ली की तरफ से सैनी और ग्रेवाल ने क्रमशः 18 और 17 ओवर किए बाएं हाथ के तेज गेंदबाज सिद्धांत ने नौ ओवर किए। सैनी और सिद्धांत ने तीन-तीन जबकि ग्रेवाल ने दो विकेट लिए। दिन का आकर्षण हालांकि कोहली थे और उन्होंने रेलवे की पारी के दौरान मैदान पर रहकर दर्शकों के साथ-साथ अपनी टीम के खिलाड़ियों का हौसला भी बढ़ाया। वह अधिकतर समय स्लिप में खड़े रहे। कोहली शुक्रवार को बल्लेबाजी के लिए उतरेंगे और तब अधिक दर्शकों के स्टेडियम में पहुंचने की संभावना है।


नई दिल्ली के अरुण जेटली स्टेडियम में शॉट खेलते रेलवे के उपेंद्र यादव

# रैंकिग में भारत की दुर्दशा से दुखी हैं शशि कुमार मुकुंद

**नई दिल्ली।** शशिकुमार मुकुंद अपने डेविस कप पदार्पण में ही दर्द से कराहते हुए कोर्ट से बाहर हो गए थे, तब भारतीय टीम सितंबर 2023 में मोरक्को से 0-। से पिछड़ रही थी। इतना ही काफी नहीं था कि वह उस जर्सी को पहनकर खेले जिस पर इंडिया की स्पैलिंग गलत लिखी थी। लखनऊमें इस बुरे सपने वाले पदार्पण का अंत यहीं नहीं हुआ। अखिल भारतीय टेनिस संघ (एआईटीए) इससे काफी नाराज हुआ और उसने इस गलती के लिए उनसे स्पष्टीकरण मांगा। इसके बाद इससे भी बुरा हुआ जब उन्होंने पैर की चोट के कारण जनवरी में पाकिस्तान की यात्रा करने से इनकार कर दिया और स्वीडन के खिलाफ मुकाबले के लिए खुद को उपलब्ध नहीं कराया।

इस बीच एआईटीए ने उन्हें अनुशासानात्मक आधार पर प्रतिबंधित कर दिया जबकि किसी को भी इस बात की भनक तक नहीं थी, यहां तक कि खिलाड़ी को भी नहीं कि उन्हें निलंबित किया गया है। कप्तान रोहित राजपाल ने उन्हें आश्वस्त किया कि अगर वह स्वीडन के खिलाफ मैच के लिए खुद को उपलब्ध कराते हैं तो वह उनका प्रतिबंध हटवा देंगे। वह पहले ही टूर पर खेलने के लिए प्रतिबद्धता दे चुके थे और अपने कोच को भी अग्रिम भुगतान कर चुके थे। इससे स्थिति और जटिल हो गई और राष्ट्रीय महासंघ के साथ उनके संबंध खराब हो गए।

जनवरी 2025 में मुकुंद शनिवार से शुरू होने वाले टोगो के खिलाफ विश्व ग्रुप एक प्ले-ऑफ मुकाबले के लिए भारत के सर्वश्रेष्ठ रैंकिंग वाले खिलाड़ी होंगे। वह डेविस कप में खेलने के लिए उत्साहित हैं लेकिन उन्हें यह पसंद नहीं है कि वह कोर्ट पर सर्वश्रेष्ठ रैंकिंग वाले भारतीय हैं जबकि एटीपी सूची में 360वें नंबर पर काबिज हैं।

मुकुंद ने अपनी वापसी पर पीटीआई से कहा, निश्चित रूप से यह निराशाजनक है क्योंकि जब मैं पढ़ता हूं या रैंकिंग देखता हूं तो दुख होता है कि नंबर एक रैंकिंग वाला खिलाड़ी 360 रैंकिंग पर काबिज है। यह निराशाजनक है। मुझे कहना होगा क्योंकि पहले मैं एक भारतीय टेनिस प्रशंसक हूं और फिर मैं एक खिलाड़ी हूं। उन्होंने कहा, अतीत में मैं 200 की करीब रैंकिंग पर था और तब मैं भारत में पांचवें नंबर पर था। लेकिन ऐसा इसलिए था क्योंकि बहुत से लोग मुझसे बहुत आगे थे। उन्होंने कहा, वो गहराई जल्द ही फिर से आ रही है जिसमें नंबर एक खिलाड़ी शीर्ष 100 रैंकिंग में है, नंबर दो शीर्ष 100 के करीब है। नंबर तीन कहीं 120 या 130 रैंकिंग के आसपास है।

# पीसीबी और आईसीसी 16 फरवरी को लाहौर में करेंगे चैंपियंस ट्रॉफी का उद्घाटन समारोह

**कराची।** पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) के साथ मिलकर आगामी चैंपियंस ट्रॉफी का उद्घाटन समारोह 16 फरवरी को लाहौर में कराएगा। चेयरमैन मोहसिन नकवी ने 19 फरवरी को कराची में राष्ट्रीय स्टेडियम में पाकिस्तान और न्यूजीलैंड के बीच होने वाले पहले मैच से पहले के निर्धारित कार्यक्रमों की सूची को मंजूरी दी। पीसीबी मरम्मत किए गए गद्दाफी स्टेडियम का सात फरवरी को आधिकारिक रूप से उद्घाटन करेगा जिसके लिए प्रधानमंत्री शाहबाज शरीफ को मुख्य अतिथि के तौर पर आमंत्रित किया गया है।

पीसीबी 11 फरवरी को कराची में एक समारोह में पुनर्निर्मित राष्ट्रीय स्टेडियम को भी लांच करेगा जिसमें राष्ट्रपति आसिफ अली जरदारी को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया है। पीसीबी और आईसीसी कप्तानों की प्रेस कांफ्रेंस और फोटोशूट के कार्यक्रम पर भी काम कर रहे हैं जिसके 16 फरवरी को लाहौर में होने की संभावना है। उद्घाटन समारोह ऐतिहासिक लाहौर किले के हुजूरी बाग में तय किया गया है जिसमें विभिन्न बोर्डों के अधिकारी, मशहूर हस्तियां, खेल के दिग्गज और सरकारी अधिकारी आमंत्रित किए जाएंगे। आईसीसी और पीसीबी ने अभी तक पुष्टि नहीं की है कि भारतीय कप्तान रोहित शर्मा प्रेस कांफ्रेंस और फोटोशूट के लिए लाहौर आएंगे या नहीं। भारत चैंपियंस ट्रॉफी के अपने सभी मैच दुबई में खेलेगा और अगर वह फाइनल में पहुंचता है तो खिताबी मुकाबला नौ मार्च को संयुक्त अरब अमीरात के शहर में ही खेला जाएगा।

# रणजी वापसी में राहुल 26 रन पर आउट कर्नाटक के पांच विकेट पर 267 रन

**बेंगलुरु।** केएल राहुल की रणजी ट्रॉफी में बहुप्रतीक्षित वापसी महज 37 गेंद खेलने के बाद खत्म हो गई और भारत का यह सलामी बल्लेबाज 26 रन पर आउट हो गया जिससे कर्नाटक ने बृहस्पतिवार को यहां ग्रुप सी के करो या मरो वाले मैच के पहले दिन हरियाणा के खिलाफ पांच विकेट पर 267 रन का स्कोर बना लिया। फरवरी 2020 के बाद से पहली बार रणजी ट्रॉफी में खेलते हुए स्थानीय नायक राहुल तीसरे नंबर पर बल्लेबाजी के लिए उतरे। खचाखच भरे एम चिन्नास्वामी स्टेडियम में उनका गर्मजोशी से स्वागत किया गया और स्टैंड में राहुल, राहुल के नारे गूंज रहे थे।

दाएं हाथ का यह स्टाइलिश बल्लेबाज शुरू में शानदार लय में दिखा और कर्नाटक के कप्तान मयंक अग्रवाल (91) के साथ दूसरे विकेट के लिए 54 रन की साझेदारी में चार शानदार चौके लगाए।

राहुल क्रीज पर जमे हुए लग रहे थे लेकिन हरियाणा के फॉर्म में चल रहे तेज गेंदबाज अंशुल कंबोज की गेंद पर आउट हो गए। इस सत्र में हरियाणा के लिए सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले इस गेंदबाज ने इतनी खूबसूरत गेंद फेंकी जिसने अनुभवी भारतीय बल्लेबाज को बल्ले का किनारा छुआने के लिए ललचाया और विकेटकीपर रोहित शर्मा ने स्टंप के पीछे कोई गलती नहीं करने दी। हरियाणा के तेज गेंदबाज ने लंच से पहले सलामी बल्लेबाज केवी अवनीश (17) को आउट किया।

राहुल आखिरी बार रणजी ट्रॉफी मैच में लगभग चार साल पहले बंगाल के खिलाफ ईडन गार्डन्स क्वार्टर फाइनल में खेले थे। कोहनी की चोट के कारण उनकी रणजी ट्रॉफी में वापसी में देरी हुई। इसके कारण वह पंजाब के खिलाफ कर्नाटक के पिछले मैच से बाहर हो गए थे। जिस दिन हर कोई चाहता था कि राहुल बड़ी पारी खेलें, उस दिन भारतीय टीम से बाहर चल रहे कर्नाटक के कप्तान अग्रवाल ने कई शॉट लगाए और मैदान पर धमाल मचा दिया। उन्होंने अपने तेज अर्धशतक के लिए तीन छक्के और नौ चौके लगाए। अग्रवाल हरियाणा के तेज गेंदबाज अनुज ठकराल की गेंद पर आउट हो गए और महज नौ रन से अपना 19वां प्रथम श्रेणी शतक बनाने से चूक गए। ठकराल ने 74 रन देकर दो विकेट चटकाए।

सीएमवाईके प्रिंटेक के लिए तथा उसी की ओर से मुद्रक एवं प्रकाशक शोबोरी गाँगुली द्वारा द इंडियन एक्सप्रेस प्रा.लि. सी-26 अमौसी इंडस्ट्रियल एरिया, नादरगंज लखनऊ से मुद्रित एवं चौथी मंजिल, सहारा शापिंग सेंटर, फैजाबाद रोड, लखनऊ (फोनः 0522-4036600) से प्रकाशित। प्रधान सम्पादकः शोबोरी गाँगुली, स्थानीय सम्पादकः विजय प्रकाश सिंह। पाठकों को सुझाव दिया जाता है कि इस अखबार के किसी भी विज्ञापन पर प्रतिक्रिया करने से पहले पूरी तरह उसके बारे में दिए गए दावों, शर्तों और तथ्यों की जांच कर लें। पायनियर ग्रुप के मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक या उसका कोई भी कर्मचारी विज्ञापनदाता द्वारा उनके किसी उत्पाद तथा सेवा हेतु किए गए किसी दावे की सच्चाई का आश्वासन या उत्तरदायित्व नहीं लेता है। ऐसे विज्ञापनों के बाद किसी आर्थिक क्षति के लिए वे जिम्मेदार भी नहीं हैं।